भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

9279

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमोअरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमोआयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 59 अंक 11

नवम्बर, 2002 कार्तिक, 2059

रिश्ता अटूट विश्वास का
बंधन स्वर्णिम स्नेह का!

सोने की गुणवत्ता; गहनों की विविधता
एवं कलात्मक सौंदर्यपूर्ण कारीगरी के लिए
पुरे विश्वास के साथ अलंकार प्रेमी आते हैं

रतनलाल सी. बाफना; ज्वेलर्स; जलगांव

अद्वितीय स्वर्णिम विशेषताएँ

स्वर्ण आभुषणों की नई ढेर सारी वेरायटी
अनगिनत नये डिजाईन्स हाजिर स्टॉक में !

डाग रहित ९१.६० KDM गहनों की
नई व्यापक मालिका

सौंदर्यपूर्ण 'बाजू' की विशाल रेंज

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश,
छिलाई व कास्टींग काम की उच्चतम श्रेणी

हरेक गहनेपर 'वापसी विश्वसनियता' की स्पष्ट मुद्रा

चांदी बर्तनों की नई वैभवशाली मालिका

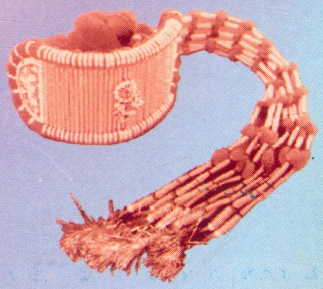

सोने के गहने, हीरों के आभुषण
सब कुछ एक ही छत के नीचे

व्यापारियों के लिए सोने के गहने एवं
चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सुविधा

अवश्य पधारिए!
जहाँ विश्वास हि परम्परा है!

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी भांडी शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक, जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

कलामुद्रा

सावधान : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नही!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997

- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981

- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02

- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वित्ते अचोइए निच्चं,
खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं,
किच्चाइं कुव्वई सया।।

–उत्तराध्ययन सूत्र 1.44

विनयभाव से ख्यात शिष्य,
सब बिना प्रेरणा कार्य करे।
यथादेश सत्कार्य करे,
निज कृत्यों में ना ढील करे।।44।।

नवम्बर 2002
वीर निर्वाण सं. 2529
कार्तिक, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 11

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

सेवा, विनय, उदारता एवं निस्पृहता के धनी आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा.	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	7
साधक-साधिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंग	: शासनप्रभाविका श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.	13
दान	: श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा	16
निष्काम सेवा	: श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	19
महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन(3)	: श्री चंचलमल चोरड़िया	21
सत्संस्कार ही परम धन	: श्री नितेश नागोता 'जैन'	22
वृद्धावस्था में कैसे जीएँ?(3)	: श्री पूनमचन्द चौपड़ा	24

विचार / आगम परिचय

अमृत - वचन	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
परिंदों के पिंजरे और उनकी पीड़ा	: श्री राजेन्द्र प्रसाद जैन 'एडवोकेट'	15
विचार-कण	: श्रीमती मदनदेवी बुरड़	23
दशवैकालिक सूत्र (2)	: डॉ. अमृतलाल गांधी	25
श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परिचय एवं गतिविधियाँ	: श्रीमती विमला मेहता	27

कथा / कविता

तीन कविताएँ	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	20
लोभी सेठ सागरदत्त	: संकलित	32

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	31
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	34
पर्युषण-पर्वाराधना रिपोर्ट	: संकलित	35
संघ-समाचार	: संकलित	49
विविध समाचार	: संकलित	61
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	67
बधाई / चुनाव	: संकलित	67
श्रद्धांजलि	: संकलित	68
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	72

संघ-समर्पण

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैनधर्म में साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका को संघ कहा गया है। ये चारों अहिंसा, संयम और तप रूप धर्ममार्ग पर चलकर स्व-पर कल्याण में निरत रहते हैं। संघ की महिमा एवं गरिमा की प्रशस्ति नन्दीसूत्र के प्रारम्भ में विविध उपमाओं से गायी गई है। संघ को नगर के रूप में प्रस्तुत करते हुए कहा गया है-

गुण-भवणगहण! सुय-रयणभरिय! दंसणविसुद्धरत्थागा।
संघनगर! भद्दं ते, अखंड-चारित्त-पागारा।।

गुणरूपी भवनों से व्याप्त, श्रुतरूपी रत्न से पूरित, दर्शन-विशुद्धि रूपी रथ्याओं और अखण्ड चारित्र रूपी परकोटे वाले हे संघनगर! तुम्हारा कल्याण हो।

सद्गुणों, श्रुतरत्नों, दर्शनविशुद्धि एवं निरतिचार पालन से युक्त संघ के कल्याण की कामना इस पद्य में की गई है। संघ को रथ, पद्म, चन्द्र, सूर्य, समुद्र, मेरुपर्वत आदि का रूपक देते हुए उसमें संयम, तप, सम्यक्त्व, शील, स्वाध्याय आदि का ही महत्त्व प्रतिष्ठित किया गया है। संघ को पद्म (कमल) के रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है-

कम्मरय-जलोह-विणिग्गयस्स, सुय-रयण-दीहनालस्स।
पंचमहव्वय-थिरकन्नियस्स, गुण-केसरालस्स।।
सावगजण-महुअरि-परिवुडस्स, जिणसूरतेयबुद्धस्स।
संघ-पउमस्स भद्दं, समणगण-सहस्सपत्तस्स।।

कर्मरज रूपी सरोवर से बाहर निकले हुए अर्थात् निर्लिप्त, श्रुतरत्न रूपी दीर्घ कमल नाल वाले, पाँच महाव्रत रूपी स्थिर कर्णिका वाले, उत्तरगुण रूपी पराग वाले, श्रावक-जन रूपी मधुकरों से परिवृत्त (घिरे हुए), तीर्थंकर रूपी सूर्य की तेजस्विता से विकसित तथा श्रमणगण रूपी सहस्र-पंखुडी वाले संघ-पद्म का कल्याण हो।

तात्पर्य यह है कि धर्म संघ, कर्म-बन्धन की प्रवृत्तियों में न पड़कर उनसे निर्लिप्त रहता है, शास्त्र-स्वाध्याय को आधार बनाता है, श्रमण-समुदाय पंच महाव्रतों का पालन कठोरता से करता है, उनके सद्गुणों की सुगन्ध से श्रावक वर्ग आकर्षित होता है तथा श्रमणों का विकास तीर्थंकर प्रभु के द्वारा उपदिष्ट धर्म के अनुरूप होता है।

'संघ' शब्द का प्रयोग संगठन के अर्थ में भी होता है यथा-छात्र संघ, कर्मचारी संघ, स्वयं सेवक संघ आदि। किन्तु जैन धर्म में 'संघ' शब्द आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर बढ़ने वाले त्यागियों के समुदाय के लिए हुआ है। धर्म संघ के चारों

अंग त्याग-मार्ग का अनुसरण करते हैं। साधु और साध्वी सर्वविरति रूप सर्व त्याग के पथ पर चलते हैं तथा श्रावक और श्राविका देशविरति रूप आंशिक-त्याग को धारण किए रहते हैं।

संघ का अपना वातावरण होता है। इसमें राग-द्वेष एवं मोह को कम करने एवं जीतने की प्रेरणा मिलती है। आध्यात्मिक उन्नति एवं आत्म-विशुद्धि में संघ सहायक होता है। इसलिए संघ भी प्रणम्य होता है- 'णमो संघस्स।' तीर्थंकरों ने धर्मचक्र के प्रवर्तन हेतु ऐसी व्यवस्था की है, जिसमें त्यागमार्ग ही राजमार्ग है और धर्मचक्र में आरूढ प्रत्येक व्यक्ति त्याग मार्ग पर चलकर अनन्त सुख के अजस्र-स्रोत को प्राप्त कर सकता है।

संघ में धन की नहीं, धर्म की महत्ता है। राग-द्वेष एवं विषय-कषायों की नहीं, अपितु इनके त्याग की महत्ता है। जिस संघ में राग-द्वेष एवं विषय-कषायों को बढ़ावा मिलता है, वह संघ धर्मसंघ नहीं रहता। वह तो फिर छात्रसंघ आदि के समान भौतिक लालसाओं की पूर्ति वाला संघ रह जाता है। जीवन्त संघ वह है जहाँ अपने से अधिक गुणवान् को देखकर प्रमोद होता है तथा उसके गुणों को अपने जीवन में आत्मसात् करने की प्रेरणा जगती है। वहाँ ईर्ष्या एवं द्वेष का स्थान प्रेम एवं मैत्री भाव ग्रहण कर लेते हैं। संघ में व्यक्ति अपने को मुख्य नहीं समझता, संघ को प्रधानता देता है।

वही संघ निर्विघ्न रूप से प्रगतिमान होता है, जिसमें व्यक्ति अपने स्वार्थों को गौण और संघ के हित को मुख्य समझता है। जब स्वार्थ मुख्य हो जाते हैं तो संघ विघटित होने लगता है। संघ में काम करते समय व्यक्ति को अपने अहं को तिलांजलि देनी होती है। अहं के कारण ही परस्पर टकराव होता है, जिससे संघ का हित गौण एवं आत्म-प्रतिष्ठा की लड़ाई मुख्य बन जाती है।

संघ का स्वरूप समाज से भिन्न है। समाज जहाँ लौकिक व्यवस्थाओं से जुड़ा होता है, वहाँ संघ आध्यात्मिक लक्ष्य को लेकर चलता है। समाज में भी सबकी भावनाओं एवं योग्यता का आदर किया जाता है, वहाँ भी त्यागवृत्ति अपेक्षित होती है, किन्तु वह सब समुचित लौकिक व्यवस्थाओं के संचालन से जुड़ी होती है, जबकि संघ में सामाजिक समरसता के साथ नैतिक आध्यात्मिक मूल्यों की प्रधानता होती है।

धर्म का आराधन वैसे व्यक्ति-व्यक्ति का पृथक् है। जो जितनी अधिक तन्मयता, क्षमता एवं यतना के साथ धर्माराधन करता है वह उतना ही अधिक लाभान्वित होता है। व्यक्ति को स्वयं अपने कर्मास्रव का निरोध एवं कर्म-निर्जरा करनी होती है। पुरुषार्थ की अपेक्षा आत्मा या व्यक्ति का स्वातन्त्रय स्वीकार करने के बावजूद जैन धर्म-दर्शन में संघ की महत्ता है। संघ व्यक्ति की साधना में सहायक

एवं प्रेरक निमित्त बनता है। संघ के माध्यम से संवर एवं निर्जरा की साधना प्रोत्साहित होती है। यही संघ का महत्त्व है। साधनाशील व्यक्तियों का समूह ही संघ है एवं वही उसकी सम्पत्ति है। यदि कोई व्यक्ति भौतिक समस्याओं के कारण संवर-निर्जरा की साधना में कदम नहीं बढ़ा पाता है जो उसकी समस्याओं का समाधान भी संघ को अपनी मर्यादा में सोचना चाहिए। संघ के सदस्य को प्रेमपूर्वक यदि समस्या निवारण में सहयोग मिलता है तो वह संघ का आभारी होता है तथा उसमें भी धर्म-क्रिया के प्रति रुचि एवं निष्ठा को बल मिलता है।

संघ का कार्य निन्दा-विकथा नहीं है। निन्दा-विकथा से राग-द्वेष बढ़ते हैं तथा संघ धर्म-साधना के मूल उद्देश्य से भटक कर समाज के ढाँचे के रूप में ढलता जाता है। अर्थात् वह लोक व्यवस्था को ही संघ का स्वरूप समझने लगता है।

धर्म-संघ के प्रति व्यक्ति का जितना समर्पण बढ़ता जाता है,उतना ही उसमें सद्गुणों का आधान होता जाता है। संघ-निष्ठा एवं संघ-समर्पण व्यक्ति को भीतर से बदलते हैं। उसमें अहंकार आदि दुर्गुणों का विनाश एवं विनय, सरलता, सहिष्णुता, सहयोग, क्षमा आदि सद्गुणों का सन्निवेश होता रहता है। संघ व्यक्ति को धर्म से जोड़े रखता है। उसकी वृत्तियों को नियन्त्रित करता है। इसलिए संघ भी पूज्य एवं नमस्करणीय है।

आवश्यकता है संघ के शुद्ध स्वरूप को सुरक्षित रखकर निरन्तर आगे बढ़ने की। यदि संघ में धर्मसाधना की अपेक्षा भौतिक सम्पत्तियों को अधिक महत्त्व दिया गया तो धीरे-धीरे वह संघ धर्मसंघ न रहकर पारस्परिक कलह एवं झगड़ों का कारण बन सकता है। धन-सम्पत्ति धर्म-साधना में एवं संघ के उन्नयन में साधन बने यह तो उचित है, किन्तु उसमें स्वामित्व का भाव आने पर कलह होने की संभावना का प्रतिषेध नहीं किया जा सकता ।

संघ के प्रत्येक व्यक्ति का जुड़ाव हो, यह आवश्यक है। जुड़ाव के लिए अपने मोह एवं आसक्ति को कम करना होगा। जिस धन के प्रति व्यक्ति का अत्यधिक राग होता है, वह उसे संघ-हित में समर्पित करे तो इसके दो लाभ होंगे- १. व्यक्ति के दुःखी रहने के कारण-'मोह' या 'आसक्ति' पर विजय प्राप्त करने की ओर चरण बढ़ेंगे २. संघ-हित की प्रवृत्तियाँ प्रभावी रीति से चल सकेंगी।

संघ समर्पण के पश्चात् मानापमान में समभाव का अभ्यास करना होता है। कार्यकर्त्ता, विद्वान, पदाधिकारी, उदारमना श्रीमन्त आदि किसी के लिए सम्मान एवं अपमान के प्रसंग उपस्थित हो सकते हैं। उनकी परवाह न कर जो सतत एक लक्ष्य से संघ हितार्थ कार्य करता है, उसी से संघ आगे बढ़ता है।

अमृत - वचन

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

✳ धन से भोग-उपभोग की आवश्यक वस्तुएँ मिलाई जाती हैं और उनसे वस्तुओं के अभाव के कारण जो छटपटाहट थी, वह शान्त होती है, पर नित नयी बढ़ती लालसा को धन नहीं मिटाता।

✳ धर्म भोग में प्रीति घटाता और नवीन आकांक्षाए बन्द करता है। जब आकांक्षा का रोग ही नहीं होगा तो पूर्ति के लिये धन की आवश्यकता ही कम हो जायेगी।

✳ धन रोग को नहीं मिटाता। वह रोग के लिये दवा दिला सकता है। धर्म रोग के मूल को नष्ट करता और उदित रोग को सहने की क्षमता प्रदान करता है, जिससे मानव अभाव में भी मानसिक शान्ति बनाये रख सके।

✳ धन वर्गभेद कर मनुष्य को मनुष्य से टकराता है। वहाँ धर्म प्राणिमात्र में बंधुभाव जगाकर परस्पर मैत्री और निर्वेद भाव का संचार करता है।

✳ धन मन में 'चंचलता'-'भय'-'शोक' के भाव उत्पन्न कर नई उपलब्धि के लिये प्रेरित करता और प्राप्त की रक्षा के लिये चिन्तित रखता है।

✳ जब परिवार तथा समाज के क्षेत्र में आप धर्म का प्रयोग करोगे, वैर-विरोध एवं कलह के प्रसंगों को अदालत में न पहुँचा कर भीतर में सुलझाने का, हिंसा को सबल अहिंसा से जीतने का अभ्यास करोगे तो धर्म चतुर्गुण दीप्त हो उठेगा।

✳ धर्म करते कर्म-रोग क्यों नहीं मिटा? कहा है- साधुपणो नहीं सरधियो...।

✳ सुण्या पर श्रद्धयो नहीं, मिट्यो न मन को मोह।
पारस लग पहुंचियो नहीं, रह्यो लोह को लोह।।

✳ जीवन में धर्म का स्थान वृक्ष में मूल के समान है।

✳ धन, अन्न, भूमि, वस्त्र आदि बचाने से घर-समृद्ध होगा, देश व समाज की सेवा हो सकेगी, परन्तु श्रम, वाणी और विकल्प--क्रोध-काम-निन्दा-गाली-दुर्विचार, दुष्ट उच्चारण, अमर्यादित भ्रमण और व्यसन में बचत करना जीवन की निधि है।

✳ सद्गृहस्थ भोगसामग्री को मिलाते हुये भी असद्मार्ग से बचकर चलता है। असद्मार्ग से मिलायी गई सम्पदा की अपेक्षा वह धन की गरीबी को अच्छी मानता है। शरीर की सहज कृशता, शोथ (सूजन) के मोटापे से अच्छी है।

सेवा, विनय, उदारता एवं निस्पृहता के धनी आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

रत्नवंश के षष्ठ पट्टधर जैनाचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. विनय, सेवा, उदारता एवं निस्पृहता के साथ आचार–पालन में सजग एवं कठोर थे। उनका जीवनवृत्त आज भी साधकों के लिए प्रेरणा–स्रोत है। रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने अपने दादागुरु की पावन–स्मृति में बालकेश्वर, मुम्बई में श्रावणी अमावस्या संवत् 2059 दिनांक 8 अगस्त 2002 को फरमाया था। प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। **–सम्पादक**

संसार के बन्धन काटने वाले, अविनाशी-अविचल पदवासी सिद्ध भगवंत, आराधना से एकमेक होने वाले, तिन्नाणं-तारियाणं अरिहंत भंगवंत तथा महाव्रत- समिति-गुप्ति के आराधक, कलियुग में भी पथ-प्रदर्शन करने वाले संत-भगवंतों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान् महावीर की आदेय अनमोल वाणी उत्तराध्ययन सूत्र में विनय का अध्ययन चल रहा है। विनयी कौन? तो कहा–विशेष प्रकार से जो आठ प्रकार के कर्मों के बंधन को तोड़ता है, वह विनयी है। सामान्य व्यक्ति और धर्मी व्यक्ति में यही अन्तर है। सामान्य व्यक्ति विनय का बाहरी रूप समझता है और धर्मी व्यक्ति उसे कर्म-निर्जरा का साधन समझ कर उसे आत्म भावों से जोड़ता है। 'जन' और 'जैन' में भी इसी प्रकार का अन्तर है। सामान्य व्यक्ति का व्यवहार नीतिपूर्ण भी होता है और अनीतिपूर्ण भी। सामान्य व्यक्ति संयम वाला भी होता है और असंयम वाला भी। वह सत्य का अनुगामी भी होता है तो झूठ के मिश्रण वाला भी।

सामान्य जन और जैन में अन्तर क्या? जैन का व्यवहार कैसा? मार्गानुसारी बोल में वर्णन आता है- 'न्यायसम्पन्नविभवः' जैन गृहस्थ नीतिमार्ग से धन अर्जित करता है, अनीति का आश्रय नहीं लेता। गृहस्थ का बिना पैसे काम नहीं चलता। गृहस्थ को धन चाहिए। किन्तु धन कैसे मिलाना? नीति और न्याय के अनुसार जो धन मिलाता है वह जैन है। इसी तरह साधु कौन? क्या सफेद कपड़े वाला साधु है? जिसके मुँह पर मुँहपत्ती है वह साधु है? क्या बाहर की वेशभूषा या स्वलिंग में है वह साधु है? साधु कौन? तो कहा-

ईर्या भाषा एषणा, ओलख जो आचार।
गुणवंत साधु देखने, वन्दो बारम्बार।।

चलने में जीवों की विराधना न हो इस बात का जिसको खटका है, बोलने में असत्य वचन नहीं निकले, जिसको इस बात का विवेक है, भिक्षा ग्रहण करने में

दोष नहीं लगे जिसको ऐसा जागरण है वह साधक है, साधु है।

साधक कौन? ''साध्नोति स्व-परकार्याणि इति साधुः।'' जो आत्म-गुणों की साधना करता है और दूसरों को इस मार्ग पर चलने की प्रेरणा करता है वह साधु है। ऐसे साधकों में समाधि ग्रहण करने वाले पूज्य सागरमल जी महाराज की बात कही जा चुकी है, तो जीवन-निर्माण के शिल्पकार आचार्य भगवंत पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज की बात भी आज की जा रही है। आज उनका पुण्य-स्मृति दिवस है। वे विनय की प्रतिमूर्ति थे। ठाणांग सूत्र में एक चौभंगी मिलती है-

चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, तंजहा–
अप्पणो णाममेगे अलमंथु भवइ णो परस्स,
परस्स णाममेगे अलमंथु भवइ णो अप्पणो।
एगे अप्पणोवि अलमंथु भवइ परस्सवि,
एगे णो अप्पणो अलमंथु भवइ णो परस्स।।–ठाणांग,ठाणा8,उद्देशक 2

चार प्रकार के पुरुष कहे गये हैं- कोई पुरुष अपना निग्रह करने में समर्थ होता है, किन्तु दूसरे का निग्रह करने में समर्थ नहीं होता। कोई पुरुष दूसरे का निग्रह करने में समर्थ होता है, अपना निग्रह करने में समर्थ नहीं होता। कोई पुरुष दोनों में समर्थ होता है और कोई दोनों में समर्थ नहीं होता है।

संसार में चार प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं। कोई मनुष्य कलाचार्य, शिक्षक, ज्ञानी, गुरु, गीतार्थ स्थविर आदि महान् पुरुषों का संयोग पाकर, अपनी इन्द्रियों के विषयों को, कषाय की कलुषितता को, वासना के विकारों को, आशातना के कारणों को निग्रह करने में समर्थ होते हैं, किन्तु उन्हें दूसरों की उद्दंडता, आशातना, विषय-कषाय के विकारों को दूर करने के लिए कहा जाय, समझाने का प्रयत्न करने का कहा जाय तो वे वैसा करने में समर्थ नहीं होते अर्थात् दूसरों को विनयशील नहीं बना पाते हैं।

दूसरे प्रकार के वे व्यक्ति हैं जिनमें स्वयं में अनुशासन, विनय, वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, अनाशातना आदि के गुण नहीं हैं, किन्तु दूसरों को बुराइयों से बचाने में समर्थ होते हैं। वे इन्द्रिय-विषयों से होने वाली हानि, मारणान्तक कष्ट की वेदना, आदि की जानकारी के साथ बताते हैं कि कषाय से संसार का चक्र बढ़ता है, जन्म-मरण की जड़ का सिंचन होता है, प्रीति, विनय, सरलता एवं संतोष गुण नष्ट होते हैं, कामवासना-प्राण-प्रतिष्ठा, इज्जत आबरू नष्ट होती है एवं आशातना से जीव नरक-निगोद आदि नीच गति में गिर जाता है, कारण कि यह आत्मा को 'शातयति, पातयति इति आशातना' गिराने वाली है। इस प्रकार वे दूसरों को कुकृत्यों से, बुराइयों से बचाने, निग्रह कराने में समर्थ होते हैं। किन्तु स्वयं इन दुर्गुणों, आवेशों से अपने आपको रोकने में समर्थ नहीं होते हैं।

तीसरे प्रकार के व्यक्ति न स्वयं बुराइयों से बच पाते हैं, न दूसरों को बचा पाते हैं। वे उन्हें न रोक सकते हैं, न समझा सकते हैं।

चौथे मानव वे हैं, जो स्वयं इन बुराइयों से, आशातना, अविनय, अश्रद्धा, अनाचार से बचकर अपने आपका निग्रह करते हैं एवं स्वयं निग्रह कर दूसरों को भी इन बुराइयों से बचाने में समर्थ होते हैं। ऐसे ही विनयशील, महान् सेवाभावी, पंचाचार-पालक, तपस्वी आचार्य पूज्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. का आज श्रावणी अमावस्या को पुण्य दिवस है।

महापुरुषों की स्मृति के कई हेतु हो सकते हैं। कृतज्ञता-प्रकट करना एवं गुणियों का गुणगान महान् निर्जरा का निमित्त होने के साथ आत्म-कल्याण का कारण होता है। सूर्य अपनी रश्मियों से, चन्द्र अपनी चांदनी से, फूल अपनी सुंगध से जैसे स्वयं जाना जाता एवं गाया जाता है, वैसे ही ये महापुरुष अपनी विनयशीलता, सेवा-भावना आदि गुणों से स्वयं गाये गये थे। इन्हीं गुणों से आज भी गाये जा रहे हैं। मैं अपनी जिह्व गुणगान से पवित्र करूं, आइए आप भी अपनी जिह्व को पवित्र कीजिए:-

"माँ पार्वती के लाडले जिनके पिता भगवान् हैं।
अवतार मेहता कुल लिया, शोभा निराली शान है।
जो पुष्प सम कोमल हृदय, अरु दृढ़ प्रतिज्ञावान हैं।
निर्मल मति दुष्कर व्रती, धीमान् करुणा खान हैं।
गंभीर सागर तुल्य गुरु मम, भक्त वंद्य महान् हैं,
जो व्रत नियम के पालने में, सदा दृढ़ चट्टान हैं।।
सेवा सरलता सद्गुणों से, आज जिनका नाम है।
उन पूज्य शोभा मुनीश को, मम कोटि-कोटि प्रणाम है।।"

माता जिनकी पार्वती है, पिता जिनके भगवानदास हैं। संसार में पार्वती की परदुःखकातरता से दुःख दूर करने के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं। किसी दुःखी को देखकर पार्वती भगवान शंकर से प्रार्थना करती है कि आप इसके दुःख दूर क्यों नहीं कर देते? आप शक्ति सम्पन्न हैं और यह आपका भक्त है, दुःखी है, इसके संकट मिटा दें।

पिता हैं--भगवानदास। दास कई मिलेंगे। रूप के दास भी हैं जो दिन भर दर्पण के सामने बैठकर शरीर सजाया करते हैं। धन के दास भी हैं जो रात-दिन तिजोरी के नोट गिनते रहते हैं। कषायों के दास भी कई हैं जो अन्याय-अनीति से अपनी सत्ता कायम रखते हैं। नाम के दास भी हैं। इस हॉल पर नाम तो मेरा आना चाहिए, मैं पाँच लाख नहीं, ग्यारह लाख दूँगा। पर, भगवान के दास विरले मिलते हैं। माता पार्वती और पिता भगवानदास, इन दोनों से एक संस्कारशील पुत्र की प्राप्ति होती है जो सौभाग्य पंचमी को जन्मा है। कार्तिक शुक्ला पंचमी पंचांगों की भाषा में

सौभाग्य पंचमी कहलाती है। जैन परंपरा इस पंचमी को ज्ञान पंचमी कहती है। कार्तिक शुक्ला पंचमी को जन्मे बालक का नाम रखा गया 'शोभाचन्द्र'।

जन्म भी पुण्यभूमि धर्मनगरी जोधपुर में हुआ। शायद मुम्बई का नम्बर पहले नहीं, धर्मनगरी के रूप में जोधपुर का नाम पहले आयेगा। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज फरमाया करते थे- जोधपुर नगरी में संतों का कभी वियोग नहीं रहा। आप सौ साल का इतिहास उठाकर देख लीजिए, किसी न किसी सन्त या महासती मण्डल का वहाँ विराजना रहता ही है। उस नगरी से कइयों ने दीक्षा अंगीकार की। सैंकड़ों की तादाद कह दूँ तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं। लोग तो यहाँ तक कहते हैं, चाहे जहाँ चले जाओ, जोधपुर का कोई न कोई मिल ही जायेगा। विदेश में भी जोधपुर के लोग मिल जाते हैं। देश में चाहे कर्नाटक हो, तमिलनाडु हो, आंध्र प्रदेश हो या अन्य कोई प्रदेश, मारवाड़ और जोधपुर का कोई न कोई मिल ही जायेगा।

जोधपुर में संतों की संगति पाकर उनमें बाल्यकाल के संस्कार विकसित हुए। संवत् १९१४ का जन्म है और १९२७ में दीक्षा। दीक्षा के समय उम्र मात्र तेरह साल की। आज आपके तेरह साल के बच्चे से पूछा जाय कि तुम्हें सामायिक तो आती है? (सभा में से- नहीं आती)

तो क्या मैं तीस साल वालों से पूछूँ?

जिस घर में माता-पिता के संस्कार होंगे, उस परिवार के बच्चों में भी धर्म के संस्कार आयेंगे। जिनके माता-पिता अर्थ प्रधान दृष्टि वाले हों, हाय घोड़ा-दिन थोड़ा करने वाले हों, उनके बच्चों में धर्म के संस्कार कैसे जगें? कई कई तो ऐसे घर भी हो सकते हैं, जिनके पिता को चार-छः महीने तक बच्चों से बात तक करने का समय नहीं मिलता। जिनको खुद को फुर्सत नहीं, वे बच्चों को कैसे संस्कार देंगे? कुएँ में पानी नहीं तो नाली में कहां से आए? करोड़पति-अरबपति होने पर कई पर्युषण में यहाँ सामायिक करने आते हैं। शायद उन्होंने पर्युषण को धर्म का सीजन मान लिया। पर्युषण हो गये तो चौमासा हो गया।

जिनका जीवन धर्म-साधना से प्रारंभ होता है, वहां बच्चों में संस्कार सर्जित होंगे। वे चाहे किसी मत के हों, किसी पंथ के हों। बुजुर्गों को देखकर बच्चे जागृत होंगे ही। "आप चाहते हैं, हमारे बच्चे राम बनें। राम कब बनेंगे? आप पहले दशरथ बनें तब आपके बच्चे राम बन सकते हैं। बच्चों को राम बनाने के लिए आपको दशरथ बनना पड़ेगा।।"

मैं जिनकी बात कर रहा हूँ उनके संस्कार घर से थे। संतों के समागम से तेरह वर्ष की उम्र में उनकी दीक्षा होती है। दीक्षा लेना और बात है और दीक्षा लेकर उसे दिपाना और बात है। पढ़ाई के लिए पाठशाला में भर्ती होना और बात है, पढ़

लिखकर प्रथम श्रेणी प्राप्त करना और बात है। ऐसे सैंकड़ों बच्चे मिलेंगे, जो पाठशाला में भर्ती तो हो जाते हैं, पर वहां भी मटरगस्ती करते पाये जाते हैं। खेलकूद में ही रह जाते हैं। लक्ष्य बना नहीं पाते हैं। मैं जिनकी बात कह रहा हूँ उन्होंने अपना लक्ष्य बनाया और ज्ञानार्जन हेतु सबसे पहले विनय गुण को अपनाया।

एक बात आप नोट कर लीजिए। विनयवान हमेशा दूसरों को ऊँचा बताता है, सामने वालों में गुण देखता है, इसीलिए उनमें आदर जगता है और जब आदर जगता है, तब विनय करता है। अहंकारी हमेशा दूसरों की कमजोरी देखता है। जो दूसरों के दोष ही दोष देखे तो उसमें आदर, श्रद्धा, भक्ति कैसे जगेगी? वहाँ विनय प्रकट कैसे होगा? जब आप दूसरों की विशिष्टताएँ देखेंगे, तब विनय जगेगा। यदि कमजोरी देख रहे हैं तो अहंकार जगेगा। कभी तपश्चर्या की बात होगी तो कहेगा- तू ने अठाई करली, पड़े-पड़े सोए-सोए, ऐसे तप में क्या रखा है? दस-बीस गाथा याद करली, कण्ठस्थ करने मात्र से, तोता रटंत से क्या होता है? अरे भाई, तू भी तप में पुरुषार्थ करके देख, ज्ञान में मन लगा। परन्तु ज्ञान-सेवा-तप स्वयं से होता नहीं और दूसरों की बुराई करना, दोष देखना, बस यही अहंकार है। अहंकारी व्यक्ति जीवन में आगे नहीं बढ़ते। विनयवान ही मोक्ष मार्ग में चरण बढ़ा सकते हैं।

ऐसे ही सद्गुण सम्पन्न आचार्य भगवंत पूज्य शोभाचन्द्र जी म.सा. विनय की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने दीक्षा ग्रहण की आचार्य भगवंत पूज्य कजोड़ीमल जी म.सा. के चरणों में। आचार्य भगवंत पूज्य श्री विनयचन्द जी म. ने भी उन्हीं के श्री चरणों में दीक्षा ली। आचार्य श्री विनयचन्द जी म.सा. और आचार्य शोभाचन्द्र जी म.सा. गुरु भ्राता थे, पर आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. के विनय को देखकर लोगों को ऐसा लगता जैसे वे गुरु-शिष्य हैं।

विनय भी कैसा? १४ वर्षों तक प्रज्ञा-चक्षु आचार्य पूज्य श्री विनयचन्द जी म.सा. के आहार, प्रतिलेखन, अशुचिनिवारण आदि प्रसंगों पर अग्लान भाव से सेवा की। आज सेवा करने में कइयों को संकोच होता है। आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. में विनय और सेवा का ऐसा गुण था जो विरलों में मिलता है। सेवा करते-करते जिन्होंने ज्ञान मिलाया। आचार्य भगवंत पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने अपने गुरु का वर्णन किया-

"सेवा से ज्ञान मिलाया था, जन-जन का मन हर्षाया था।
आज्ञा पाले जो जिनवर की, जय बोलो शोभा गुरुवर की।।"

आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी म.सा. ने प्रतिदिन सेवा-सुश्रूषा, विनय-वैयावृत्त्य करते ज्ञान मिलाया। गोचरी-पानी ही नहीं, शरीर की आवश्यकता-पूर्ति रूप सेवा में वे समर्पित भाव से संलग्न रहे। पुरुष को महापुरुष, मानव को महामानव

बनाने वाला है 'विनय' का गुण। विनय से श्रद्धा-भक्ति एवं विश्वास जगाया और समर्पण से ज्ञान मिलाया। उनकी इतनी प्रसिद्धि थी कि जयपुर वाले कई लोग सेवा के लिए उनका उदाहरण देते।

जोधपुर के एक श्रावक थे- कीरतमल जी मुथा। वे बारहव्रती श्रावक थे। धर्मस्थान पर ही रहते, घर नहीं जाते। घर में कभी शादी-विवाह का प्रसंग भी होता तब भी वे धर्मस्थान में धर्म-साधना में रहते। संसार में रहते हुए भी संसार के व्यवहार से अलग थे। उन्हें जोधपुर क्षेत्र में चातुर्मास की आवश्यकता हुई। जयपुर पहुंचे और आचार्य विनयचन्द्र जी म.सा. के श्रीचरणों में निवेदन किया—जोधपुर के लिए चातुर्मास चाहिए। आचार्यपूज्य विनयचन्द्र जी म.सा. ने कहा—शोभा को छोड़कर जिनको भी ले जाना चाहो, ले जाओ और चातुर्मास करवा लो।

देखिये, चेला मना नहीं कर रहा है, गुरु कह रहा है—शोभा मेरे पास चाहिए। ऐसा कब होता है? आपके पाँच लड़के हैं, किसी को अपने पास रखने की बात आने पर आप कहेंगे- बड़े को ले जाओ, छोटे को ले जाओ और चाहे जिसे ले जाओ पर अमुक को मेरे पास रख दो। इसका मतलब क्या? जो सार-संभाल करने वाला है, सेवा-सुश्रूषा में जिसका सहयोग है, जो बुढ़ापे की लाठी है, उसे अपने पास रखना चाहेंगे।

आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. ने कह दिया- शोभा को छोड़कर जिसे ले जाना चाहो, ले जाओ। परन्तु वे श्रावक, जो शोभाचन्द्र जी म.सा. जन्म से जोधपुर के हैं, जोधपुर में ही जिनकी दीक्षा हुई, उनके चातुर्मास की भावना लेकर आए थे। उन्होंने कहा- "गुरुदेव! आप जाओगे तब भी क्या इन्हें साथ ले कर जाओगे?" आखिर आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. को कहना पड़ा- "थांरी जरूरत है तो थे पूरी करो, मैं तो मारो काम चलाय लेऊँ।" ये शब्द कब निकलते हैं? सेवा से संतोष होने पर ही ऐसे शब्द निकलते हैं। "भगवान सबके घट में बैठता है, पर वह शिष्य धन्य है, जो गुरु के घट में बैठता है।"

विनयशील होने के साथ वे उदार एवं निस्पृह थे। मद्रास के प्रमुख श्रावक और संघपति मोहनमल जी चोरड़िया को लेकर उनकी माताजी आचार्य श्री के पास पहुंची। निवेदन किया- गुरुदेव! आप इन्हें गुरुमंत्र प्रदान करें। कहा—ये बड़े हो गये हैं, क्या अब तक किसी से गुरुमंत्र नहीं लिया? श्राविका बोली—गुरुदेव, ये यहाँ गोद आये हैं, इसलिए आप गुरुमंत्र प्रदान करें। पहले इनकी गुरु आमना पूज्य श्री जोरावरमल जी म.सा. की थी। आचार्य भगवंत ने कहा—जोरावर मल जी कौन और मैं कौन? हम तो दोनों एक हैं, तुम्हें गुरु बदलने की जरूरत नहीं। उनके जीवन में कैसी निस्पृहता थी? (क्रमशः)

साधक-साधिकाओं के प्रेरणादायी प्रसंग

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा.

हमारे विगत इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ अनेकानेक महान् साधक– साधिकाओं के त्याग–तप से संपूरित सुरभित जीवन से आज भी महक रहे हैं। उनका जीवन हमारे लिए महान् प्रेरणा का स्रोत है। यहां पर ऐसे कतिपय साधकों के जीवन की झांकी शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के प्रवचनों से संकलित है, जिसे पढ़कर समझकर और जीवन में धारण कर हम अपना जीवन भव्य और नव्य बना सकते हैं।–**सम्पादक**

मानापमान में सम : श्री कजोड़मल जी महाराज

देखो, आज तक तो औरतों के गर्भ रहता था, पर आश्चर्य! आज तो इस साधु (मोडे) का भी पेट गर्भस्थ औरत की भांति है। कुएँ पर पानी खींचती महिलाओं की यह व्यंग्य भरी उक्ति रत्नवंश के धर्माचार्य श्री कजोड़ीमल जी म.सा. के विशाल शरीर का उपहास करते कही गयी थी।

बात क्रोध उत्पन्न करने वाली थी। दिल पर एक सीधी करारी चोट थी। पर आचार्य श्री तो सहन-शीलता के अगाध सिन्धु थे। उन्होंने "समो निन्दा पसंसासु तहा माणावमाणओ।।" की सूक्ति जीवन में उतारी थी। वे इस व्यंग्य से जरा भी न तिलमिलाए। उन्होंने मुख पर मधुर मुस्कान लिए अत्यन्त सुमधुर वाणी में बड़े ही धैर्य से कहा-

"तेने ऊपर से कही, मैंने समझी ठेठ।
और खटका मिट गया, पर एक रह गया पेट।"

पूज्य श्री कि यह भाव भरी गम्भीर वाणी सुनकर महिलाओं द्वारा किया गया उपहास श्रद्धायुक्त वन्दन में परिवर्तित हो गया था। अपमान के कड़वे घूंट को भी अमृत की तरह पीकर दुनिया को शान्ति व सहिष्णुता का पाठ पढ़ाने वाले ऐसे साधक पर कौन बलिहार न होगा।

अद्‌भुत अभिग्रहों के धनी : तपस्वी बालचन्द जी महाराज

मुझे कोई बांयी मूंछ का बाल निकालकर देगा तो अन्न-जल ग्रहण करूंगा, अन्यथा तीन दिनों तक तेले का तप करूंगा। यह तप अद्‌भुत था, इसे अभिग्रह कहते हैं।

तपस्वी मुनि बालचन्द जी इस विचित्र अभिग्रह की पूर्णाहुति हेतु भीष्म प्रतिज्ञा अंगीकृत कर राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगर जयपुर में गली-गली एवं घर-घर में भिक्षार्थ घूमते हुए दीवान नथमल जी साहब गोलेछा के घर प्रविष्ट हुए। विचक्षण श्रावक ने अभिग्रहधारी सन्त समझकर विभिन्न प्रकार के प्रासुक व ऐषणीय

पदार्थ भक्तिभाव से प्रस्तुत किए। पर नियम-नियम है। मन इच्छित पदार्थ न होने से ये सारी वस्तुएँ अग्राह्य हो रही थीं।

श्रावकजी जरा निराश हुए, पर उन्हें आज सुपात्रदान की अन्तराय न थी। उनके मुँह से सहसा निकल ही पड़ा। "आपने पचासों तरह के कल्पनीय पदार्थों को अस्वीकार किया है तो क्या आप मेरी बांयी मूंछ का बाल ग्रहण करेंगे।"

अब महाराज श्री का अभिग्रह पूर्ण हो रहा था। उन्होंने लिपिबद्ध अभिग्रह श्रावकजी को दिखलाया। अन्न जल ग्रहण किया। वह घड़ी जयपुर के इतिहास में पुण्य वेला बन गयी।

☆☆☆☆

इसी साधक ने एक और भी गजब का अभिग्रह धारण किया। तपस्वी जी ने मन में दृढ़ निश्चय किया कि यदि हाथी मोदक देगा तो अन्न-जल ग्रहण करूंगा, अन्यथा नहीं। यह कोई साधारण बात नहीं थी। इस प्रकार अन्न-जल जैसी प्यारी चीज का त्याग करना, कितना विचित्र तप रहा होगा। पर साधक अलमस्त होते हैं, उनको जब लगन लग जाती है तो कठोर साधना में भी दीवाने बन जाते हैं।

इस अभिग्रह पूर्ति की कहानी भी कोई कम रोचक नहीं है। जयपुर महाराजा का पट्ट हस्ती मदोन्मत्त हो शृंखला के बंधन को छिन्न-भिन्न कर राजमार्गों पर अप्रतिहत गति से दौड़ने लगा। जनता भयाक्रान्त थी। अपने प्राणों की रक्षा की धुन में इधर-उधर भाग रही थी। ऐसे विषम संकट की वेला में भी ये उग्र तपस्वी गजराज से भी ज्यादा मस्ती में झूलते व घूमते हुए विचरण करने लगे।

संयोग की बात कि एक हलवाई की दुकान के निकट ये दोनों मस्ताने (हाथी और मुनि) एक साथ आकर रुके। तिर्यंचों में हाथी बहुत समझदार होता है। उसने खुली दुकान में से एक मोदक सूंड में लेकर महात्माजी की ओर किया। सन्त ने भी अभिग्रह को सफल समझा एवं हलवाई की अनुमति से मोदक ग्रहण कर पारणा किया।

☆☆☆☆

इन दो सुन्दर अभिग्रहों की कड़ी में तीसरी लड़ी ब्यावर नगर में जुड़ी। अब की बार साधक की धारणा थी-"अक्षय तृतीया के दिन का विवाहित जोड़ा हो, पति-पत्नी सुसज्जित वेश में हों, बढ़िया पकवानों से थाल परोसा हुआ हो और दोनों साथ ही बैठ कर खाना खाते हों।" मैं ज्योंही उस घर में पहुँचू, वे दोनों खड़े होकर मुझे प्रार्थना करें कि आप हमें कृतार्थ करें। भोजन ग्रहण करें। मैं नहीं लूँ तब मेरे समक्ष खड़े होकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार करें और भोजन ग्रहण करें।"

यह अभिग्रह निश्चित रूप से अपने ढंग का एक ही था। सच्ची भावना अवश्य ही सफल होती है। साधक के इस विचित्र अभिग्रह की पूर्ति का गौरव भरा श्रेय प्राप्त हुआ सांड परिवार के आनन्दराज जी को।

इस प्रकार के अनेकानेक अद्‌भुत कठोर अभिग्रहों के धारक ज्ञानरसिक, तपःकेसरी, स्वनाम धन्य, तप और साधना में सतत निरत रत्नवंशीय तपस्वी श्री बालचन्द्र जी म.सा. का स्थान आत्म-साधकों की पंक्तियों में सर्वदा अग्रणी रहेगा।

यहाँ यह उल्लेख करना प्रासंगिक होगा कि इनके सारे अभिग्रह तीन दिन की अवधि में ही सफलता से सम्पन्न हुए।

परिंदो के पिंजरे और उनकी पीड़ा

राजेन्द्र प्रसाद जैन 'एडवोकेट'

अनादिकाल से परिंदे मानवता को साम्प्रदायिक सद्‌भावना, भाईचारे व एकता का पैगाम देते चले आ रहे हैं। तभी तो कहा गया है-इंसान से बेहतर हैं ये परिंदे जो कभी मंदिर पर जा बैठे कभी मस्जिद पर जा बैठे।

मानव ने अपने अधिकारों के लिए तो मानवाधिकार आयोग की स्थापना कर ली। वहीं परिंदों के मुक्त आकाश में विचरण करने के अधिकार पर अतिक्रमण कर उन्हें जीवनपर्यन्त के लिए ऐसे छोटे-छोटे पिंजरों में बंद कर दिया, जिनमें वे न तो आजादी से चल सकें और न पंख फड़फड़ा सकें। नतीजतन उनके पैर व पंख जाम हो गए। वे चलने व उड़ने की क्षमता खो चुके। वे पिंजरों में बंद मरणांतक पीड़ा भोग रहे हैं। प्रसन्नता है कि मध्यप्रदेश सरकार ने परिंदों की इस पीड़ा का अहसास कर उन्हें कैद से मुक्त कर आकाश में विचरण का मौलिक अधिकार देने पर गहन चिंतन किया, पर तलस्पर्शी चिंतन के साये में यह अवरोध सामने आया कि शारीरिक रूप से चलने व उड़ने में अक्षम इन परिंदों को मुक्त कर दिया जाए तो कुत्ते-बिल्ली उन्हें झपटकर उनका काम तमाम कर देंगे। इसलिए परिंदों की स्वतंत्रता के लिए मध्यप्रदेश सरकार ने प्रथम कदम उठाते निम्न आदर्श आदेश जारी किया- उड़ने वाले पक्षियों को कैद करने वाले के लिए पिंजरों का आकार 20 X 17 =340 वर्गफुट कर दिया गया है। इतने बड़े पिंजरों में ही पक्षियों को कैद किया जा सकता है। इससे छोटे पिंजरों में कैद करना जुर्म है।

इस आदेश से जहां परिंदों को सुख-सुविधा प्राप्त होगी, वहीं वे कालांतर में चलने व उड़ने की क्षमता प्राप्त कर लेंगे। मेरा दृढ़ विश्वास है कि सरकार अगला कदम उठाते हुए अपने आदेश से सभी बंदी पक्षियों को मुक्त करा देगी। अन्य राज्य सरकारें भी पीड़ित पक्षियों के हित में म.प्र. सरकार का अनुसरण करते हुए ऐसे ही आदेश जारी करने की कृपा करें।

-भवानीमण्डी (राज.)

दान

न्यायाधिपति श्री श्रीकृष्णमल लोढ़ा

श्रमण सम्राट् भगवान महावीर ने मुक्ति का मार्ग दान, शील, तप और भाव से चार प्रकार का कहा है।

दान का अर्थ देना है। दान कल्याणकारी, अकल्याणकारी और लौकिक होता है। यहाँ पर इन तीनों का विस्तृत वर्णन करना उचित नहीं समझता हूँ। इतना कहना आवश्यक है कि जिस दान से स्व-पर का कल्याण होता है, अपना ममत्व कम होता है, संघ और धर्म का उत्थान होता है तथा अन्तःकरण में सत्कृत्यजनित प्रमोद भाव बढ़ता है, वही दान कर्त्तव्य है।

दान के विभिन्न रूप हैं, यथा- १. दीन-हीन अनाथ प्राणियों को दया से प्रेरित होकर अन्न, वस्त्र आदि देना-अनुकम्पा दान है। २. "दाणाणं सेट्ठं अभयप्पयाणं"-अनेकविध दानों में अभयदान श्रेष्ठ है। भयभीत प्राणी के भय का निवारण करना अभयदान (जीवनदान) है। ३. यश, कीर्त्ति या प्रशंसा के लिये या ऐसे ही किसी अन्य निमित्त से अभिमानपूर्वक दान देना गर्वदान है। ४. भविष्य में उपकार होने की आशा से दिया जाने वाला दान करिष्यतिदान है। ५. भूतकाल के उपकार के बदले, जो दान दिया जाय वह कृत दान है। ६. स्वजन वियोग के समय शोक के कारण दिया जाने वाला दान कारुण्य दान है। ७. निर्ग्रन्थ एवं समस्त आरंभ-परिग्रह के त्यागी मुनियों को निर्दोष एवं अचित्त आहार, पानी, औषध आदि का दान धर्म-दान है। धर्म के उद्योत के लिये दान देना भी धर्मदान है।

यहाँ पर यह दर्ज करना आवश्यक है कि प्राणी (जीवनभूत) का हनन न करना अभयदान है- अहिंसा का रूप अभयदान है।

दान के लिये आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने कहा है-

"सुपात्र दान के तीन भेद कर लेना, साधु, श्रावक, समदृष्टि को देना।
ज्ञानदान अभयदान रस पीजे, पात्र दान के भूषण ध्यान धरीजे।।
चित्त वित्त और पात्र की महिमा गाई, षट् कर्माराधन की करो कमाई।
कहे मुनीश्वर सुनो बाई और भाई, षट् कर्माराधन की करो कमाई।।"

जैन आगमों का अध्ययन करने से पता चलता है कि दान की असाधारण महिमा का अत्यन्त प्रभावशाली प्रतिपादन किया गया है। सुबाहुकुमार और शालिभद्र दान के महत्त्व के उच्च कोटि के सजीव आदर्श हैं। सुदत्त मुनि तपस्वी थे। एक दिन सुमुख सेठ के घर पधारे। सेठ ने मुक्त हस्त से दान दिया। सुखविपाक सूत्र में उस दान का वर्णन है

"तेणं दव्वसुद्धेणं, दायगसुद्धेणं, पडिग्गाहगसुद्धेणं।
तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं, सुदत्तो अणगारे।
पडिलाभिए समाणे संसारे परित्तिकए मणुस्साउए णिबद्धे।"

देय द्रव्य शुद्ध, दाता के विचार उदार और लेने वाले मुनि सुपात्र थे। तीनों शुद्धियों के मिल जाने से दान अपूर्व फलप्रद बन गया। दान देने वाले को मुक्ति का प्रमाण पत्र मिल गया और मनुष्य भव की आयु का उपार्जन हुआ। ऐसा दान शत गुण फल प्रदान करता है।

गृहस्थ का दान द्रव्य दान है। द्रव्य दान कई प्रकार से दिया जा सकता है। उदाहरणार्थ जिसे भूख हो उसे रोटी खिलाना चाहिए। कहा है-

"दान दीन को दीजिए, हरे दरिद्र की पीर।
औषध ताको दीजिए, जाके रोग शरीर।।"

सात्त्विक दान के कुछ रूप यहाँ प्रस्तुत हैं- १. पानी पीने के लिए प्याऊ खोलना २. विधवा आश्रम ३. अनाथालय ४. शिशु कल्याण केन्द्र या पाठशाला ५. कपड़े आदि देना ६. निर्धनों को आवश्यकतानुसार वस्तुएँ देना ७. समाज सेवा ८. धार्मिक शिक्षा की व्यवस्था करना ९. विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देना और उनको पढ़ाने की व्यवस्था करना १०. पुस्तकालय स्थापित करना ११. स्वाध्यायशाला में शिक्षण की व्यवस्था करना १२. जरूरतमंद को आर्थिक सहायता १३. साहित्य सर्जन।

साधु-संतों को देने के लिए १४ वस्तुएँ हैं। आहार- १. असणं २. पाणं ३. खादिम ४. स्वादिम। वस्त्र- १. वस्त्र २. पात्र ३. कंबल ४. रजोहरण, पीठ और फलक (चौकी या बाजोटिया, पाटा) आदि।

साधु ज्ञान दान और चारित्र दान देता है। पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने व वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने हर भाई को उपदेश देकर व्यसन निवारण करने का प्रयत्न किया और कर रहे हैं। परिवार में झगड़ा होता है तो उपदेश देकर शान्ति का वातावरण बनाते हैं। चारित्र दान के संबंध में साधु हर व्यक्ति को काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदि को छोड़ने के लिये प्रेरणा देते हैं। मांसाहारी व्यक्तियों को शाकाहारी बनाने का कार्य सराहनीय है। साधु-संतों का दान भावदान है।

यहां पर यह लिखना वांछनीय है कि कुपात्र को दान और विद्या देने से पश्चात्ताप होता है। कहा है- "पयःपानं भुजंगानां, केवलं विषवर्धनं" अर्थात् सर्प को दूध पिलाने से उसका जहर बढ़ता है।

नाम की लालसा का स्वार्थ कीर्तिदान से जुड़ा है। गुप्त दान देना श्रेष्ठ है- 'गुप्तदानं महापुण्यम्।" सच्चा दान वह है जिसमें निरभिमानिता भरी हो। दान देकर अहंकार नहीं करना चाहिए। राजा जनक एक बार दान दे रहे थे। याचक ने उनसे

कहा—आप दानवीर हैं और आप जैसे दानवीर संसार में विरले ही होंगे। पद गौरव महान् होते हुए भी आप दान देते समय नीचे की ओर क्यों देखते हैं? जनक धर्मप्रिय थे। उनके विचार में प्राप्त वैभव भाग्य की देन थी। अतएव उन्होंने उत्तर दिया-

देने वाला देता है जो कोई जाने देन।
बीच में मेरा नाम है, यातै नीचे नैन।।

विशुद्ध, हर्षित और उमड़ते हृदय से दिया गया दान शतगुण फल प्रदान करता है। यश या सम्मान पाने की इच्छा न रखकर दिया हुआ दान ही उत्तम दान कहलाता है।

एक जैनाचार्य ने दान के निम्न पाँच दूषण बतलाए हैं-

"अनादरो विलम्बश्च वैमुख्यं विप्रियं वचः।
पश्चात्तापश्च दातुः स्याद्दानदूषणपचंकम्।।

१. दान देते समय लेने वाले का अनादर करना।
२. देने में विलम्ब करना
३. दान देने में अरुचि या बेरुखी बताना।
४. लेने वाले को अपशब्द कहकर, डांट डपट कर या गालियों की बौछार करके देना।
५. दान देने के बाद दाता के मन में प्रसन्नता के बदले पश्चात्ताप या रंज होना।

इन पांच दूषणों से बचना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

दान में गरीबी बाधक नहीं है। गरीब के पास भी जो थोड़ी सी पूँजी है, उसमें से वह थोड़ा सा भी देगा तो समाज में उसके प्रति भी सद्भावना जागेगी।

दान एक उच्च कोटि का वशीकरण मंत्र है। दान से शत्रुता नष्ट होती है। पराये लोग भी दान से अपने हो जाते हैं। दानदाताओं की समग्र लोक में चारों तरफ कीर्ति फैलती है। दान देने वाला ऊँचा पद पाता है, संचय करने वाला नहीं। पानी बरसाने वाले बादल हमेशा ऊँचे रहते हैं और समुद्र जो संचय करता है वह नीचा रहता है। कहावत है- "The hand that gives gathers" जो हाथ दान देता है वह पाता है अर्थात् कमाई करता है। वह दान, उदारता, करुणा व सहृदयता का मधुर परिचय देता है। जो देता है उसे मिलता भी है-यह सच्चा कथन है।

पाठकों से मेरा निवेदन है कि प्रतिदिन दान देते रहिए, क्योंकि दान धर्म लौकिक और लोकोत्तर दोनों दृष्टियों से कल्याणकारी है। दान सुखी रहने का सच्चा मार्ग है।

—पूर्व न्यायाधीश राजस्थान उच्च न्यायालय
संरक्षक अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
"चंदन" बी—2, रोड़, पावटा, जोधपुर

निष्काम सेवा

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

दया, दान, सेवा आदि के भाव व सद्प्रवृत्तियां किसी कर्म के उदय से नहीं होती, कर्मों के क्षयोपशम व क्षय से होती हैं, अतः औदयिक भाव न होकर स्वभाव हैं। औदयिक भाव न होने से कर्म नहीं हैं, स्वभाव होने से धर्म हैं। यह नियम है कि केवल औदयिक भाव ही कर्मोदय से होते हैं और इन्हीं से नवीन पाप कर्मों का बंध होता है। स्वभाव की अभिव्यक्ति से तो नवीन पाप कर्मों का बंध रुकता है और पुराने कर्मों का क्षय ही होता है। अतः दया, दान, सेवा आदि भाव एवं इनका क्रियात्मक रूप धर्म है, कर्म नहीं। इनमें महत्त्व करुणा-अनुकंपा भाव का है। सुख-भोग के त्याग का है, क्रिया का नहीं। क्रियात्मक सेवा छोटी हो या बड़ी, समान अर्थ रखती है, पर यह अवश्य है कि क्रियात्मक सेवा से भावात्मक सेवा सजीव, सबल तथा स्थायी होती है।

सेवा का स्वरूप है अपने को प्राप्त सुख व सामग्री को दुःखियों को भेंट कर देना और उसके बदले में सम्मान, सत्कार, सम्पत्ति आदि कुछ भी प्रतिफल पाने की आशा न करना, यहां तक कि सेवक कहलाने की लालसा तक भी न करना, क्योंकि सेवक कहलाने की लालसा भी सुख का भोग ही है, अतः स्वार्थ ही है। स्वार्थ भाव सेवाभाव का घातक है, दूषण है। जितना स्वार्थ भाव घटता जाता है उतना ही सेवाभाव पुष्ट होता जाता है।

सेवा सुख-भोग की आसक्ति को गलाकर सेवक के हृदय को मृदुल व कोमल बना देती है। हृदय की कोमलता और मृदुलता की अभिव्यक्ति उदारता व करुणा के रूप में होती है। उदारता सेवक की संग्रह एवं लोभ की वृत्ति को गलाकर उसे अपरिग्रही व निर्लोभी बनाती है। अपरिग्रह से पराधीनता तथा निर्लोभता से अभाव व दरिद्रता मिट जाती है। जिससे स्वाधीनता तथा संपन्नता के साम्राज्य में प्रवेश होता है। करुणा सेवक के हृदय की शुष्कता, कटुता तथा जड़ता को मिटाती है। शुष्कता मिटने से सेवक का हृदय सरसता से भर जाता है तथा कटुता मिटने से मैत्री भाव एवं जड़ता मिटने से संवेदनशीलता से भर जाता है। इस प्रकार सेवा से सेवक का हृदय सरसता, मित्रता व प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है।

सेवा वही कर सकता है जिसका हृदय पराये दुःख से द्रवीभूत होता है। अतः सेवक अपना सुख देकर पराया दुःख अपनाने को सदैव तैयार रहता है। पराया दुःख अपना हो जाने पर प्राणी का अपना दुःख मिट जाता है। कारण कि पर दुःख से दुःखी होने पर हृदय के द्रवीभूत होने से मैत्रीभाव की, प्रेम रस की निष्पत्ति होती है।

यह रस दुःख रहित होता है। अतः इस रस की तुलना किसी भी सांसारिक भोग के सुख से नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रेम का रस क्षति, पूर्ति, तृप्ति, संतृप्ति, निवृत्ति से रहित अगाध व अनंत होता है यह सदा नित-नूतन रहता है और उमड़ता रहता है, जबकि विषय भोग, सम्मान, संपत्ति, सत्ता आदि से मिलने वाला सांसारिक सुख, आकुलता, पराधीनता, जड़ता, हृदयहीनता आदि अगणित दोषों व दुःखों से युक्त होता है। यह क्षणिक होता है, प्रतिक्षण क्षीण होता है, इसका अंत नीरसता में होता है। यह सुख प्रतीत ही होता है, इसका अस्तित्व नहीं होता है। आशय यह है कि सेवा भाव की परिणति प्रेम रस में होती है। यही सच्चा सुख है, दुःख रहित सुख है।

–82/141, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

तीन कविताएँ

श्री दिलीप धींग 'जैन'

भेद विज्ञान

ज्ञान की सर्चलाइट लेकर
ध्यान की सुरंग में जाओ
लाओ खोद-खोद कर
हीरे-कोयले/स्वर्ण मिट्टी सब कुछ,
फिर भेद विज्ञान की प्रयोगशाला
और तप की भट्टी में
सम्यक् - प्रक्रियाओं से
कर दो अलग-अलग
कोयले और हीरे को,
मिट्टी और स्वर्ण को,
तन और चेतन को।।

तिमिर

तिमिर से डरो मत
तिमिर से भागो मत
भय और पलायन
तिमिर है,
अमर उजाले का साधक,
जब प्रकाशमान होता है।
तब सघन तिमिर भी
डर कर भाग जाता है,
उस अलौकिक आलोक में
चिरकाल से सोया
जमाना तक जाग जाता है।

जिन्दगी

जिन्दगी
जो कल तक
कविता थी,
आज कहानी हो गई
कल हो
जाएगी
उपन्यास
पौरुष और संकल्प के बल
अब इसे बनाना है
इतिहास।

–बम्बोरा (राज.)

क्रमशः (3)

महावीर का स्वास्थ्य चिन्तन

श्री चंचलमल चोरड़िया

प्रवृत्ति सम्यक् हो–

मन, वाणी और काया (शरीर) के द्वारा ही जन्म से मृत्यु तक हमारी सारी गतिविधियां होती हैं। महावीर ने तीनों के आलम्बन को योग कहा। जैसा भाव और वातावरण होता है, वैसा ही मन में चिन्तन, मनन, कल्पनाएं होने लगती हैं। मन पांचों इन्द्रियों के विषयों को भी प्रभावित करने की क्षमता रखता है। अतः जब उस पर बुद्धि और विवेक का नियन्त्रण रहता है, तब तक मन पांचों इन्द्रियों और शरीर को सद् प्रवृत्तियों में लगाता है, परन्तु जब अज्ञान और अविवेक होता है तो व्यक्ति अकरणीय, अनावश्यक प्रवृत्तियाँ करने लगता है, जिससे सारा संतुलन गड़बड़ा जाता है और स्वास्थ्य की एवं अन्य समस्याएं पैदा होने लगती हैं।

जब तक जीवन है, तब तक हम बिना प्रवृत्ति नहीं रह सकते। भगवान महावीर ने प्रवृत्ति में विवेक को सर्वाधिक महत्त्व दिया। कैसे प्रवृत्ति करना, और कैसे प्रवृत्ति नहीं करना, तथा कब कौनसी प्रवृत्ति करना, और कब नहीं करना, इन बातों का निरूपण किया। स्वास्थ्य के लिये आवश्यक, स्वावलम्बी, जीवन शैली का सूक्ष्म एवं तार्किक चिन्तन प्रभु महावीर ने प्रस्तुत किया। महावीर ने पांच प्रकार की सम्यक् प्रवृत्ति का आराधन करने तथा तीन प्रकार की अशुभ दुष्प्रवृत्तियों से बचने अर्थात् मन, वाणी और काया को अशुभ से अलग रखने का जो साधक को मार्गदर्शन किया, उसे आठ प्रवचन माताओं के रूप में जाना जाता है। इन पांच समिति एवं तीन गुप्ति रूप आठ प्रवचन माताओं का पालन स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव डालता है।

महावीर का दर्शन मानव को योग से अयोग की तरफ एवं प्रवृत्ति से निवृत्ति की तरफ ले जाने वाला राजमार्ग है। जहां पहुंचने के पश्चात् कुछ भी करना शेष नहीं रहता। यदि महावीर के निर्देश के अनुसार जीवन शैली अपनायी जाये तो रोग की संभावनाएं क्षीण हो जाती हैं। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ जाती है। रोग होने की स्थिति में रोगी की सहनशक्ति बढ़ जाती है। अतः व्यक्ति पुनः जल्दी स्वस्थ हो जाता है। महावीर के सिद्धान्तों एवं कथनों का जितना-जितना ईमानदारी पूर्वक पालन किया जाता है, उतना-उतना व्यक्ति स्वस्थ होता है तथा जितनी-जितनी उनकी उपेक्षा की जाती है, उतनी-उतनी रोग होने की संभावना बढ़ जाती हैं। (क्रमशः)

–चोरड़िया भवन,
गोल बिल्डिंग रोड़, जोधपुर

सत्संस्कार ही परम धन

श्री नितेश नागोता 'जैन'

अभिभावक भलीभांति इस बात को जानते हैं कि उनके आने वाले कल की पहचान और उनके भविष्य के कर्णधार उनकी संतान ही हैं। वस्तुतः व्यक्ति अपनी इस संतान के लिए जीवन की अन्तिम श्वासों तक सबकुछ अधिक से अधिक करने की कोशिश भी करते रहते हैं। प्रायः व्यक्ति सोचता है मेरी संतान आने वाले समय में दुःख नहीं देखे, वह संपन्न हो, धनवान हो, शोहरत-प्रतिष्ठा युक्त जीवन-यापन करे आदि-आदि। बस इसी अपनेपन की सोच और अपने भविष्य के कर्णधारों की मजबूती के लिए व्यक्ति जीवन भर कोल्हू के बैल की तरह घर-गृहस्थी के कार्यों में उलझा रहता है। संतानों के सुख की खातिर अनैतिकता, बेईमानी, भ्रष्टाचार, कालाबाजारी आदि कई बुराइयों को भी जीवन व्यवहार में अपनाता है। किन्तु क्या मानव की यह मोहासक्ति की सोच उचित है? क्या वह आज जितना जो कुछ है कल भी वैसा ही रहेगा? क्या यह निश्चित है, इसीलिए ज्ञानियों ने कहा भी है कि-

पूत सपूत तो क्यो धन संचै।
पूत कपूत तो क्यों धन संचै।।

अर्थात् सपूत और कपूत दोनों ही पुत्रों के लिए धन संचय की कहीं भी कोई भी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि सपूत तो स्वयं ही अपनी बल-बुद्धि-विवेक और कर्मठता के बल पर समाज-व्यवस्था में अपना वजूद और स्थान बना लेगा, जबकि कपूत संतान हमारे मान-स्वाभिमान को गर्त में गिराने व रिद्धि-सिद्धि को धूल में मिलाने में कहीं कोई कसर बाकी नहीं रखेंगी।

अतः यदि एक अच्छे माता-पिता (अभिभावक) होने से हम अपने संतान का हित चाहते हैं तो हम उसके जीवन विकास और सुख के लिए रुपया-पैसा, दौलत-शोहरत, यश-वैभव की खोखली मानसिकता त्याग दें। हम अपनी संतान के उज्ज्वल भविष्य के लिए उसकी संगत, शिक्षा, जीवन व्यवहार, आदतों व कार्यों पर अधिक ध्यान दें, इनके सुधार और विकास के लिए अधिकाधिक प्रयास करें तो हर घर में संतान गांधी, विवेकानन्द, महावीर स्वामी का रूप प्राप्त कर सकती है।

किन्तु इसे पीड़ाजनक विडंबना ही कहा जायेगा कि हर माता-पिता अपने बच्चे को बड़े से बड़ा डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर और अफसर बनाना चाहते हैं, किन्तु एक आदर्श साधारण नैतिक नागरिक बनाने की कहीं किसी अभिभावक को चाह नहीं है। यही कारण है कि हमारी असली पूँजी अपनी संतान के दिलो-दिमाग में भौतिकता हावी है, उसके जीवन-व्यवहार में सत्संस्कारों का अभाव है। ऐसी परिस्थितियों में हमारी संतान बुरी संगति, बुरी आदतों और बुराइयों को अपनाते

हुए पतन की राह पर आगे बढ़ रही है। वस्तुतः हमारा भविष्य वर्तमान में ही कमजोर हो रहा है, जो कि कष्टप्रद घटना है।

अतः अपने साथ अपनी संतान के लिए हम अपने चिंतन-मनन को बढ़ायें व अपनी प्रवृत्तियों पर चिन्तन-मनन करें। क्योंकि यदि हम आज अनैतिकता और आपराधिक काम करते हैं तो कल हमारी संतान भी हमारे उन्हीं कामों को आगे बढ़ाने के लिए कमर कसकर तैयार होगी। यही कारण है कि एक चोर का बेटा चोर, तस्कर का बेटा तस्कर और खूनी का बेटा 'दादा' और 'क्रिमिनल' बन रहा है। क्या हमने जीवन भर भाग-दौड़ इसीलिए की कि हमारी संतान ऐसे क्रूर, घृणास्पद स्थान को प्राप्त करे? आखिर हम चाहते क्या हैं? अतः प्रत्येक अभिभावक पहले स्वयं के आचार-विचार में परिवर्तन करे, अपने जीवन को व्यवस्थित, व्यावहारिक, प्रामाणिक और नैतिक बनाये, तभी हमारी संतान आदर्श रूप प्राप्त कर सकती है। एक अच्छे अभिभावक होने के नाते हम यह प्रयास अवश्य करें कि हमसे जीवन में जो गलतियां हो गई हैं, उनकी पुनरावृत्ति हमारी संतान नहीं करे। इसलिए प्रत्येक घर-परिवार में अभिभावक अपने बच्चों को अधिकाधिक समय दें। उनसे ज्ञान-चर्चा, शंका-समाधान करें। संत-सतियों व प्रबुद्ध लोगों की संगति से उन्हें जोड़ें तथा जीवन-व्यक्तित्व विकास के लिए पूरा-पूरा अवसर उन्हें दिया जाए, तो निश्चित ही हमारी संतान स्वयं अपने बल-बुद्धि-विवेक से समाज में अपनी पृथक् और आदर्श पहचान बना सकती है, जो कि अत्यधिक आवश्यक है। वस्तुतः सत्संस्कार ही परम धन है।

हमारी संतान आदर्श बने, त्यागी बने, ज्ञानी बने,
सेवक बने, नैतिक बने, जन–जन के लिए प्रेरणा बने।
सत्संस्कारों के बल पर, हमारी संतान आदर्श बने,
त्यागी बने, ज्ञानी बने, जन–जन के लिए प्रेरणा बने।।

175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी(राज.)

विचार-कण

श्रीमती मदनदेवी बुरड़

- जो सुख हमारे लिये पाप का कारण और दूसरों के लिये दुःख का कारण बने ऐसे सुख पर पसंदगी की मोहर कभी लगानी नहीं।
- विषय सुख की विषमता यह है कि विषयों को भोगने हेतु सतत फेरफार या रद्दोबदल करनी ही पड़ती है।
- पदार्थों का आकर्षण मालिक बनने को लालायित करता है। मालिक बन जाने पर आकर्षण तुरन्त विदा हो जाता है, कितनी करुणा की बात है।
- काल्पनिक सुख महाभयंकर है, क्योंकि भोगे बिना ही आत्मा को दुर्गति में भेज देता है।

– भीलवाड़ा

(क्रमशः 3)

वृद्धावस्था में कैसे जीयें ?

श्री पूनमचन्द चौपड़ा

४३. अनेक प्रकार के वकीलों, डाक्टरों, वैद्यों इत्यादि से अच्छे संबंध रखें ताकि वक्त पर काम आ जावे।

४४. अच्छा समझदार व सलाहकार निजी मित्र रखें तथा अच्छा समझदार व सलाहकार पारिवारिक मित्र रखो। दोनों एक भी हो सकते हैं। ये समय पर हमें सही मार्गदर्शन कर सकते हैं।

४५. अकर्मण्यता, असमर्थता, व्यसन, असाध्य बिमारी, चिड़चिड़ापन, क्रोध, खर्चीलापन तथा गंदी आदतें हाथों हाथ नरक के दर्शन करा सकती हैं। इनसे बचें।

४६. जब शरीर एवं इन्द्रियों पर से नियंत्रण हट जाता है तब सब जगह से नियन्त्रण हट जाता है। फिर प्रभुत्व जमाना अथवा बात-बात पर टांग फंसाना मूर्खता है। फिर चुप रहने में लाभ है। क्षमता घटने के साथ ही प्रभाव घट जाता है, फिर प्रभाव का प्रयोग करना महामूर्खता है।

४७. जीवन को सादा, सरल, सदाचारी एवं पाप रहित बना लेना उचित है।

४८. मुख्य बातें- हमेशा याद रखें:-

१. मृत्यु निश्चित है। कब होगी इसका पता नहीं है। जिस किसी की उत्पत्ति हुई है- चाहे वे अवतारी ही क्यों न हों, मृत्यु तो उनकी भी हुई है। वृद्धावस्था का अंत मृत्यु में है। अतः मन में त्याग वृत्ति लाओ। फिर शरीर रह सके उतना ही उपयोग करो। ऊपरी त्याग से कुछ नहीं होगा। मन में इच्छा ही नहीं होनी चाहिए। इच्छाओं का अंत कर दो तो जीत में रहोगे।

२. जो तुम्हारा है वह अन्यथा होगा नहीं। जो अन्यथा है वह तुम्हारा होगा नहीं। फिर आश्चर्य किस बात का तथा अफसोस किस बात का? फिर पाप किस दिन के लिये?

३. भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने तथा उत्तराध्ययन सूत्र में भगवान महावीर स्वामी ने भोगों के त्याग में लाभ बताया है। भोग भोगने से गति बिगड़ जाती है। भोगों की इच्छामात्र होने से भी भारी नुकसान है। अतः सांसारिक भौतिक भोगों का यानी इन्द्रियों के विषयों का मन से ही अंत कर दो। इच्छाएँ होने ही मत दो। (क्रमशः)

-92, पोलो प्रथम, पावटा, मण्डोर रोड़, जोधपुर

क्रमशः (2)

दशवैकालिक सूत्र (चतुर्थ अध्ययन)

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र का चतुर्थ अध्ययन षड्जीवनिका से संबंधित है। इसमें पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवों के विस्तृत विवेचन के साथ उनके रक्षण का उपदेश दिया गया है। इस अध्ययन में चारित्र धर्म की शिक्षा के अन्तर्गत पाँच महाव्रत और छठे रात्रि-भोजन विरमण रूप मुनिधर्म का प्रतिपादन कर षट्काय के समस्त जीवों की त्रिकरण और त्रियोग से संपूर्ण हिंसा-त्याग की प्रतिज्ञा करता है कि मैं जीवनभर के लिये हिंसा करूँगा नहीं, कराऊँगा नहीं और करने वाले का अनुमोदन करूँगा नहीं, मन, वचन और काया से। वह पूर्वकृत हिंसा के पाप को हल्का करने के लिये प्रतिक्रमण करता है, पाप की निंदा करता है और गुरु साक्षी से गर्हा करता और पापाचारी आत्मा को पाप से अलग करता है। इस अध्ययन में मृषावाद, अदत्तादान, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के भी सर्वथा विरमण का विवेचन किया गया है।

यह बात उल्लेखनीय है कि भगवान महावीर के पूर्व श्रमणों के चार महाव्रत ही थे तथा ब्रह्मचर्य को अपरिग्रह के अंतर्गत ही माना जाता था। परन्तु महावीर ने इसका विशिष्ट महत्त्व बतलाते हुए इसकी रक्षा हेतु अतिरिक्त नवगुप्तियों का उपदेश दिया। जैन दर्शन ने परिग्रह को अन्य पापों का मूल कहा है, क्योंकि मनुष्य प्रायः परिग्रह के लिये ही हिंसा, झूठ, चोरी और कुशील का सेवन करता है। परन्तु साथ ही जैन दर्शन में मूर्च्छा भाव को परिमाण कहा है, जिसका अर्थ है राग के अधीन होकर पदार्थों को ग्रहण करना या संग्रह करना। शरीरधारी मुनि को अन्न, जल, वस्त्र, पात्र, औषध आदि ग्रहण करने पड़ते हैं, क्योंकि उनके बिना जीवन-निर्वाह नहीं हो सकता। परन्तु यदि उनके ग्रहण में राग नहीं है तो वे परिग्रह नहीं कहलाते हैं। अतः परिग्रह का मापदंड मूर्च्छा भावना है न कि संग्रह।

इस अध्ययन के गद्य पाठ में चारित्र धर्म का पूर्ण परिचय प्राप्त हो जाता है। तत्पश्चात् २८ गाथाओं में चारित्र धर्म की साधना में यतना की प्रधानता और साधना का क्रम बतलाया गया है। चलने, फिरने, उठने, बैठने, खड़े रहने, सोने, बोलने और खाने आदि सभी प्रवृत्तियों में पापकर्म तो होता ही है, परन्तु यतना पूर्वक क्रिया करने पर पाप कर्म के बंध से बचा जा सकता है। गाथा ७ में प्रश्न किया गया है कि हम अपने दैनिक कार्यों को किस प्रकार से करें कि हमें पापकर्म का बंधन न हो और गाथा ८ में उत्तर है कि उपयोग पूर्वक कार्य करने से पाप कर्म का बंध नहीं होता है।

ये गाथाएँ इस प्रकार हैं-

कहं चरे कहं चिट्ठे, कहंमासे कहं सए।
कहं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बन्धई।।7।।
कैसे चले, खड़े हो कैसे? कैसे बैठें और शयन करे
कैसे खाए, भाषण करे, ना पाप कर्म का बन्ध करे
जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो, पाव कम्मं न बन्धई।।8।।
यतना से चले, खड़े होवे, यतना से बैठे, शयन करे।
यतना से खाये, बोले तो, ना पाप कर्म का बंध करे।।

आगे कहा है-

"सब जीवों में आत्मबुद्धि एवं सबमें समदर्शी हो,
आस्रवविरोधी दान्त श्रमण के, न पापकर्म का बन्धन हो।।

अर्थात् जो श्रमण जीव मात्र को आत्मवत् देखता है और कर्मबंध के आस्रवों को विरतिभाव से रोकता है, उसे पापकर्म का बंध नहीं होता।

इस अध्ययन में अब तक पाप से बचने के लिये क्रिया का महत्त्व बतलाया है, परन्तु आगे गाथा १० कहती है कि चारित्र और उसकी क्रिया ज्ञानपूर्वक होने पर ही लाभकारी होती है। गाथा इस प्रकार है-

पढमं नाणं तओ दया, एवं चिट्ठई सव्वसंजए।
अन्नाणी किं काही, किं वा नाहीइ सेयपावगं।।10।।
पहले ज्ञान दया पीछे, ऐसा सब मुनिजन कहते हैं।
अज्ञानी क्या कर सकते? ना अच्छा-बुरा समझते हैं।।

अर्थात् क्रिया से पूर्व ज्ञान की आवश्यकता बतलाई गई है। साथ ही कहा गया है कि जो साधक तपोगुण की प्रधानता वाले हों, सरल और मोक्षमार्ग की मतिवाले हों, क्षमा एवं संयम में रमण करते हों, आये हुए परीषहों को शांत भाव से सहन करते हों, उनकी सुगति सुलभ होती है। अंत में कहा है कि श्रद्धाशील साधक षट्काय जीवों की यतना करें, दुर्लभ श्रमण धर्म को प्राप्त कर मन, वचन और काया की क्रिया से जीवों की विराधना हो, ऐसा काम नहीं करें। (क्रमशः)

-सेवानिवृत्त प्राध्यापक, जोधपुर विश्वविद्यालय
738, नेहरू पार्क रोड, सरदारपुरा, जोधपुर

काम भोग इस जगत में, सर्वोत्तम सुख कहलाते हैं।
किन्तु नहीं इनका फल अच्छा, सब शास्त्र यही बतलाते हैं।
यद्यपि गृही घर में ये सुख, सर्वथा सुलभ हो जाते हैं।
जिससे इस सुख का महत्त्व, दुःख के कारण बन जाते हैं।।

-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

परिचय एवं गतिविधियाँ

रत्नवंश की गौरवशाली परम्परा के युगद्रष्टा-युगमनीषी स्वाध्याय-सामायिक के प्रबल प्रेरक परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म. सा. ने अज्ञान व मोह को मिटाने हेतु स्वाध्याय व सामायिक को अचूक औषधि बतलाया है तथा रत्नवंश के अष्टम पट्टधर प्रवचन प्रभाकर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म. सा., उपाध्यायप्रवर, पण्डित रत्न श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं इनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतीमण्डल भी स्वाध्याय-सामायिक के साथ व्यसन-फैशन-निवारण, व्रतधारण आदि का मंगलमय उद्घोष कर रहे हैं। इनके सदुपदेशों से प्रभावित होकर ज्ञान ज्योति जागृत करने एवं जीवन को विनय, सरलता, समता, सेवा, स्वाध्याय आदि सद्गुणों से सुवासित करने के उद्देश्य से, सितम्बर-१९९९ में अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्रीयुत कैलाशचन्द जी हीरावत-मुम्बई के मार्गदर्शन में एवं संघ के उपाध्यक्ष श्रीयुत आनन्द जी चौपड़ा-जोधपुर के निर्देशन में "अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड" का गठन किया गया।

:: प्रमुख उद्देश्य ::

- सम्यक् ज्ञान, दर्शन व चारित्र की रक्षा एवं वृद्धि, जैन श्रमण संस्कृति के आदर्शानुकूल शुद्ध एवं सही शिक्षा-दीक्षा में योगदान एवं चतुर्विध संघ के उन्नयन और संगठन हेतु कार्य करना।
- जैन समाज में आध्यात्मिक चेतना के अभ्युदय एवं नैतिक, चारित्रिक तथा शैक्षणिक विकास हेतु कार्य करना। शिक्षा के माध्यम से ज्ञानवान् व क्रियावान् सुश्रावक तैयार करना।
- आध्यात्मिक शिक्षा, शिविर व परीक्षा के माध्यम से अच्छे स्वाध्यायी तैयार करना, उनके ज्ञान में वृद्धि करना एवं स्वाध्यायी के रूप में तथा अध्यापक के रूप में सेवाएँ देने हेतु योग्य बनाना।
- जैन धर्म के विभिन्न पहलुओं को जानने हेतु प्रयासरत शोधकर्त्ताओं व विद्वानों को अभीष्ट व यथोचित सहयोग प्रदान करना।
- आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा हेतु पाठ्यक्रम तथा उससे सम्बन्धित पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण-परीक्षण के कार्य में एकरूपता, व्यापकता एवं आपसी सामंजस्य स्थापित करना तथा उपर्युक्त प्रमुख उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन धर्म-दर्शन का क्रमिक अध्ययन करवाकर वर्ष में दो बार परीक्षाएँ आयोजित करना इस बोर्ड का प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के कार्यों की समय-समय पर समीक्षा करने हेतु एक १६ सदस्यों की संचालन समिति का गठन किया गया है, जिसमें जैन धर्म के जानकार विद्वान एवं क्रियावान् स्वाध्यायियों, प्राध्यापकों एवं परीक्षा कार्य में अनुभव रखने वाले सभी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया गया है।

बोर्ड के दिन-प्रतिदिन के कार्यों की देखरेख करने हेतु एक समिति गठित है जिसमें बोर्ड के निदेशक, संयोजक, सचिव, रजिस्ट्रार एवं कोषाध्यक्ष हैं।

प्रतिवर्ष दो बार - जनवरी व जुलाई माह में अन्तिम रविवार को दोपहर १२ से ३ बजे तक परीक्षाएँ आयोजित की जाती हैं। अब तक कुल चार परीक्षाएँ आयोजित हो चुकी हैं - जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है -

दिनांक	आवेदित	उपस्थित	उप.प्रतिशत	उत्तीर्ण	उ. प्रतिशत	केन्द्र
प्रथम परीक्षा						
07.1.2001	2479	1922	78	1542	80	65
द्वितीय परीक्षा						
29.7.2001	4688	3205	68	2635	82	110
तृतीय परीक्षा						
06.01.2002	6370	3946	63	3115	80	168
चतुर्थ परीक्षा						
28.07.2002	7800	4727	61	3591	76	187

बोर्ड द्वारा परीक्षार्थियों को सम्बन्धित कक्षा की पाठ्यपुस्तकें निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं। परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को अंकतालिका, प्रमाण पत्र व प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किये जाते हैं। उत्तीर्ण होने के लिये ५० प्रतिशत अंक प्राप्त होना अनिवार्य है। ५० से ५९ तक तृतीय श्रेणी, ६० से ७४ तक द्वितीय श्रेणी तथा ७५ व उससे ऊपर प्रथम श्रेणी प्रदान की जाती हैं। ५० से ८४ प्रतिशत अंक पाने वालों को ५ ग्राम तथा ८५ व उससे ऊपर अंक पाने वालों को ७.५ ग्राम का तथा प्रत्येक कक्षा में

प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को क्रमशः २०, १५ व १० ग्राम चाँदी के सिक्के पुरस्कार स्वरूप प्रदान किये जाते है।

आगामी परीक्षा **19 जनवरी–2003,** रविवार को दोपहर १२ से ३ बजे तक कक्षा प्रथम से आठवीं तक की विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी। इस परीक्षा में ११००० परीक्षार्थियों को परीक्षा दिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आप सबके सक्रिय सहयोग से ही लक्ष्य प्राप्ति संभव हो सकेगी।

पाठ्यपुस्तकें बोर्ड द्वारा एवं उदारमना दानदाताओं के सहयोग से भी प्रकाशित की जाती हैं। पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन में अब तक प्राप्त सहयोग का विवरण इस प्रकार है –

दानदाता	कक्षा	प्रतियां	राशि
श्रीमती विमला जी नारायणचंद जी मेहता, जोधपुर (बोर्ड-संयोजक)	प्रथम	५०००	३०,०००
श्रीमती प्रेमलता जी, चन्द्रराज जी सिंघवी, जोधपुर	दूसरी	२०००	१५,०००
श्री पारसमलजी, धर्मचन्दजी हीरावत, मुंबई	तीसरी	५०००	३३,४४३
श्री मोफतराज जी मुणोत, मुंबई (संघसंरक्षक)	चतुर्थ	५०००	३२,७४७
श्रीमान् महावीरचन्द जी, महेन्द्रजी लोढ़ा, जोधपुर	नवमीं	११००	१०,००१
श्रीमान् रतनलाल सी. बाफणा, जलगांव (संघ-अध्यक्ष)			२०,०००
कमला फाउन्डेशन, मुंबई (श्री सरदारसिंह जी कर्णावट - मुम्बई)	दसवीं	११००	३३,४१०
श्रीमान् मनोहरराज जी कांकरिया, चैन्नई	I,II,III,IV	१००००	६०,०००
गुप्तदानी, विजयनगर	पांचवीं	२०००	३१,०००
श्री धनराज ढड्डा धार्मिक ट्रस्ट, मुंबई	छठी	२०००	२१,०००
श्री मनोहरराज जी कांकरिया, चैन्नई	प्रथम	५०००	३०,०००
श्री मोहनलाल जी, पारसमल जी बोहरा, तिरूवन्नामलै	द्वितीय	७०००	३२,०००
श्री डी. सुगनचंद जी मुथा, बैंगलोर	प्रथम	७०००	३५,०००
मै. पीयूष कुमार, हुकमीचंद जी नागसेठिया, होलनांथा	द्वितीय	१०००	७,५००
गुरू हस्ती वात्सल्य ट्रस्ट, चैन्नई			७,५००
श्रीमती सायरकंवर , प्यारेलाल सा. कोठारी, चैन्नई	सप्तम	२०००	३०,०००
	आठवीं	प्रकाशन में	४०,०००
श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद, सिकन्द्राबाद			

(मार्फत-श्री किशोर चन्द जी छाजेड़- हैदराबाद)(संघ-क्षेत्रीय प्रधान) ५०,०००

कुल योग **5,18,601**

समाज के उदारमना दानदाताओं, श्रीमन्तों से विनम्र अनुरोध है कि शिक्षण बोर्ड में निम्न प्रकार से आर्थिक सहयोग कर पुण्योपार्जित लक्ष्मी का सदुपयोग करावें तथा जिनशासन प्रभावना एवं कर्म निर्जरा के महान् लाभ को प्राप्त करावें -

कक्षा	नाम	प्रति	राशि
पहली कक्षा	जैन धर्म परिचय	१०००	७५००/-
दूसरी कक्षा	जैन धर्म प्रवेशिका	१०००	७५००/-
तीसरी कक्षा	जैन धर्म प्रथमा	१०००	७५००/-
चौथी कक्षा	जैन धर्म मध्यमा	१०००	७५००/-
पाँचवी कक्षा	जैन धर्म चन्द्रिका	१०००	१००००/-
छठी कक्षा	जैन धर्म विशारद	१०००	१००००/-
सातवीं कक्षा	जैन धर्म कोविद	१०००	१००००/-
आठवीं कक्षा	जैन धर्म भूषण	१०००	१००००/-
नवमीं कक्षा	जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध	१०००	२००००/-
दसवीं कक्षा	जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध	१०००	२००००/-
ग्यारहवीं कक्षा	जैन सिद्धान्त रत्नाकर - पूर्वार्द्ध	१०००	२००००/-
बारहवीं कक्षा	जैन सिद्धान्त रत्नाकर उत्तरार्द्ध	१०००	२००००/-
तेरहवीं कक्षा	जैन सिद्धान्त शास्त्री - पूर्वार्द्ध	१०००	२००००/-
चौदहवीं कक्षा	जैन सिद्धान्त शास्त्री उत्तरार्द्ध	१०००	२००००/-

एक परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों का प्रोत्साहन पुरस्कार = १५०००

प्रबुद्ध समाज सेवियों, वरिष्ठ स्वाध्यायियों, युवा कार्यकर्त्ताओं एवं बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि अपनी प्रतिभा एवं सामर्थ्य के अनुसार बोर्ड की परीक्षा विषयक विभिन्न गतिविधियों जैसे - आवेदन पत्र भरवाने, परीक्षा आयोजित कराने, प्रश्न पत्र बनाने, उत्तरपुस्तिकाएँ जाँच कराने, पुरस्कार वितरण कराने, पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित कराने आदि में तन-मन-धन से अवश्य सहयोग प्रदान कर आपकी अपनी इस संस्था को स्वावलम्बी, समृद्ध एवं सुविकसित बनाने की कृपा करावें। सम्पर्क सूत्र- अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड,घोड़ों का चौक,जोधपुर-३४२००१(राज.) फोन नं. २६३०४६०

—विमला मेहता, संयोजक

जिनवाणी पर अभिमत

आज 'जैनागम विशेषांक' प्राप्त हुआ। हर्ष हुआ। जिनवाणी पत्रिका का जैनागम विशेषांक वस्तुतः वस्तुनिष्ठ वर्णन और विवरण से अनुप्राणित है, अनुप्रीणित भी है। यह पूर्णतः प्रगट है कि प्रस्तुत विशेषांक अध्येताओं के लिये उपयोगी एवं अनुसन्धाताओं के लिये भी संदर्भ ग्रन्थ के रूप में प्रयोगी सिद्ध होगा।

दिनांक ३०.८.२००२, जालन्धर — रमेश मुनि शास्त्री

जिनवाणी अंक सितम्बर २००२ में 'भगवान से बढ़कर है भगवान की वाणी' विषय पर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रवचन को पढ़ा, जो हमारी आंखें खोल देने वाला है। इसमें बताया गया है कि आज वीतराग वाणी आलमारियों में बंद है, शास्त्र-रक्षण का कोई प्रबन्ध नहीं, ऐसे में भगवान की वाणी पर कैसे होगा- मनन, मंथन, चिन्तन। यह भी सही है बिना शास्त्र स्वाध्याय के साधना निर्मल और पवित्र नहीं बन सकती। अतः हमें वीतराग भाव से वीतराग वाणी के अन्वेषण और अनुसंधान करने की आवश्यकता है ताकि हमें उसकी मौलिकता का पता चल सके। इस कार्य में मात्र "जैन" के रूप में बिना सम्प्रदाय भेद के संगठित प्रयास वांछनीय है। मैं सभी विद्वानों और धर्माचार्यों से विनति करना चाहूँगा कि वे सभी संगठित होकर वीतराग वाणी के महत्त्व को उजागर करें, जिससे आने वाली पीढ़ी 'जैन' होकर धर्मसाधना कर सके। आशा है इस दिशा में सार्थक प्रयास किये जायेंगे।

दिनांक १२.१०.२००२ — घेवरचन्द गोदीका, जयपुर

'जिनवाणी' का जुलाई अंक एक मित्र के यहां पढ़ा। करीब दस-बारह वर्ष पूर्व की यह परिचय यात्रा धुधंलके से बाहर निकलकर स्मृति-पटल पर साफ सी अंकित हो गई। मैं इस पत्रिका की संस्थापक श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ में अध्ययन के वक्त करीब दो वर्ष तक नियमित पाठक रहा। बाद में रतलाम आने पर दो-तीन वर्षों तक भी पत्रिका पढ़ने का अवसर मिलता रहा। लेकिन यह अंक पढ़ते वक्त हृदय उस समय आनंदित हो उठा जब छात्रवास के अधीक्षक रहे सम्माननीय श्री दिलीप जी नागौरी, बम्बोरा (उदयपुर) को सम्मानित करने की खबर के साथ छात्रावास समय के मित्र श्री नवलसिंह जैन का लेख 'भैया की चिट्ठी' शीर्षक से पढ़ा। करीब १०-१२ वर्षों पूर्व की सारी यादें ताजा हो गई। खैर! जिनवाणी के इस सफर में काफी बदलाव दिखलाई दे रहा है। लेकिन निखार और ज्यादा बढ़ गया है। पत्रिका उत्तरोत्तर प्रगति करे, यही कामना है।"

दिनांक १८.७.२००२ — संजय पी.लोढ़ा जैन, बरवेट, जिला- झाबुआ

लोभी सेठ सागरदत्त

कई दिनों पहले की बात है। किसी गांव में एक करोड़पति सेठ रहता था। उसका नाम था सागरदत्त। उसके चार लड़के थे। सेठ ने चारों लड़कों के विवाह कर दिये थे। पुत्र-वधुओं के घर से भी बहुत धन-माल मिला था। लेकिन था सेठ पहले नम्बर का कंजूस। विवाह हो जानें पर उसने सोचा– अगर लड़के बैठे-बैठे ही खाते रहेंगे तो एक न एक दिन मेरा खजाना खाली हो जायेगा। यह सोचकर उसने अपने लड़कों को बुलाया और विदेश में धन कमाने के लिये जाने को कहा। लड़के अपने पिता के स्वभाव से परिचित थे। अतः लाचार हो वे चुपचाप विदेश चले गये। उनके चले जाने पर घर सुनसान हो गया। सेठजी अकेले रह गये। पुत्रवधुएँ उच्च कुल की थीं। पति की मौजूदगी में तो वे किसी तरह अपना मन बहला लेती थीं, परन्तु अब उनका कोई सहारा नहीं रहा। सब तरह से उनको कठिनाइयां हो गईं। न खाने को अच्छा मिलता था न पहनने को। इस तरह चारों पुत्रवधुएँ दुःख से अपने दिन व्यतीत करने लगी। एक दिन की बात है चारों पुत्रवधुएँ अपने काम धन्धे से निपट कर झरोखे में बैठी हुई आपस में बातचीत कर रही थीं। बड़ी वधू ने कहा-बहिन! सेठजी की कृपा से लूखा-सूखा तो हमें मिलता ही है, फिर आयम्बिल क्यों नहीं कर लिया करें। यह बात सबको जंच गई। अब वे रोज आयम्बिल तप करने लगी। तपस्या के प्रभाव से देवी प्रसन्न हुई और उसने उनको आकाश-गामिनी विद्या प्रदान की।

फिर क्या था, पुत्र-वधुओं के दिन पलटे। शाम होते ही वे सब एक बड़े लक्कड़ पर बैठी ओर बोली-चलो रत्नद्वीप। इतना कहते ही विद्या के बल से वह लक्कड़ आकाश में उड़ने लगा और रत्नद्वीप में जाकर रुक गया। पुत्रवधुएँ उतरी और रत्नद्वीप में घूमने लगी। वहाँ चारों तरफ रत्न ही रत्न दिखाई देते थे। पुत्रवधुएँ कुछ देर तक घूमती रहीं और फिर एक-एक रत्न लेकर वापिस अपने घर लौट आई। घर आकर उन्होंने अपनी दासी को एक रत्न देकर हलवाई के पास भेजा और यह कहलाया कि हम जो कुछ तुम्हारे से मंगायें वह तुम भेजा करना। जब तुम्हारे पैसे इस रत्न से अधिक हो जायेंगे, तब हम तुम्हारा हिसाब कर देंगे और हमारा रत्न ले लेंगे। तब तक यह रत्न तुम अपने पास रखो। दासी की बात सुनकर हलवाई बड़ा प्रसन्न हुआ और वह रत्न ले लिया। पुत्रवधुएँ इच्छानुसार तरह-तरह की मिठाइयां मंगाने लगी। अब उनको किसी तरह की तकलीफ न रही। कुछ दिनों बाद हलवाई ने सोचा- सेठजी तो एक नम्बर के कंजूस हैं। वे मेरे रुपये क्या दें? कहीं पुत्रवधुएँ मुझे धोखा तो नहीं दे रही हैं? उन्होंने जो रत्न मेरे यहाँ जमा कराया है, न जाने वह क्या है? और कितनी कीमत का है? मैं तो सेठजी के पास जाकर अपने रुपये ले आऊँ

और यह रत्न दे आऊँ। ऐसा सोच कर वह सेठजी के पास गया और रत्न देकर बोला- यह आपका रत्न संभालिये और मेरे रुपये दीजिये। सेठजी ने रत्न देखा तो आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने पूछा- यह तूं कहां से लाया? हलवाई ने सच सच बात कह दी। सेठजी ने उसको रुपये देकर वह रत्न ले लिया। ऐसा रत्न उन्होंने आज तक नहीं देखा था। वे सोचने लगे- यह रत्न पुत्रवधुएँ कहां से लाई हैं? इसकी खोज करनी चाहिए। अब वे बराबर अपनी पुत्रवधुओं का ध्यान रखने लगे। एक दिन शाम को सेठजी ने देखा कि पुत्रवधूएँ घर में नहीं है। घर के आसपास चारों तरफ देखा। अपने बाड़ें में भी देखा, लेकिन वहाँ भी पुत्रवधुएँ नहीं मिली। बाड़े में एक बड़ा लक्कड़ भी गायब था। जिसे देखकर सेठजी विचार में पड़ गये। कुछ समय बाद जब सेठजी अपने घर में आये तो पुत्रवधुएँ घर में मिली और वह लक्कड़ भी यथास्थान पर पड़ा हुआ पाया। उसे देखकर सेठजी को यह दृढ़ निश्चय हो गया कि पुत्रवधुएँ इस लक्कड़ पर बैठ कर ही कहीं न कहीं जाती हैं।

दूसरे दिन सेठजी ने एक सुथार को बुलाया और उस लक्कड़ को पोला कर नीचे एक जालीदार किवाड़ बनाया। जिसे कोई आसानी से नहीं देख सकता था। शाम होते ही सेठजी उस लक्कड़ में आ बैठे। रोज की भांति आज भी पुत्रवधुएँ आई और उस लक्कड़ पर बैठ गई। विद्या का स्मरण करते ही वह लक्कड़ उड़ा और रत्नद्वीप जा पहुँचा। पुत्रवधुएँ रोज की तरह उतरीं और एक तरफ जाकर बैठ गई। सेठजी ने बाहर मुँह निकाला तो चारों तरफ रत्न ही रत्न दिखाई दिये। उन्होंने अपने मन में सोचा मेरी वधुएँ कितनी मूर्ख हैं? ऐसी खान मिलने पर भी एक-एक रत्न लाती हैं? लो, मैं आज बहुत सारे रत्न इकट्ठे कर लेता हूँ। ऐसा सोचकर वे बाहर निकलें और चुपके से रत्नों को बीनकर सारा लक्कड़ भर दिया। इतने पर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ। इसलिये दो चार अपनी जेब में और दो चार अपने हाथ में भी ले लिये। फिर झटपट अपनी पुत्रवधुओं से आंख बचाते हुए उस लक्कड़ में बैठ गये। कुछ देर बार वधुएँ आई और एक-एक रत्न लेकर बैठ गई।लक्कड़ उड़ा। लेकिन आज वह भार से नीचे जा रहा था। यह देखकर उनमें से एक ने कहा- बहिन! आज तो लक्कड़ नीचे जा रहा है। दूसरी बोली- यदि नीचे जाता है तो छोड़ दो। अपन तो यों ही विद्या के बल से चली जायेंगी। जब सेठजी ने यह सुना तो वे गिडग़िड़ाते हुए बोलें-अरी! छोड़ना मत! भीतर मैं हूँ- तुम्हारा सुसरा। तीसरी ने कहा- अरे! आज तो अच्छा अवसर मिला है। चौथी बोली- देखती क्या हो? फिर कब ऐसा मौका मिलेगा? फिर क्या था? चारों ही पुत्रवधुएँ लक्कड़ को छोड़कर उड़ गई। उनके उड़ते ही लक्कड़ नीचे समुद्र में आ गिरा। रत्नों के साथ लोभी सागरदत्त सेठ भी सागर में डूब गया। इस तरह अति लोभ करने का उसको यह फल प्राप्त हुआ।

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

मुक्ति का खेल—*श्री सुभद्र मुनि* ***प्रकाशक***—*मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, के.डी.ब्लॉक, मुनि मायाराम मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली—110034* ***पृष्ठ****120* ***मूल्य***—*25 रुपये,* ***सन्*** *2002*

जैन इतिहास एवं संस्कृति को लघु नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत करने की दिशा में 'मुक्ति का खेल' पुस्तक एक सराहनीय कदम है। इसमें आठ लघु नाटक हैं- १. **संयम की राह पर**-भरत के चक्रवर्ती होने एवं बाहुबली के मुनि बनने का कथानक। २. **भगवान पार्श्वनाथ**— कमठ तापस का कथानक। ३. **अनाथ कौन है?**- अनाथी मुनि और राजा श्रेणिक का कथानक ४. **बन्धन टूट गए**— चन्दनबाला का कथानक ५. **क्षमापर्व**—चण्डप्रद्योत और उदायन राजा का कथानक ६. **मुक्ति का खेल**- अतिमुक्त मुनि का कथानक। ७. **जब ठूंठ भी फलित हो गया**—मुनि मायाराम जी के कथानक से सम्बद्ध ८. **जनहित कारण योगी धरा शरीर**—श्री रामजीलाल जी महाराज के जीवन से सम्बद्ध।

इनमें प्रथम ६ नाटक तो प्राचीन इतिहास से सम्बद्ध हैं तथा अन्तिम २ नाटक नये हैं। विद्यालयों में बालकों द्वारा इन नाटकों का सुगमता से मंचन किया जा सकता है। मुनिश्री ने इस विधा में लेखन कर बालकों को प्रोत्साहित किया है। पुस्तक में साधुओं की भूमिका को मंच पर लाना कितना व्यावहारिक होगा, यह अवश्य चिन्तनीय है।

कहें प्रभु महावीर—*श्री सुभद्र मुनि* ***प्रकाशक***— *मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, के.डी.ब्लॉक, मुनि मायाराम मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली—110034* ***पृष्ठ*** *104,* ***मूल्य*** *20 रुपये,* ***सन्*** *2002*

गति आदि पच्चीस बोलों का कुण्डलिया छन्द में यह काव्य रूपान्तरण है। कोई भी जिज्ञासु पद्य में गाकर पच्चीस बोल याद कर सकता है एवं समझ सकता है। मुनि जी का यह स्तुत्य प्रयास है। चौथे बोल का काव्य रूपांतर यहां उद्धृत है-

होती चतुर्थ बोल में, सुनो इन्द्रियाँ पाँच।
इनका सुख मिथ्या मनुज, समझ इसे तू सांच।।
समझ इसे तू सांच, तिमिर में क्यों है खोता।
श्रोत्र, चक्षु और घ्राण, रसन फिर स्पर्शन होता।।
कहें प्रभु महावीर, कि तृष्णा सत् हर लेती।
पराधीनता सदा, इन्द्रियों को दुःख देती।।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के ४६० स्वाध्यायियों द्वारा १८८ क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधना सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा विगत ५८ वर्षों से, जैन संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित ग्राम/नगरों में विद्वान्, क्रियावान्, योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायियों को भेजकर अष्ट दिवसीय पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना एवं आराधना का महान् रचनात्मक कार्य किया जा रहा है। इस संघ के वर्तमान में लगभग ८३० स्वाध्यायी सदस्य हैं, जिनमें से अधिकांश स्वाध्यायी पर्युषण के लिए इस संघ द्वारा निर्देशित क्षेत्रों में जाकर अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी ऐसे भी हैं जो व्यावहारिक जगत् में न्यायाधिपति, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट, इंजीनियर, प्रोफेसर, प्रशासनिक अधिकारी, एडवोकेट, उद्योगपति, व्यापारी, लेक्चरर, शिक्षक आदि प्रतिष्ठित पदों पर कार्यरत होते हुए भी अपनी बहुमूल्य सेवाएं संघ को प्रदान करते हैं। अनेक स्वाध्यायी स्नातक, स्नातकोत्तर, बी.एड, एल.एल.बी., पी-एच.डी. एवं एल.एल.एम. जैसी विशिष्ट उपाधियों से भी अंलकृत हैं।

इस वर्ष ०३ सितम्बर से १० सितम्बर २००२ तक पर्युषण पर्व के अवसर पर हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, राजस्थान में मेवाड़-मारवाड़, पोरवाल-पल्लीवाल आदि क्षेत्रों में विभिन्न छोटे-बड़े, दूर व निकट के १८८ क्षेत्रों में ४४६ स्वाध्यायियों ने अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

सभी क्षेत्रों में पर्युषण पर्व के अष्टदिवसों में स्वाध्यायियों द्वारा सामायिक, प्रार्थना, प्रतिक्रमण, अंतगडसूत्र वाचन-विश्लेषण, सारगर्भित व्याख्यान, कल्पसूत्र वाचन, चौपाई आदि विविध विषयों पर प्रश्नमंच, नवकार मंत्र के अखण्ड जाप, अन्त्याक्षरी, संस्कार निर्माण शिविर, अध्ययन-अध्यापन, चौबीस तीर्थंकर पहेली प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, सामायिक प्रतियोगिता आदि अनेक प्रतियेगिताएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न करवाये गये। सभी स्थानों पर युवा एवं भावी पीढ़ी को सुसंस्कारित करने हेतु धार्मिक पाठशालाएं प्रारम्भ करने, व्यसन रहित जीवन जीने तथा सामूहिक सामायिक स्वाध्याय करने की प्रबल प्रेरणा देने के साथ नये स्वाध्यायी बनाये गये। सौन्दर्य प्रसाधन, चिकित्सा, खान-पान, मनोरंजन एवं धार्मिक अन्धविश्वास आदि विविध क्षेत्रों में होने वाली हिंसा की जानकारी प्रदान करने के साथ-साथ हिंसक वस्तुओं का उपयोग नहीं करने की भी प्रेरणा की गई। अनेक स्थानों पर अजैन पुरुष व महिलाओं ने भी संवत्सरी के दिन उपवास, बेले, तेले आदि तप किये। स्वाध्यायियों से प्राप्त रिपोर्ट के अनुसार समस्त क्षेत्रों में हुए धर्मध्यान एवं तप त्याग का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

०१. सामायिक	२६४१६८	०२. संवर	३०४१२
०३. दया	३१०२	०४. एकाशन	८८७३
०५. आयम्बिल	४८५	०६. उपवास	११२४१

०७. पौषध	२३३६	०८. अष्टप्रहर पौषध	६६८
०९. बेला	५०७	१०. तेला	५४७
११. चोला	२९	१२. पचोला	४६
१३. छः	६	१४. सात	४
१५. अठाई	७४	१६. नौ	२३
१७. दस	१	१८. ग्यारह	७
१९. तेरह	१	२०. नीवीं	६
२१. पचरंगी	८	२२. धर्मचक्र	३

विदेश

०१. हांगकांग
१. श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव
२. श्री नेमीचन्द जी कर्णावट, भोपालगढ़

महाराष्ट्र क्षेत्र

०२. धरणगांव
१. श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा
२. कु. योगिता जी लुंकड़, वाकोद
३. कु. गायत्री जी वेदमूथा, नागद
४. श्रीमती प्रेमदेवी जी जैन, भीलवाड़ा

०३. फत्तेपुर
१. श्री हस्तीमल जी गोलेछा, ब्यावर
२. श्री जिनेन्द्र जी जैन, जलगांव
३. श्री नितीन जी जैन, जलगांव

०४. रालेगांव
१. श्री दीपचन्द जी बोथरा, पाचोरा
२. कु. रूपाली जी दर्डा, चिंचाला
३. कु. भारती जी वेदमूथा, नागद

०५. पहुर
१. सौ. विजयाबाई जी मल्हारा, जलगांव
२. सौ. अनिता जी लूंकड़, जलगांव
३. कु. कोमल जी कोठारी, जलगांव

०६. रत्नागिरी
१. सौ. रसीलाबाई जी बरड़िया,जलगांव
२. श्रीमती सुशीला जी भलगट, भण्डारा
३. कु. प्रिती जी चोरड़िया, पारोला

०७. वाकोद
१. श्रीमती अकलकंवर जी मोदी, जोधपुर
२. कु. निर्मला जी जीरावला, जोधपुर
३. कु. दीपिका जी सिंघवी, जोधपुर

०८. लोहारा
१. श्रीमती मोहनकंवर जी जैन, जोधपुर
२. कु. अनिता जी बांठिया,जोधपुर
३. कु. ममता जी खिंवसरा, मुकटी

०९. कजगांव
१. श्रीमती लाडदेवी जी हीरावत, जयपुर
२. श्री जिनेन्द्र जी जैन, मुम्बई
३. श्री गजराज जी जैन, मुम्बई
४. श्री पंकज जी जैन, मुम्बई

१०. खलणा
१. श्री भोपालचन्दजी सेठिया, जोधपुर
२. श्री नैनचन्द जी बाफना, जोधपुर

११. लासुर	१. श्री पुखराज जी गिड़िया, जोधपुर
	२. श्री सतीश जी कोटड़िया, जोधपुर
१२. शिरपुर	१. श्रीमती लीला जी सालेचा, जलगांव
	२. सौ. विमला जी सिंगी, धुलिया
	३. सुश्री श्वेता जी जैन, धुलिया
१३. अंबाजोगाई	१. श्री माणकचन्द जी गादिया, चालीसगांव
	२. सौ. प्रमिलाबाई जी गादिया, चालीसगांव
	३. सौ. सुधा जी आंचलिया, चालीसगांव
१४. सिल्लोड़	१. श्री हीरालाल जी मंडलेचा, फत्तेपुर
	२. श्री पुखराज जी कोठारी, लासुर
	३. कु. सपना जी दुग्गड़, मुकटी
	४. कु. मीनाक्षी जी सुराणा, जलगांव
१५. वरणगांव	१. सौ. लताबाई जी बनवट, जलगांव
	२. सौ. विमला जी चोरड़िया, जलगांव
	३. सौ. ललिता जी बोथरा, जलगांव
१६. बुरहानपुर	१. सौ. सुगनबाई जी सांड
	२. कु. दिपाली जी सांड
	३. कु. सोनाली जी दर्डा, चिंचाला
१७. मांडल	१. सौ. ज्योतिबाई जी गादिया, भुसावल
	२. कु. सोनाली जी छाजेड़, चिंचाला
	३. कु. पूजा जी गादिया, भुसावल
	४. कु. नम्रता जी गादिया, भुसावल
१८. उम्बरगांव रोड़	१. सौ. किरणबाई जी खिंवसरा, मांडल
	२. सौ. शंकुतलाबाई जी खिंवसरा, मांडल
	३. सौ. कमलाबाई जी वेदमूथा, मांडल
१९. वाकड़ी	१. श्री राजमल जी संचेती, अमलनेर
	२. श्री सुगनचन्द जी सांड, वेलदा
२०. शेन्दुर्णी	१. श्री अशोक जी पितलिया, भोपाल
	२. कु. प्रतिमा जी बनवट, जलगांव
	३. कु. निलम जी धाड़ीवाल, जलगांव
२१. शिरूड़	१. श्री मन्नालाल जी भण्डारी, जोधपुर
	२. कु. श्वेता जी ओस्तवाल, शेन्दुर्णी
	३. कु. बबिता जी दर्डा, पारोला
२२. बोरकुंड	१. श्री शान्तिलाल जी चौपड़ा, जोधपुर
	२. कु. सोनाली जी ओस्तवाल, शेन्दुर्णी
	३. कु. शिल्पा जी ओस्तवाल, शेन्दुर्णी
२३. भराड़ी	१. श्री लखपत जी भण्डारी, जोधपुर
	२. कु. अनिता जी बरड़िया, बोरखेड़ा
	३. कु. रूपाली जी बाघमार, वडाला
२४. शेंगोला	१. श्री कल्याणमलजी बाफना, भोपालगढ़

२५. फागणा	१. सौ. मधुबाला जी ओस्तवाल, नाशिक
	२. कु. चित्रा धाडीवाल, कजगांव
	३. कु. पूनम संचेती, कजगांव
२६. सौंदाणा	१. सौ. शोभाबाई जी खिंवसरा, मांडल
	२. सौ. लीलाबाई जी खिंवसरा, मांडल
२७. नागद	१. श्री मनोज जी संचेती, जलगांव
	२. श्री त्रिलोक जी जैन, जलगांव
	३. श्री देवेन्द्र जी कोठारी, तोंडापुर
२८. कटंगी	१. श्री चिरंजीलाल जी सांड, पाली
	२. श्री प्रदीप जी ललवाणी, नागौर
२९. कासारे	१. श्री कमलेश जी मेहता, जोधपुर
	२. श्री बसन्त जी बोहरा, जोधपुर
३०. पिलखोड़	१. कु. जयमाला जी अलीझाड़, शिरूड़
	२. कु. लीना जी वेदमूथा, नागद,
	३. कु. राखी जी छाजेड़, धुलिया
३१. हीरापुर	१. श्रीमती मोहनी देवीजी कच्छवाहा, जोधपुर
	२. कु. शीतल जी छल्लाणी, नेर
	३. कु. स्नेहलता जी गादिया, पीपाड़
३२. विटनेर	१. श्री कल्पेश जी सांड, पाली
	२. श्री सुनील जी बोथरा, जोधपुर
	३. श्री नरेश जी कवाड़, जोधपुर
३३. पहुरदाभा	१. श्री मनीष जी बोथरा, जोधपुर
	२. श्री पुनीत जी मूथा, पीपाड़ सिटी
	३. श्री मनोज जी जैन, पीपाड़ सिटी
३४. चांदूर रेलवे	१. सौ. ललिताबाई जी कटारिया, जलगांव
	२. सौ. सरलाजी जी कांकरिया, जलगांव
	३. कु. जयश्री जी कोठारी, जलगांव
३५. कासमपुरा	१. श्रीमती बादामबाई जी चोरड़िया, शिरपुर
	२. श्रीमती सायरबाई जी सुराणा, शिरपुर
३६. वरखेड़ी	१. सौ. चंदाबाई जी कांकलिया, जलगांव
	२. श्रीमती कमलाबाई जी बाफना, जलगांव
	३. सौ. सुशीला जी सांखला, जलगांव
३७. बांबरूड (राणिचे)	१. सौ. चंदाबाई जी धोका, जलगांव
	२. सौ. कान्ता जी जैन, जलगांव
	३. कु. मोना जी सुराणा, जलगांव
३८. हरताला	१. श्री महेन्द्र जी जीरावला, जोधपुर
	२. श्री राजेश जी चौपड़ा, जोधपुर
३९. वड़जी	१. श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा, जोधपुर
	२. श्री दीपक जी बोथरा, पीपाड़
	३. श्री निर्मल जी मूथा, पीपाड़

४०. किनगांव राजा	१. श्री ललित जी चोरड़िया, शिरपुर
	२. श्री मुकेश जी बुरड़, शिरपुर
४१. बोरखेड़ा	१. सौ. चन्द्रकला जी बाफना, निमगुल
	२. कु. शुभा जी खिंवसरा, पाचोरा
४२. देऊर बुद्रक	१. श्री अलंकार जी मुणोत, जलगांव
	२. श्री रिन्कु जी जैन, जलगांव
	३. श्री राजेन्द्र जी बोथरा, शिरपुर
४३. केलसी	१. श्री रमेश जी भंसाली, फत्तेपुर
	२. श्री विजय जी रांका, फत्तेपुर
४४. तलेगांव	१. सौ. लीलाबाई जी कोटेचा, जलगांव
	२. सौ. शकुन्तला जी कटारिया, जलगांव
	३. कु. मोनाली जी छाजेड़, जलगांव
४५. महाड़	१. श्री अतुल जी मुणोत, जलगांव
	२. श्री विनोद जी जैन, जलगांव
४६. जायखेड़ा	१. श्री चिमनलाल जी बोरा, न्यायडोंगरी
	२. श्री मनोज जी जैन, जलगांव
	३. श्री आनन्द जी जैन, जलगांव
४७. उम्बरखेड़ा	१. श्री सुगनचन्द जी संचेती, चालीसगांव
४८. इच्छापुर	१. सौ. विमलाबाई जी कांकरिया, जलगांव
	२. कु. दीपाली जी दर्डा, पारोला
	३. कु. राजश्री मुथा, फागणा
४९. परतवाड़ा	१. श्री नेमीचन्द जी देसर्डा, जलगांव
	२. श्री चैनकरण जी कटारिया, जलगांव
	३. श्री रितेश जी सुराणा, जलगांव
५०. वाघली	१. सौ. मंगलाबाई जी बागरेचा, लासुर
	२. श्री दिलीप जी बाघमार, वडाला
	३. कु. निर्मला जी लुणावत, पीपाड़
	४. कु. विजयलक्ष्मी जी लुणावत, पीपाड
५१. वडाला	१. श्रीमती निर्मला जी दुधेड़िया, जलगांव
	२. श्री निशांत जी जैन, जलगांव
५२. चिंचाला	१. श्री तेजराज जी मूथा, पीपाड़
	२. श्री मनोज जी मूथा, पीपाड़
	३. श्री मनोज जी बोहरा, पीपाड़
५३. वेलदा	१. कु. मनीषा जी छाजेड़, जोधपुर
	२. श्रीमती सुशीला जी सुराणा, ब्यावर

मारवाड़ क्षेत्र

५४. जालोर	१. श्री धर्मचन्द जी जैन, जोधपुर
	२. श्री रमेश जी भण्डारी, जोधपुर
५५. रायपुर	१. श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर
	२. श्री पदमचन्द जी लुणावत, पीपाड़

५६. अजीत	१. श्री मिलापचन्द जी मेहता, जोधपुर
	२. श्री नरेश जी जैन, भोपालगढ़
५७. आसोप	१. श्री शान्तिलाल जी सिंघवी, आसोप
	२. श्री कानराज जी सुराणा, आसोप
५८. आगोलाई	१. श्री जवरीमल जी छाजेड़, जोधपुर
	२. श्री सम्पतराज जी बोथरा, जोधपुर
५९. पांचला सिद्धा	१. श्री करणराज मेहता, जोधपुर

मेवाड़ क्षेत्र

६०. खेरोदा	१. श्री सम्पतराज जी डोसी, जोधपुर
	२. कु. रेखा जी जैन, सुरपुर
	३. कु. रंजना जी जैन, आरणी
६१. दरीबा	१. श्री मानसिंह जी खारीवाल, सहाड़ा
	२. कु. दिलखुश जी जैन, सुरपुर
	३. कु. नीतू चण्डालिया, भादसोड़ा
६२. जावरमाइन्स	१. श्री सुन्दरलाल जी सालेचा, सागवाड़ा
	२. श्री सुभाष जी लोढ़ा, महागढ़
६३. आरणी	१. श्री शांतिलाल जी गांधी, सिंगोली
	२. कु. सीमा जी गांधी, सिंगोली
६४. भानसोल गडवाड़ा	१. श्री कन्हैयालाल जी फाफरिया, नीमच
	२. श्री हरकूलाल जी गांधी, सिंगोली
६५. बेगूं	१. श्रीमती मोहनी देवी जैन, आलनपुर
	२. श्रीमती हर्ष जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
	३. कु. नीतू जी जैन, सवाईमाधोपुर
६६. सिंगोली	१. श्री दिलीप कुमार जी नागौरी, बम्बोरा
	२. श्री हीरालाल जी खिंदावत, मोरवनबांध
	३. कु. सुलसा जी नागौरी, सिंगोली
६७. वाड़ी	१. श्री मानमल जी लसोड़, प्रतापगढ़
	२. श्री ललितकुमार जी भण्डारी, बराड़ा
६८. नेवरिया	१. श्री प्रेमबाबू जी जैन, बजरिया
	२. श्री धर्मेन्द्र कुमार जी जैन, आ.म.स.माधोपुर
६९. सुरपुर	१. श्री जगदीशप्रसाद जी जैन,आ.म.स.माधोपुर
	२. श्री अमोलकचन्द जी जैन, आ.म.स.माधोपुर
७०. पारसोली	१. श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन,आ.म.स.माधोपुर
	२. कु. किरण जी जैन, अलीगढ़
	३. कु. मीनाक्षी जी जैन, आ.म.स.माधोपुर
७१. कांस्या कला	१. श्री रामदयाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री सौभागमल जी जैन, कुस्तला
७२. नवाणिया	१. श्री सागरमल जी लोढ़ा, महागढ़
	२. श्री राजेश जी नाहर, पहुंना
७३. कुकड़ेश्वर	१. डॉ. पदमचन्द जी मुणोत, जयपुर

	२. श्री तेजराज जी भण्डारी, जयपुर
	३. श्री हनुमानप्रसाद जी जैन, जयपुर
७४. अरनोदा	१. श्री शान्तिलाल जी बापना, नेवरिया
	२. श्री विमल कुमार जी जैन, इन्दौर
	३. श्री मदनलाल जी बापना, नेवरिया
७५. छोटा भटवाड़ा	१. श्री ऋषभकुमार जी जैन, पीपाड़
	२. श्री अरिहंत जी मेहता, पीपाड़
	३. श्री भरत जी जैन, पीपाड़
७६. मोही	१. श्री दयालालजी जैन, छांवला
	२. श्री शंकरलाल जी हींगड़, मोही
७७. महागढ़	१. श्री समरथमल जी लोढ़ा, महागढ़
	२. श्री सुरेशचन्द्र जी जैन, महागढ़
७८. छोटी कसरावद	१. श्रीमती ममता जी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्रीमती स्नेहलता जी जैन,छोटी कसरावद
	३. सुश्री जयश्री जी जैन, छोटी कसरावद

जयपुर क्षेत्र

७९. महारानी फार्म, जयपुर	१. श्री जम्बूकुमार जी जैन, जयपुर
	२. श्री अशोक जी हरसाना वाले, जयपुर
	३. श्री सुशील कुमार जी जैन, जयपुर
८०. दूदू	१. श्री रिखबलाल जी मारू, कपासन
	२. श्रीमती कमला देवी जी मारू, कपासन
८१. चाकसू	१. श्री विनोद कुमार जी जैन, चाकसू
८२. महावीर नगर, जयपुर	१. श्री अमित जी बोहरा, जयपुर

दक्षिण क्षेत्र

८३. विजयवाड़ा	१. श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर
	२. श्रीमती कमला जी मेहता,जोधपुर
८४. तिरूवनामलै	१. श्री चंचलमल जी चोरड़िया, जोधपुर
	२. श्रीमती रतनबाई जी चोरड़िया, जोधपुर
८५. तिन्डीवनम	१. श्री दुलीचन्द जी बोहरा, चेन्नई
	२. श्री चम्पालाल जी बोथरा, चेन्नई
	३. श्री पंकज जी जैन, भीलवाड़ा
८६. आरकाट	१. श्रीमती शान्ता जी मोदी, जयपुर
	२. श्री महेश जी जैन, जयपुर
	३. विरक्ता कु.नूतन जी जैन, गंगापुर सिटी
८७. कल्लकुरचि	१. श्री ज्ञानचन्द जी बाघमार, चेन्नई
	२. श्री निलमचन्द जी बाघमार, चेन्नई
८८. पम्मल	१. श्री किशोर जी छाजेड़, हैदराबाद
	२. श्रीमती मीना जी सालेचा, हैदराबाद
	३. विरक्ता कु.बबीता जी गुगलिया, हैदराबाद
८९. मनारगुड़ी	१. श्री महावीरचन्द जी बाघमार, चेन्नई

	२. श्री सुनील जी सांखला, चेन्नई
९०. कोलींडम	१. श्री कमलेश जी बोहरा, चेन्नई
	२. श्री निर्मल कुमार जी बोहरा, चेन्नई
९१. पल्लीपेट	१. श्री महावीर चन्द जी रांका, पहुंना
	२. श्री मोहनलाल जी बाफना, चेन्नई
९२. पटाभिराम	१. श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया
	२. श्री मानमल जी सुराणा, अयनावरम
९३. पाड़ी	१. श्री सुमेरमल जी बाघमार, चेन्नई
	२. श्री हेमन्त जी नाहर, पहुंना
९४. कालाडीपेट	१. श्रीमती कंचन बाई जी मुथा, भोपालगढ़
	२. विरक्ता कु. सीमा जी कांकरिया, जलगांव
९५. रेडहिल्स	१. श्री सुरेश कुमार जी हींगड़, पहुंना
	२. श्री विमलचन्द जी मुथा, पल्लीपेट
९६. गुडवान्चेरी	१. श्री लल्लूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. विरक्ता बहन कु. माला जी जैन, गंगापुर
९७. नंगनल्लूर	१. श्री विनोद जी छल्लाणी, सूरत
	२. श्री मनोहरमल जी कांकरिया, चेन्नई
	३. विरक्ता कु. स्नेहलता चंगेरिया, अजमेर
९८. कुन्रातुर	१. श्री देवेन्द्र जी सिंघवी, बैंगलोर
	२. श्री संजय जी गुगलिया, बैंगलोर
९९. तीरूवामियूर	१. श्रीमती सूर्यकान्ता जी बाघमार, चेन्नई
	२. श्रीमती मंजू जी बांठिया, चेन्नई
१००. शेनाय नगर	१. श्री महावीर चन्द जी बाफना, चेन्नई
पं. बंगाल	
१०१. कोलकाता	१. श्री नवरतनमल जी डोसी, जोधपुर
	२. श्री सुनील जी चौपड़ा, जोधपुर
	३. श्री सुगनचन्द जी छाजेड़, जोधपुर
उत्तरप्रदेश	
१०२. कानपुर	१. श्री फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर
	२. श्री महावीर जी मकाणा, ब्यावर
१०३. लखनऊ	१. डॉ. स्मृतिस्नेह जी जैन, नीमच
	२. श्रीमती कुसुम जी जैन, नीमच
	३. श्रीमती रतन जी जैन, नीमच
आसाम	
१०४. गुवाहाटी	१. श्री राजेन्द्र जी चोरड़िया, इन्दौर
	२. श्री अभिषेक जी नाहर, इन्दौर
पंजाब क्षेत्र	
१०५. भीखी	१. श्री सुमतिबाबू जी जैन, मण्डी डबवाली
	२. श्री अनुपम जी जैन, जयपुर

१०६. मोडमण्डी	१. श्री विरेन्द्र जी जैन, जोधपुर
	२. सौ. मीनाक्षी जी जैन, जोधपुर
	३. श्री निलेश जी जैन, सुमेरगंजमण्डी

हरियाणा क्षेत्र

१०७.पदमपुर	१. श्री राजमल जी मेहता, डूंगला
	२. श्री सतीश जी जैन, सवाईमाधोपुर
१०८.मण्डी डबवाली	१. श्री राजेन्द्र जी पटवा, जयपुर
	२. श्री ऋषभ जी जैन, जयपुर
१०९.गुड़गाँव	१. श्री पदमचन्द जी जैन, दिल्ली
	२. श्री राजकुमार जी जैन, दिल्ली
	३. डॉ. अजित कुमार जी जैन, दिल्ली
११०. भिवानी	१. श्री भानामल जी जैन, सोनीपत
	२. श्री सुमेरचन्द जी जैन, सोनीपत
१११. रोड़ी	१. श्री विनोद जी जैन, जयपुर
	२. श्री अनुपम जी जैन, जयपुर
११२. जाखल	१. श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, इन्दौर
	२. श्री सुनील जी छिंगावत, इन्दौर
	३. श्रीमती प्रमिला जी छिंगावत, इन्दौर

मध्यप्रदेश क्षेत्र

११३. बैतूल	१. श्री प्रकाशमल जी चोरड़िया, चेन्नई
	२. श्री लक्ष्मीचन्द जी छाजेड़, समदड़ी
११४. धमतरी	१. श्री प्रकाश जी सालेचा, जोधपुर
	२. श्री संदीप जी कोठारी, पीपाड़
११५. सैंधवा	१. श्री लक्ष्मीचन्द जी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्री अनिल जी गोलेछा, करही
११६. आकोदिया मण्डी	१. श्री बंशीलाल जी जैन, अलीगढ़
	२. श्री जशकरण जी जैन, अलीगढ़
	३. श्री पवन कुमार जी जैन, अलीगढ़
११७. चारूवाँ	१. श्री सौभागमल जी जैन, बजरिया
	२. श्री पदमचन्द जी जैन, बजरिया
११८. बेरछा	१. श्री बालचंदजी पितलिया, पारसोली
	२. श्री हंसराज जी पितलिया,पारसोली
११९. बाघली	१. श्री शंकरलाल जी लोढ़ा, भादसोड़ा
	२. श्री मनोहरलाल जी पोखरणा, भादसोड़ा
१२०. हाटपीपल्या	१. श्री अनिल सौभागमलजी जैन, बजरिया
	२. श्री अनिल गम्भीरमलजी जैन, बजरिया
	३. श्री पदम जी जैन, बजरिया
१२१. श्योपुरकलां	१. श्री शान्ताप्रसाद जी जैन, बजरिया
	२. श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, उनियारा
	३. श्री नरेश जी जैन, श्योपुरकलां

१२२.शुजालपुर मण्डी	१. श्री मदनलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री कुशलचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
१२३.बागोद	१. श्री पारसचन्द जी जैन, नैनवां
	२. श्री ताराचन्द जी जैन, देई
१२४.छोटी कसरावद	१. श्रीमती ममता जी जैन, छोटी कसरावद
	२. श्रीमती स्नेहलताजी जैन, छोटी कसरावद
	३. कु. जयश्री जी जैन, छोटी कसरावद
१२५.अंजड़	१. श्री मांगीलाल जी कोठारी, पारसोली
	२. श्री मोहनलाल जी पितलिया, पारसोली
१२६.बरेली	१. श्री नगीनचन्द जी डाकोलिया,
	२. श्री चंदू जी कवाड़, कतरगांव
१२७.उन्हैल	१. श्री राजेन्द्र जी ओरा, इन्दौर
	२. श्रीमती शांता जी चोरड़िया, इन्दौर
१२८.जबलपुर	१. श्रीमती शकुन्तला जी तातेड़, बैतुल
	२. श्री राहुल जी तातेड़, इन्दौर
१२९.हातोद	१. श्री अमृतलाल जी भटेवरा, इन्दौर
	२. श्रीमती सुभद्रा जी बाबेल, मन्दसौर
	३. श्रीमती निर्मला जी मुगदिया, इन्दौर
१३०.बड़वानी	१. श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा, इन्दौर
	२. श्री सुभाष जी पावेचा, इन्दौर
	३. श्री महेन्द्र जी भण्डारी, इन्दौर
१३१.इच्छावर	१. श्री राजेश जी जैन, बदनावर
	२. श्री तेजपाल जी कांकलिया, खरगौन
१३२.गरोठ	१. श्री मितेश जी बोहरा, इन्दौर
	२. श्री विकास जी बाफना, इन्दौर
	३. श्री शालीभद्र जी चपलोद, उज्जैन
१३३.पिपल्या बुजुर्ग	१. श्रीमती विमला देवी जी हिरण, बड़वाह
	२. श्रीमती बालाबाई जी भण्डारी, नान्द्रा
१३४.गौतमपुरा	१. श्रीमती सुशीलाबहन बाफना,
	२. श्रीमती निर्मला बहन भटेवरा
१३५.मुणग	१. श्री शिखर जी छाजेड़, इन्दौर
	२. श्री विमल जी तातेड़, इन्दौर
१३६.सनावद	१. श्रीमती शान्तादेवी जी मुणोत, इन्दौर
	२. कु. वर्षा जी मुणोत, इन्दौर
१३७.देवकर	१. श्री महेश जी नाहटा, नगरी
	२. कु. माया जी लुणावत, दुर्ग

पोरवाल क्षेत्र

१३८.बजरिया	१. श्री दिलरूपचन्द जी भण्डारी, जोधपुर
	२. श्री नरपतराज जी भण्डारी, जोधपुर
	३. श्री राजेन्द्र जी जैन कुम्भट, जोधपुर

१३६.सवाईमाधोपुर	१. श्री सुमतिचन्द जी मेहता, पीपाड़
	२. श्री प्रदीप जी धारीवाल, पाली
१४०.अलीगढ़	१. श्री जशकरण जी डागा, टोंक
	२. श्री ताराचन्द जी जैन, देवली
१४१.आलनपुर	१. श्री पदमचन्द जी अग्रवाल, जयपुर
	२. श्री ज्ञानचन्द जी खारेड़, जयपुर
	३. श्री जितेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर
१४२.चोरू	१. श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली
१४३.कुण्डेरा	१. श्री बाबूलाल जी जैन, गोपालगढ़
	२. श्री प्रेमचन्द जी जैन, भरतपुर
१४४.पचाला	१. श्री हुकमचन्द जी जैन, हिण्डौन
	२. श्री धर्मचन्द जी जैन, हिण्डौन
१४५.उनियारा	१. श्री सुरेशचन्द जी जैन, खेरली
	२. श्री बाबूलाल जी जैन, खेरली
१४६.फलोदी क्वारी	१. श्री धर्मचन्द जी जैन, खेरली
	२. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, खेरली
१४७.बाबई	१. श्री बृजमोहन जी जैन, लहचोड़ा
	२. श्री मगनचन्द जी जैन, फाजिलाबाद
१४८.आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर	१. श्री लड्डूलाल जी जैन, बगावदा
	२. श्री रमेशचन्द जी लोहिया,आ.म.स.माधोपुर
१४९.देवली	१. श्री रामप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाड़ा
	२. श्री महावीर प्रसादजी जैन,चौथका बरवाड़ा
१५०.दूनी	१. श्री बाबूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर
१५१.देई	१. श्री गणपतलाल जी जैन, बजरिया
-	२. श्री महावीर प्रसाद जी जैन, बजरिया
१५२.इन्द्रगढ़	१. श्रीमती चन्द्रप्रभा जी जैन, उनियारा
	२. कु. अंजू जी जैन, उनियारा
१५३.मांगरोल	१. श्री गोपीकृष्ण जी हाडा, सवाईमाधोपुर
	२. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा
	३. श्री जितेन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर
१५४.कुस्तला	१. श्रीमती विमला जी जैन, बजरिया
	२. कु. अनिता जी जैन, नसियां गंगापुर
	३. श्रीमती इन्द्रा जी जैन, कुस्तला
१५५.सुमेरगंजमण्डी	१. श्री दिलीप कुमार जी जैन, जयपुर
	२. श्रीमती प्रेमबाई जी नवलखा, जयपुर
१५६.समीधी	१. श्री कृष्णमोहन जी जैन, हिण्डौन
	२. श्री बाबूलाल जी जैन, हिण्डौन
१५७.डांगरवाड़ा	१. श्री लड्डूलाल जी जैन, डांगरवाड़ा
	२. श्री महावीर प्रसाद जी जैन, डांगरवाड़ा

१५८.नैनवाँ	१. श्री पुखराज जी जैन, नैनवाँ

पल्लीवाल क्षेत्र

१५९.हिण्डौन सिटी	१. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री नितिन जी जैन, कुस्तला
	३. श्री हितेष जी जैन, कुस्तला
१६०.भरतपुर	१. श्री राजेन्द्र प्रसाद जी जैन,आ.म.स.माधोपुर
	२. कु. रेणु जी जैन, आ.म.स.माधोपुर
१६१.खेरलीगंज	१. श्री धर्मचन्दजी जैन'श्यामपुरा'सवाईमाधोपुर
	२. श्री धर्मचन्द जी जैन'करेला',सवाईमाधोपुर
१६२.वर्द्धमान नगर, हिण्डौन	१. श्रीमती कान्तीबाई जी जैन, आलनपुर
	२. श्रीमती रूपा बाई जी जैन, बजरिया
	३. श्रीमती सन्तरा जी जैन, सवाईमाधोपुर
१६३.अलवर	१. श्री नाथुलाल जी गांधी, सिंगोली
	२. श्री प्रकाशचन्द जी नागौरी, सिंगोली
१६४.फाजिलाबाद	१. श्री रमनलाल जी जैन, मण्डावर
१६५.बौंण	१. श्री विमल कुमार जी जैन, नदबई
	२. कु. भारती जी जैन, नदबई
१६६.परबैणी	१. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, नदबई
	२. श्रीमती सुशीला जी जैन, नदबई
१६७.रसीदपुर	१. श्री गूजरमल जी जैन, रसीदपुर
	२. श्री श्रीपाल जी जैन, रसीदपुर
१६८.करौली	१. श्री महावीर प्रसाद जी जैन, गंगापुर सिटी
	२. श्री चन्द्रप्रकाश जी जैन, करौली
१६९.बरगमा	१. श्री उच्छबराय जी जैन, अलीगढ़
	२. श्री महावीर प्रसाद जी जैन,कुण्डेरा
१७०.नदबई	१. श्री राकेश जी जैन, सुमेरगजमण्डी
	२. श्री जगदीशप्रसादजी जैन, सुमेरगजमण्डी
१७१.डेहरामोड़	१. श्री जवाहरलाल जी जैन, पहरसर
१७२.पहरसर	१. श्री गिरधारीलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री लड्डूलाल जी जैन, चोरू
	३. कु. मनीषा जी जैन, पहरसर
१७३.खोह	१. श्री मुकेश जी जैन, सवाईमाधोपुर
	२. श्री मनोज जी जैन, सवाईमाधोपुर
१७४.मौजपुर	१. श्रीमती मिथलेश जी जैन, खोह
	२. श्रीमती आशा जी जैन, खोह
१७५.मण्डावर	१. श्री विनयचन्द जी जैन, आलनपुर
	२. श्री प्रेमप्रकाश जी जैन, सवाईमाधोपुर
१७६.हरसाना	१. श्री कजोड़मल जी जैन, आलनपुर
	२. श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर
१७७.शेरपुर	१. श्री छगनचद जी जैन, खोह

	२. श्री राजकुमार जी जैन, मण्डावर
१७८.गढी सवाईराम	१. श्री मदनमोहन जी जैन, मण्डावर
१७९.गोपालगढ़, भरतपुर	१. श्री पारसचन्द जी जैन, गोपालगढ़
	२. श्री बाबूलाल जी जैन, गोपालगढ़
	३. श्री सुधीर कुमार जी जैन, गोपालगढ़
१८०.सहाड़ी	१. श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, सहाड़ी
१८१.वैर	१. श्री सुमेरचन्द जी जैन, वैर
	२. श्री सुरेशचन्द जी जैन, वैर

जिन क्षेत्रों की रिपोर्ट प्राप्त नहीं हुई है उनकी सूची

1. पहुंना 2. लहसोड़ा 3. सूरवाल 4. बडेर 5. बिचगांवा 6. बयाना 7. डहरा

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त पर्युषण सहायतार्थ राशि

हांगकांग	६१०००.००	गुड़गांव	५१००.००
कानपुर	५१००.००	कोलकाता	५००१.००
तिरूवन्नामलै	४१०१.००	आरकाट	३५००.००
पल्लीपेट	३५००.००	गुडवान्चेरी	३१००.००
बैतुल	२५०१.००	पम्मल	२५०१.००
नंगनल्लुर	२५००.००	मन्नारगुड़ी	२५००.००
विजयवाड़ा	२५००.००	धमतरी	२१००.००
लखनऊ	२१००.००	रेडहिल्स	२१००.००
कटंगी	२१००.००	पाड़ी	२१००.००
शुजालपुर मण्डी	१५००.००	दरीबा	११११.००
अलीगढ (टोंक)	११११.००	बागोद	११०१.००
जावरमाइन्स	११००.००	कोलीडम	११००.००
कोरबा	११००.००	अलवर	११००.००
मण्डी डबवाली	११००.००	रोड़ी	११००.००
कुकड़ेश्वर	६५१.००	चारूवा	७०१.००
पहुरदाभा	७०१.००	सिंगोली	७००.००
वाघली	६००.००	बागली	६००.००
पहुंना	६००.००	लासुर	५०१.००
इच्छापुर	५०१.००	आगोलाई	५००.००
कलईकुरची	५००.००	मांगरोल	५००.००
भराड़ी	५००.००	खेरोदा	५००.००
बेरछा	५००.००	पारसोली	५००.००
नेवरिया	५००.००	दुणी	३०१.००
वड़जी	३०१.००	छोटा भटवाड़ा	३००.००
लोहारा	२५१.००	मौहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर	२५१.००
आरणी	२५०.००	उमराणा	२००.००
आलनपुर	२०१.००	भानसोल गढवाड़ा	२०१.००

पचाला	१५१.००	कुण्डेरा	१००.००
		कुल योग	*१६७१८९.००*

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ, जलगांव को प्राप्त पर्युषण सहायता

रत्नागिरी	३५००.००	महाड़	३५००.००
उम्बरगांव रोड़	२१००.००	वाकोद	१५०१.००
केलसी	१५००.००	अम्बाजोगाई	१५००.००
धरणगांव	११११.००	बोरकुण्ड	७०१.००
मांडल	५०१.००	पिलखोड़	५०१.००
कासमपुरा	५०१.००	वरखेड़ी	५०१.००
सिल्लोड़	५०१.००	तलेगांव	५०१.००
किनगांव राजा	५०१.००	शिरपुर	५०१.००
वरणगांव	५०१.००	चांदुर रेलवे	५०१.००
लोहारा	४५३.००	नागद	४०२.००
सौंदाणा	४०१.००	शेन्दुर्णी	३५१.००
वाकड़ी	३५१.००	चिंचाला	३०१.००
फागणा	३००.००	बोरखेड़ा	२५१.००
बांबरूड राणिचे	२५१.००	वडाला	२०१.००
देउर बुद्रक	२०१.००		
		कुल योग	*२३८८६.००*

स्वाध्याय संघ शाखा बजरिया को प्राप्त पर्युषण सहायता

श्योपुरकलां	६५१.००	देई	५०१.००
सुरपुर	२५१.००	पहरसर	२०१.००
कुस्तला	१५१.००		
		कुल योग	*१७५५.००*

अन्त में हम उन सभी क्षेत्रों के श्रीसंघों के पदाधिकारियों व सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस संघ को सेवा का सुअवसर प्रदान किया। साथ ही उन स्वाध्यायी भाई-बहनों का भी हम हृदय से आभार एवं धन्यवाद प्रकट करते हैं, जिन्होंने इस संघ के निर्देशानुसार पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में बाहर पधारकर अपना अमूल्य समय जिनशासन की सेवा में प्रदान किया।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

स्वाध्याय संघ की कार्यशाला १२ व १३ नवम्बर को मुम्बई में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा १२ एवं १३ नवम्बर २००२ को बालकेश्वर मुम्बई में आयोज्य कार्यशाला में स्वाध्याय संघ, जोधपुर की विभिन्न शाखाओं के संयोजक, प्रचारक, विशिष्ट कार्यकर्त्ता, विशिष्ट स्वाध्यायी और अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के विशिष्ट पदाधिकारीगण आमन्त्रित हैं।

कार्यशाला के पूर्व दिनांक ८.११.२००२ से १२.११.२००२ तक स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी बालकेश्वर, मुम्बई में किया जा रहा है।

संघ-समाचार

रत्नवंशीय चातुर्मास धर्मसाधना-आराधना के साथ समापन की ओर

बालकेश्वर—मुम्बई

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ का बालकेश्वर-मुम्बई चातुर्मास ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के साथ युवकों में जागृति की दृष्टि से अपूर्व उल्लास के साथ चल रहा है। आचार्यप्रवर आदि संत-रत्नों की कठोर संयम-साधना, अप्रमत्तता और शुद्ध साध्वाचार पालन की सजगता से मुम्बई महानगर के आबाल वृद्ध श्रावक-श्राविकाओं में धर्म के प्रति दृढ़ आस्था का संचार हो रहा है। जिनवाणी श्रवण करने और धर्म के मर्म को समझने का सुनहरा अवसर पाकर मुम्बईवासी अत्यन्त हर्षित हैं। सामायिक, स्वाध्याय निर्व्यसनता की प्रभावी प्रेरणा से युवकों में धर्म के प्रति लगाव और जुड़ाव का संचार होना चातुर्मास की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में सदा याद रहेगा। एक दर्जन मासखमण और सैकड़ों अठाइयों के साथ दया-संवर, उपवास-पौषध, पचरंगियों और धर्मचक्रों के सफल आयोजन साधना-आराधना के अनुपम उदाहरण के रूप में मुम्बईवासियों को सदा प्रेरित करेंगे। बालकेश्वर चातुर्मास में धर्मस्थान की मर्यादा अक्षुण्ण रखने के नियमित अभ्यास से धर्मस्थान की गरिमा उजागर हुई है तथा श्रावकों ने एतत्संबंधी प्रेरणा ग्रहण की है। करणीय कार्य सामायिक, प्रतिक्रमण, दया-संवर विधि एवं उपयोगपूर्वक करने के प्रति आचार्यप्रवर आदि संतों की प्रेरणा का अनुकूल प्रभाव परिलक्षित होना शुभसंकेत है।

बालकेश्वर श्री संघ सहित मुम्बई महानगर के श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा-भक्ति और सेवाभावना के सुन्दर रूप के साथ परस्पर प्रेम-मैत्री सहयोग की शुभ भावना आचार्यप्रवर के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश से उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है, जो सराहनीय है। आगत श्री संघों एवं श्रद्धालुओं के लिए आवास-भोजनादि की व्यवस्था में श्रावकों का सहयोग अनुकरणीय है। मुम्बई महानगर में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभा में देशभर से पधारे सुज्ञ श्रावकों ने संघहित चिन्तन की दृष्टि से सार्थक निर्णय कर पहल की है, मुम्बई में सम्पन्न बैठकें संघ की गौरव-गरिमा के लिए महत्त्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती हैं।

होलनांथा

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., श्री मंगलमुनि जी म.सा., श्री योगेशमुनि जी म.सा. ठाणा ३ का होलनांथा चातुर्मास धर्मध्यान के ठाट के साथ गतिमान है। गांव का शान्त-सुरम्य वातावरण संतों की साधना के लिए अनुकूल है

वहीं श्रावक-श्राविकाओं की साधना-आराधना के प्रति शुभ भावना से वहां त्याग-तप का अपूर्व उल्लास देखने को मिला। सामायिक, स्वाध्याय, ध्यान, मौन, दया-संवर, उपवास-पौषध, जप-तप के नित्यप्रति प्रत्याख्यानों के साथ होलनांथा में बड़ी तपश्चर्याओं में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह अद्वितीय कहा जा सकता है। उपाध्यायप्रवर जीवन सुधार की सतत और प्रभावी प्रेरणा करते हैं। होलनांथा में इस चातुर्मास में आदर्श संथारे का सुन्दर रूप पहले हुए दो संथारों के साथ समाधि-मरण के अनुपम उदाहरण कहे जा सकते हैं। होलनांथा के स्वावलम्बी श्रावक-श्राविकाओं की संत-सेवा ही नहीं, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का सुन्दर रूप देखकर आगत श्री संघ एवं श्रद्धालु आश्चर्यचकित हैं कि बहिनें व्यवस्था के कार्यों में इतनी सजग हैं कि सैकड़ों लोगों की भोजन-नाश्ते की व्यवस्था पूर्ण आत्मीयता के साथ स्वयं होकर निष्पादित करने में सभी श्राविकाओं का सहयोग प्रेरणादायी है। बालक-बालिकाओं, युवक-युवतियों और जैनेतर जन समुदाय की रुचि व भावना से ज्ञान-ध्यान और त्याग-तप का सुन्दर रूप देखकर आगत श्रद्धालु होलनांथा से सेवा धर्म की शिक्षा ग्रहण कर होलनांथा के आदर्श चातुर्मास की सर्वत्र सौरभ फैला रहे हैं।

पालासनी

जोधपुर जिलान्तर्गत पालासनी गांव में मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा २ का चातुर्मास गांव में व्यसन त्याग की दृष्टि से सदा याद किया जायेगा। मधुर व्याख्यानी मुनिश्री की प्रेरणा से सभी जातियों के लोग न केवल जिनवाणी का पान करते हैं, बल्कि त्याग-तप में सक्रिय भागीदारी प्रदर्शित कर चातुर्मास को दीप्तिमान बना रहे हैं। जाट, माली आदि जातियों के लोग पर्युषण के पश्चात् भी तपस्या में उत्साहपूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। रत्नवंशीय संतों का मारवाड़ का एक मात्र चातुर्मास होने से समीपवर्ती क्षेत्रों के श्रद्धालु पालासनी पहुंचकर सत्संग सेवा और संत-समागम का लाभ प्राप्त करते हुए व्रत-नियमों में आगे बढ़ रहे हैं। पालासनी गांव की आत्मीयता के कारण सभी व्यवस्थाएँ सुचारू रूप से चल रही हैं।

महासती मण्डलों के चातुर्मास में अपूर्व उल्लास

जोधपुर में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवरजी म.सा. आदि ठाणा ५ का पावटा, सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा ५ का घोड़ों का चौक एवं शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा ४ का नेहरूपार्क चातुर्मास ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना की दृष्टि से अपूर्व उल्लास के साथ गतिमान है। सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का धनेरी चातुर्मास, शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ का भोपालगढ़ चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का तोंडापुर चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ का अहमदाबाद चातुर्मास, विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ३ का ताहाराबाद चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ का मेड़तासिटी

चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का मुकटी चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा ३ का गंगापुर सिटी चातुर्मास, व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ का जरखोदा चातुर्मास और व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ का लासूर स्टेशन चातुर्मास संघ की गौरव-गरिमा के अनुरूप ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्माराधन की दृष्टि से उमंग-उल्लास के साथ गतिमान है।

महाराष्ट्र श्रावक सम्मेलन

संघ स्तर पर महाराष्ट्र के विभिन्न ग्राम-नगरों के श्रावकों का परस्पर परिचय बढ़े, एक दूसरा-एक दूसरे के निकट आ सके और संघ-सेवा में साथ मिलकर काम करने की भावना पुष्ट हो इस उद्देश्य से महाराष्ट्र श्रावक सम्मेलन १० नवम्बर २००२ को बालकेश्वर मुम्बई में रखा गया है। यहां पधारने पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि संत-वृन्द के दर्शनों का भी लाभ मिल सकेगा।

–अरूण मेहता, महामंत्री

सूचना

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर द्वारा प्रकाशित नया साहित्य निम्नानुसार है–

1. गजेन्द्र व्याख्यानमाला, भाग 5	15 रुपये
2. गजेन्द्र व्याख्यानमाला, भाग 6	15 रुपये
3. गजेन्द्र व्याख्यानमाला, भाग 7	15 रुपये
4. हीरा प्रवचन–पीयूष, भाग 1	15 रुपये
5. शास्त्र स्वाध्याय माला(अनेक आगमों का मूलपाठ)	15 रुपये
6. सूखविपाक सूत्र (हिन्दी अनुवाद एवं विवेचन)	10 रुपये
7. ज्ञातासूत्र की कथाएँ	5 रुपये
8. कषाय–विजय	2 रुपये
9. स्वाध्याय गीतिका	15 रुपये
10.नमो गणि–गजेन्द्राय	20 रुपये
11.जैनागम के स्तोक रत्न	10 रुपये
12.चौदह नियम	4 रुपये
13.अहिंसा निउणा दिट्ठा	40रुपये
14.आहार संयम और रात्रि–भोजन–त्याग	4 रुपये

पुस्तकों का मूल्य अल्प है। डाक व्यय भेजकर पुस्तकें उपर्युक्त पते से मंगवायी जा सकती हैं।

–प्रकाशचन्द डागा, मंत्री,
सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी बैठक दिनांक १३.१०.२००२ को सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की कार्यकारिणी की बैठक आश्विन कृष्णा अष्टमी, रविवार, दिनांक १३ अक्टूबर २००२ को मध्याह्न १ बजे राज निकेतन, आठवां माला, मलबार हिल, शाहदरी गेस्ट हाउस के सामने, रिज्ज रोड़, मुम्बई में संघाध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना की अध्यक्षता में हुई, जिसमें संघ संरक्षकगण, शासन सेवा समिति के सदस्यगण, संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित महानुभावों ने भाग लिया।

अध्यक्ष महोदय के निर्देश पर संघ महामंत्री ने गत बैठक की कार्यवाही का पठन किया, जिसका उपस्थित सदस्यों ने सर्वानुमति से अनुमोदन कर उसकी पुष्टि की। फिर वर्ष २००१-२००२ के आय-व्यय के अनुमोदन के साथ वर्ष २००२-२००३ का प्रस्तावित बजट स्वीकार कर साधारण सभा के अनुमोदनार्थ रखने का निर्णय हुआ।

महामंत्री ने संघ की अनेकानेक प्रवृत्तियों के साथ स्वाध्याय संघ और आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की प्रवृत्ति पर विशेष रूप से बल देते हुए कहा कि इन प्रवृत्तियों के विस्तार में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं का सक्रिय सहयोग अपेक्षित है। महामंत्री ने साधना-पक्ष को और अधिक मजबूत बनाने की तरफ सबका ध्यान आकर्षित कर कहा कि हम जितने-जितने साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे उतनी-उतनी मात्रा में संघ की गरिमा बढ़ेगी, अतः इस ओर हम सब सजग रहें। युवक परिषद् द्वारा व्रती श्रावक बनाने के अभियान की सराहना करते महामंत्री जी ने युवकों के सराहनीय कार्य से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। तत्पश्चात् संघहित में सदस्य महानुभावों को सुझाव रखने का समय दिया गया। प्रमुख रूप से निम्नांकित सुझाव प्राप्त हुए-

१. संघ के प्रत्येक सदस्य को अपनी आय का एक प्रतिशत प्रतिवर्ष स्वेच्छा से संघ को समर्पित करना चाहिए।
२. संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के बजट कार्यकारिणी में प्रस्तुत करने के तीन माह पूर्व बनाकर गजेन्द्रनिधि को भेजना चाहिए ताकि गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टीगण समीक्षा कर अनुदान हेतु विचार कर सकें।
३. संघ के पदाधिकारियों को अपने क्षेत्र में मेलजोल बढ़ाना चाहिए।
४. संघ के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों को करणीय कार्यों की जानकारी दी जाए।
५. जोधपुर मुख्यालय पर अतिथिगृह एवं भोजनशाला की व्यवस्था आवश्यक है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल की अध्यक्षता में आयोजित मण्डल की कार्यकारिणी बैठक में मन्त्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा ने

मण्डल का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए मण्डल की विविध प्रवृत्तियों की प्रगति की जानकारी दी। वर्ष २००१-२००२ के आय-व्यय का अनुमोदन करने के साथ वर्ष २००२-२००३ का प्रस्तावित बजट स्वीकार किया गया।

गत बैठक के पश्चात् से लेकर अब तक दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए एक लोगस्स का ध्यान कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की १३.१०.२००२ को सम्पन्न संयुक्त साधारण सभा का विवरण

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की संयुक्त वार्षिक साधारण सभा रविवार दिनांक १३अक्टूबर २००२ को सायं ७ बजे अमर ज्ञान ग्रोवर ऑडिटोरियम, लाला लाजपतराय मेमोरियल ट्रस्ट, लाला लाजपतराय मार्ग, हाजी अली, मुम्बई में रखी गई, जिसमें संघ संरक्षक प्राणिमित्र सेवामूर्ति श्री डी.आर.मेहता साहब मुख्य अतिथि एवं वृहत् महानगर पालिका के उप-महापौर श्री बाबूभाई भवान जी विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे।

अतिथियों, संघ पदाधिकारियों, श्रावक-श्राविकाओं एवं युवारत्न साथियों के साथ साधारण सभा में पधारे भाई-बहनों के स्वागत में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मुम्बई के अध्यक्ष रत्न व्यवसायी सुश्रावक श्री पारसचन्द जी हीरावत ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता साहब, विशिष्ट अतिथि श्री बाबूभाई भवान, संघाध्यक्ष, संघ संरक्षक, संघ की सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों के साथ साधारण सभा में पधारे श्रावक-श्राविकाओं का मुम्बई शाखा की ओर से भावभीना स्वागत किया। भाषा-भाव और शब्दों के चयन में स्वागत-सत्कार अभिनन्दन का एक-एक बोल मन को छूने वाला था। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का बालकेश्वर चातुर्मास युवकों की जागृति की दृष्टि से विशेष महत्त्व का बताते हीरावत साहब ने ज्ञान-क्रिया के संगम आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों की संयम-साधना में सजगता, समभाव से परीषह सहने की क्षमता और ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना के सुन्दर रूप के लिए प्रसन्नता व्यक्त की।

संघ महामंत्री श्री अरूण जी मेहता ने गत वर्ष से लेकर अब तक के कार्यों की संक्षिप्त झांकी प्रतिवेदन के माध्यम से प्रस्तुत करते हुए संघ रूपी भव्य प्रासाद में सबके महत्त्व को रेखांकित करत हुए संघ-सेवा में सबके सहयोग की अपेक्षा रखी। महामंत्री जी ने बताया कि संघ का वर्ष २००१-२००२ का आय-व्यय एवं वर्ष २००२-२००३ का प्रस्तावित बजट पूर्व में बैठक आमंत्रण पत्र के साथ प्रेषित किया जा चुका है, उसे कार्यकारिणी ने विचार-विमर्श पश्चात् स्वीकार किया है, अतः इसे पारित किया जाए।

जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति, कलकत्ता विश्वविद्यालय के अभूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त शिक्षाविद् **प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा** ने

अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते कहा कि आज के इस सम्मेलन में आकर मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। जयपुर वृहद् सम्मेलन संघाध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत के कार्यकाल में हुआ था। तब से श्रावक सम्मेलनों के माध्यम से विचार-चिन्तन की प्रक्रिया संघ में बढ़ी है और यह संघहित में सार्थक प्रयास है। प्रो. लोढ़ा साहब ने कहा कि भगवान महावीर के २६००वें जन्म कल्याणक महोत्सव पर प्रधानमंत्री माननीय श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने 'जैन धर्म को विश्व धर्म हो गया है' कहकर जैन जगत की शान बढाई है। विश्व में आज जितने भी धर्म और दर्शन हैं उनमें से जैन दर्शन का अनेकान्तवाद आज समय की कसौटी पर खरा उतरा है।

आचार्य श्री हीरा के व्यसन त्याग संदेश के प्रति विचार रखते प्रो. लोढ़ा साहब ने कहा हर व्यक्ति निर्व्यसनी बने। व्यसन के संदर्भ में उन्होंने कहा कि आज व्यसन मानवीय भावनाओं को खण्डित कर रहे हैं। व्यसनों के दुष्परिणाम बताते उन्होंने कहा कि विश्व समुदाय व्यसनों से अपसंस्कृति का शिकार हो रहा है।हम अपने इस सम्मेलन में इस प्रेरणा को आगे बढ़ावे।

श्री प्रकाशचन्द जी डागा, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने मण्डल के प्रतिवेदन के माध्यम से पिछले वर्ष में जिनवाणी की सदस्य संख्या की वृद्धि में युवक परिषद् के रचनात्मक योगदान पर साधुवाद दिया, वहीं जिनवाणी के आगम विशेषांक पर प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन का आभार व्यक्त किया। साहित्य प्रकाशन में हीरा प्रवचन पीयूष भाग-एक आदि अनेक पुस्तकों का उल्लेख करते कहा कि मण्डल के साहित्य का नवीन एवं पुनःप्रकाशन महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। स्वाध्याय संघ के माध्यम से स्थान-स्थान पर शिविर एवं प्रवास कार्यक्रम के साथ पर्युषण पर स्वाध्यायियों की नियुक्ति में हुए विस्तार तथा धार्मिक पाठशाला के कार्यों पर प्रकाश डाला।

सभा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में सर्वोच्च स्थान प्राप्त परीक्षार्थियों अल्पा सुराना, अनिता सिंघवी, सपना संकलेचा, चन्दनबाला चोरड़िया, कंचन भंसाली को मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता साहब ने सर्वोच्च वरीयता का पुरस्कार दिया।

विशिष्ट अतिथि श्री बाबूभाई भवान जी ने 'जय जिनेन्द्र' कहकर अपना उद्बोधन प्रारम्भ किया। मुम्बई महानगर में आचार्यप्रवर के पधारने और चातुर्मासार्थ बालकेश्वर विराजने को मुम्बई के लिए महान् सौभाग्य का कारण बताते उप-महापौर ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। अपने आपको जैन होने का फक्र करते श्री बाबूभाई जी भवान ने कहा कि जैन धर्म सबसे ज्यादा सेवा करने वाला है। आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के दर्शनों का सौभाग्य पाकर उन्होंने अपने आपको भाग्यशाली बताते कहा कि मैंने इतना सादा महात्मा पहले कभी नहीं देखा। आचार्य श्री भक्तों को सही मार्गदर्शन देते हैं और अपनी सेवा में आने वालों को अच्छी राह बताते हैं। मैं आपके अधिवेशन में आकर खुशी का अनुभव करता हूँ, कहकर

माननीय उप-महापौर ने अपनी बात समाप्त की। मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता सा. ने रजतपट्टिका प्रदान कर उनका सम्मान प्रकट किया।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने मुम्बई महानगर के ऐतिहासिक और यशस्वी चातुर्मास के लिए मुम्बईवासियों की सेवा-भावना को अनुकरणीय बताते उसकी अनुमोदना की। उन्होंने मण्डल की प्रवृत्तियों को और अधिक विस्तृत करने हेतु सबके सहयोग की अपेक्षा की और अपने मनोगत भावों से साधारण सभा को अवगत कराते हुए कहा कि आचार्यप्रवर दक्षिण की ओर विहार करें तो युवकों के साथ संघ-समाज में नई चेतना जागृत होगी।

स्वाध्याय संघ की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा ने स्वाध्याय संघ की महिमा बताते हुए कहा-"मैं कौन हूँ, कहां से आया हूँ, कहां जाना है" इन सब प्रश्नों का समाधान स्वाध्याय से मिलता है। स्वाध्याय संघ की ५७ वर्षों की प्रगति विवरण की झांकी रखते उन्होंने कहा इस वर्ष १८७ स्थानों पर पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का आयोजन सफल रहा। उन्होंने कहा कि भौतिक संसार की चकाचौंध में रचा-पचा व्यक्ति स्वाध्याय के माध्यम से शांति का अनुभव कर सकता है अतः सभी स्वाध्यायी बनें, स्वाध्याय करें और पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में सेवाएँ दें।

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा ने अपने वक्तव्य में परिषद् के चारों राष्ट्रीय कार्यक्रमों पर प्रकाश डालते बताया कि चतुर्विध संघ-सेवा में जयपुर, सामायिक-स्वाध्याय कार्यक्रम में जलगांव, धार्मिक शिक्षण में चेन्नई और जोधपुर तथा स्वधर्मी वात्सल्य और समाज सेवा में पीपाड़ शहर को पुरस्कृत किया जा रहा है, वहीं सर्वश्रेष्ठ शाखा का पुरस्कार मुम्बई को मिला है। जिनवाणी के आजीवन सदस्य बनाने की लक्ष्य-पूर्ति के साथ श्री बोहरा साहब ने स्तम्भ सदस्य बनाने, व्रती श्रावक बनाने जैसे लक्ष्य रखकर कार्य योजना की जानकारी रखी।

अखिल भारतीय श्री जैन श्राविका मण्डल की **अध्यक्ष** एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की **संयोजक श्रीमती विमला जी मेहता** ने व्यक्ति- व्यक्ति के चारित्र निर्माण में शिक्षा और संस्कारों की आवश्यकता प्रतिपादित करते श्राविका-मण्डल और शिक्षण बोर्ड के कार्यों को गति देने के लिए सबके सहयोग की कामना के साथ अपनी बात का समापन किया।

गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी **श्री सरदारसिंह जी कर्नावट** ने गुणी-अभिनन्दन कार्यक्रम के अन्तर्गत विशिष्ट संघ-सेवियों को अपने कर-कमलों से सम्मान-पुरस्कार वितरित किए-१. सर्वप्रथम श्री सोभागमल जी जैन, अलीगढ़ को पांच वर्षों से आचार्यप्रवर की सेवा में रहकर छोटे संतों को अध्यापन कार्य में सहयोग देने के लिए रजत पट्टिका पर मुद्रित अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। २. आचार्यप्रवर के चातुर्मास में युवारत्न श्री धर्मेन्द्र जी लोढ़ा-मुम्बई की मौन सहित मासखमण तप की साधना के उपलक्ष्य में अभिनन्दन पट्टिका भेंट कर सम्मानित किया। ३. श्रीमती उषादेवी जी सुराणा, जयपुर का

विहार-सेवा में अद्वितीय योगदान हेतु अभिनन्दन किया। ४. अनन्य गुरुभक्त, उदारमना, सुश्रावक श्री कान्तिलाल जी चौधरी, धुलिया का गत चातुर्मास एवं महाराष्ट्र क्षेत्र में विचरण-विहार में प्रदत्त सेवाओं के लिए संघ-सेवा के अन्तर्गत अभिनन्दन किया। अभिनन्दन के समय जय-जयकार के अनवरत जयघोष चलते रहे।

बालकेश्वर संघाध्यक्ष **श्री चन्द्रकान्तभाई मणिलाल भाई भंसाली,** संघमंत्री श्री रमेशभाई प्रभाशंकर जी दफ्तरी और सहमंत्री श्रीमती सरिता बहन रमेशभाई मेहता का चातुर्मास में उल्लेखनीय योगदान हेतु प्रशस्ति सम्मान मुख्य अतिथि माननीय श्री डी.आर.मेहता साहब के कर-कमलों से प्रदान किया गया। बालकेश्वर में वीणा अपार्टमेण्ट के बेसमेंट में चौका व्यवस्था के लिए निःशुल्क स्थान उपलब्ध कराने के लिए श्री सुखराज जी नाहर और रेवाचन्द जी मेहता को मुख्य अतिथि महोदय ने रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति सम्मान प्रदान कर संघ की ओर से उनका बहुमान किया।

संघ संरक्षक एवं **मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता साहब** ने संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं के संयुक्त सम्मेलन में आमंत्रण के लिए आभार प्रदर्शित करते कहा कि हम रत्नवंश के सदस्य हैं यह हमारा सौभाग्य है। हमारा संघ गौरवशाली है जिसमें गुरुओं की विशेष भूमिका रही। पूर्वाचार्यों से लेकर युगमनीषी आचार्य श्री हस्तीमल जी म. सा. एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ज्ञान और चारित्र के परिप्रेक्ष्य में विचार रखते मेहता साहब ने कहा कि इस संघ के आचार्यों ने संघ को विशिष्ट गरिमा प्रदान की है। महान् आचार्यों के संस्कारों से पल्लवित हमारा संघ संवेदनशील है। शायद ही किसी और संघ में इतने सेवाभावी लोग हैं। मुख्य अतिथि महोदय ने संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना के अहिंसा के प्रचार, संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत जो प्राणी मित्र संस्थान, जोधपुर के अध्यक्ष हैं अकाल की विभीषिका में उनके द्वारा सेवा के कार्यों का उल्लेख करते कहा कि प्राणी मित्र संस्थान की ओर से एक लाख पशु बचाये गये। सुशीला जी बोहरा ने विधवाओं-परित्यक्ताओं को पैरों पर खड़े करने का काम हाथ में लिया, ५२०० बहिनों को रोटी-रोजी सुलभ कराई। कोटा करणी नगर संस्थान, बालशोभागृह जैसे सेवा के कार्यों का उल्लेख करते उन्होंने अहिंसा के सकारात्मक रूप की चर्चा की। निःस्वार्थ सेवा, सादगी, सामंजस्य जैसी रत्नवंश की विशेषताओं पर प्रकाश डालते मेहता साहब ने कहा कि रत्नवंश में पद को लेकर कभी झगड़े टंटे नहीं होते।

मुख्य अतिथि महोदय ने संघ को मजबूत बनाने का आह्वान भी किया। स्वधर्मी वात्सल्य सेवा के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं हुए हैं, जिसकी आवश्यकता बताते मेहता साहब ने कहा १०० सदस्यों को प्रतिवर्ष मदद पहुंचाने का लक्ष्य होना चाहिए।

संघाध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना ने मंचासीन महानुभावों में से सर्वप्रथम मुख्य अतिथि को संबोधित करने के पूर्व उनके लिए दो पक्तियां कहीं, जिनके बोल थे– तुम तसल्ली न दो, सिर्फ बैठे रहो, वक्त कुछ मेरे मरने का

टल जायेगा। क्या ये कम है मसीहा के आने से, मौत का इरादा बदल जायेगा। मुख्य अतिथि श्री डी.आर. मेहता साहब के रोम-रोम में करुणा बरसती है, मैंने संघ का काम संभाला तब आदरणीय श्री डी.आर.मेहता साहब ने शपथ दिलाई थी। संघ के भामाशाह आदरणीय श्री मोफतराज जी मुणोत, गजेन्द्र निधि के स्तम्भ आदरणीय श्री नवरतनमल जी कोठारी, गुप्तदानी आदरणीय श्री पारसचन्द जी हीरावत आदि-आदि मंचासीन महानुभावों के नामोल्लेख करते बाफना साहब ने कहा कि आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने महाराष्ट्र में आकर सामायिक की इतनी प्रभावी प्रेरणा की कि आज गांव-गांव में और नगर-नगर में दैनिक और साप्ताहिक सामायिक-साधना का क्रम निरन्तर चल रहा है। अपने नगर जलगांव का उदाहरण रखते बाफना साहब ने कहा कि वहां आचार्यप्रवर की प्रेरणा से सामूहिक सामायिक का शुभारम्भ हुआ, मैंने ७२ दिनों में एक हजार घरों का सर्वे किया। परिणाम सामने है, आज एक हजार के लगभग लोग सामूहिक सामायिक करते हैं। आप गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन त्याग संदेश को जन-जन तक पहुंचायें। स्वयं सामायिक करें, दूसरों को इसमें जोड़ें। यही धर्म हमारी रक्षा करेगा। धर्म अन्तरंग में रम जायेगा तो और गुण खुद प्रकट होंगे।

संघाध्यक्ष महोदय ने **संघ के प्रत्येक सदस्य से अपेक्षा रखी कि संघ का हर सदस्य अपनी आय का एक प्रतिशत स्वेच्छा से संघ को समर्पित करे।** इससे जुड़ाव भी सामने आयेगा। अध्यक्ष महोदय के इस प्रस्ताव को सदस्यों ने हाथ उठाकर स्वीकार किया।

संघाध्यक्ष महोदय ने अपने पांच वर्ष के कार्यकाल की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते कहा कि मैंने देश भर के दर्जनों ग्राम-नगरों का प्रवास किया है और मुझे यह कहते खुशी होती है कि मैं जहां भी गया गुरुभाइयों ने स्नेह दिया, उसे मैं भूल नहीं सकता।

मुम्बई संघ की सुन्दर-व्यवस्था के लिए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि मैं इतनी सुन्दर-व्यवस्था की कल्पना नहीं कर सकता था, पर मुम्बईवासियों ने सभी व्यवस्थाएँ सुन्दरतम तरीके से की हैं। मैं अपनी ओर से तथा संघ की ओर से मुम्बई वासियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

संघ संरक्षक एवं जोधपुर संघाध्यक्ष **डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत** ने अपनी ओर से एवं समारोह में पधारे सभी श्रावक-श्राविकाओं की ओर से मुम्बई की सुन्दर व्यवस्था के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करते कहा कि यहां आकर हम सबको बहुत प्रेरणा मिली है, संघहित में अच्छी बातें सुनने को मिली है। इसलिए मैं सबकी ओर से मुम्बई के सुन्दर आयोजन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत ने मंचासीन महानुभावों के नामोल्लेख के संबोधन के पश्चात् कहा कि मुझे धन्यवाद देने का संघ से आदेश मिला है। उन्होंने कहा कि मैं धन्यवाद देने में कंजूस हूँ, पर

संघ का आदेश है इसलिए सर्वप्रथम मैं मुख्य अतिथि श्री डी.आर.मेहता साहब का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मेरे एक फोन पर यहां पधारने की स्वीकृति दी। मेहता साहब को करुणामूर्ति बताते मुणोत साहब ने कहा कि मेरे में करुणा और सेवा के बीज आपने ही बोये हैं। मेहता साहब के साथ काम करने में आनन्द भी आता है और कहते डर भी लगता है। संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने संघ का तन-मन-धन से सुन्दर संचालन किया, हमें ऐसे अध्यक्ष पर गौरव है। भाई श्री कैलाश जी हीरावत के साथ संघ संरक्षकों, पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं के व्यक्तिशः नामोल्लेख करते उनके स्नेह एवं सामंजस्य से यह काम सानन्द सम्पन्न हुआ है इसके लिए मैं उन्हें बधाई और धन्यवाद देता हूँ। बालकेश्वर संघाध्यक्ष, मंत्री आदि पदाधिकारियों के सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुए वीणा अपार्टमेण्ट के बेसमेन्ट को भोजनशाला के लिए उपलब्ध कराने वाले श्रीयुत् श्री सुखराज जी नाहर और श्रीयुत् रेवाचन्द जी मेहता का धन्यवाद करते मुणोत साहब ने कहा कि मेरे एक फोन पर आपने स्थान देकर हमारी बहुत बड़ी समस्या का समाधान किया है, मैं संघ की ओर से आपका धन्यवाद करता हूँ।

अपनी मुम्बई की टीम के एक-एक व्यक्ति का नामोल्लेख करते मुणोत साहब ने कहा कि मुम्बई जैसे महानगर में आचार्यप्रवर के चातुर्मास में ही नहीं बल्कि विचरण विहार और प्रवास में सब कार्यकर्त्ताओं के सहयोग के लिए मैं उनका हृदय से आभार प्रदर्शित करता हूँ।

व्यवस्था में त्रुटि रह सकना स्वाभाविक है। देशभर से पधारे सदस्य महानुभावों को किसी भी प्रकार की रही कमी के लिए क्षमायाचना करते हुए मुम्बई में सम्पन्न संयुक्त साधारण सभा में सर्वसम्मति से स्वीकृत प्रस्ताव कि **संघ का प्रत्येक सदस्य प्रतिवर्ष अपनी शुद्ध आय का एक प्रतिशत संघ को स्वेच्छा से समर्पित करेगा,** इस दृष्टि से सम्मेलन बहुत उपयोगी रहा, एतदर्थ मैं आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ गगनभेदी जयनादों के साथ संयुक्त साधारण सभा सम्पन्न होने की घोषणा की गई।

–अरूण मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी सम्मेलन

आन्ध्रप्रदेश के स्थानकवासी श्रावक-श्राविका, स्वाध्यायी बन्धु-बहनों का आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी सम्मेलन १६ एवं १७ नवम्बर २००२ को पूनमचन्द गांधी जैन स्थानक में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन श्री अक्षयमुनि जी के सान्निध्य में आयोजित होगा। यहां अष्ट दिवसीय जैन धार्मिक शिक्षण शिविर अक्टूबर माह में आयोजित हुआ है, जिसमें १४० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। – *शान्तिलाल गुन्देचा*

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला आयोजित

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की समीक्षा करने हेतु दिनांक ६ व ७ नवम्बर २००२ को ओसवाल कम्यूनिटी सेण्टर, नेहरूपार्क जोधपुर में कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें ८० महानुभावों ने भाग लिया।

कार्यशाला में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित प्राप्त सुझावों को व्यवस्थित रूप से सम्पादित कर बोर्ड कार्यालय को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निम्न प्रभारी नियुक्त किये गये-

१. पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक प्रभारी - श्री प्रकाशचंदजी जैन
२. प्रश्न -पत्र निर्माण समिति प्रभारी - डॉ. धर्मचन्दजी जैन
३. उत्तर-पुस्तिका जॉच समिति प्रभारी - श्री जम्बूकुमारजी जैन
४. पुनर्मूल्यांकन जॉच समिति प्रभारी - श्रीमती सुशीलाजी बोहरा
५. परीक्षा आयोजन,परीक्षा परिणाम एवं पुरस्कार समिति -श्री धर्मचन्दजी जैन

कार्यशाला का शुभारंभ सत्र दिनांक ६.१०.२००२ को प्रातः १०.०० बजे हुआ। उद्घाटन सत्र में अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक, महामंत्री, रत्नवंशीय शासन सेवा समिति के सदस्य, स्थानीय संघ के पदाधिकारीगण, स्वाध्याय संघ, युवक परिषद्, श्राविका मण्डल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ ही आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के निदेशक, संयोजक, सचिव, रजिस्ट्रार, कार्यकारिणी सदस्य, प्रश्न-पत्र निर्माता, पाठ्यक्रम निर्माता, उत्तरपुस्तिका जॉचकर्त्ता, परीक्षा लेने वाले केन्द्राधीक्षक, निरीक्षक, पर्यवेक्षक एवं सहयोगी सक्रिय कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

मंगलाचरण के पश्चात् बोर्ड की संयोजक श्रीमती विमलाजी मेहता ने बोर्ड की गतिविधियों का परिचय देते हुए स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। उद्घाटन सत्र में जिनशासन सेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, बोर्ड निदेशक आनन्द जी चौपड़ा, संघ महामंत्री श्री अरूण जी मेहता सहित अनेक प्रबुद्ध महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बोर्ड की गतिविधियों की अनुमोदना करने के साथ हुए सतत विकास हेतु शुभकामनाएँ व्यक्त की। बोर्ड सचिव श्री नवरतन जी डागा ने धन्यवाद प्रकट किया।

कार्यशाला का प्रथम सत्र भोजन के उपरान्त दोपहर बाद १.३० बजे से प्रारंभ हुआ, जिसमें सर्वप्रथम उपस्थित सभी महानुभावों ने अपना परिचय प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् पाठ्यक्रम सम्बन्धी एवं पाठ्य पुस्तक सम्बन्धी चर्चा वार्ता की गई। अनेक महानुभावों ने अपने-अपने सुझाव, समस्याएँ एवं समाधान प्रस्तुत किये।

अल्प विश्राम के पश्चात् द्वितीय सत्र अपराह्न ३.३० से ४.३० तक चला, जिसमें प्रश्न-पत्रों के प्रारूप, स्तर, प्रश्न-संख्या, प्रश्नों में विकल्प देने आदि के सम्बन्ध में अनेकानेक महानुभावों ने अनेक उपयोगी सुझाव एवं विचार प्रस्तुत किये।

सायंकालीन भोजन के पश्चात् रात्रि में ७.०० से ९.०० बजे तक तृतीय सत्र

चला, जिसमें परीक्षा आयोजन सम्बन्धी, परीक्षा परिणाम सम्बन्धी एवं प्रोत्साहन पुरस्कार सम्बन्धी अनेक उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये गये। तत्पश्चात् बोर्ड के निदेशक श्री आनन्दजी चौपड़ा ने बोर्ड की कार्यविधि, समस्याएँ एवं समाधान विषयक अपने विचार प्रस्तुत किये। बोर्ड सचिव श्री नवरतनजी डागा के आभार के साथ सत्र समाप्त हुआ।

दिनांक ७.१०.२००२ को प्रातः नाश्ते के उपरान्त नेहरूपार्क स्थानक में विराजित शासन प्रभाविका परम विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ४ के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया गया। तदुपरान्त ११.०० से १.०० बजे तक प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ। जिसमें अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष एवं इस बोर्ड के मार्गदर्शक श्रीमान् कैलाशचन्दजी हीरावत का भी सान्निध्य प्राप्त हुआ। इस सत्र में विशेषकर उत्तर-पुस्तिका जाँच सम्बन्धी, पुनःमूल्यांकन सम्बन्धी एवं जोधपुर में एक ही स्थान पर बैठकर जाँच कार्य करने सम्बन्धी विषयों पर गहन विचार विमर्श हुआ। अनेक उपयोगी सुझाव प्रबुद्ध लोगों ने प्रस्तुत किये। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने बोर्ड की गतिविधियों में सक्रिय योगदान देने हेतु प्रेरक उद्बोधन दिया।

भोजनोपरान्त दोपहर २.०० से ३.०० बजे तक समापन समारोह आयोजित किया गया।कार्यशाला में भाग लेने वाले सभी महानुभावों को स्मृतिचिह्न प्रदान किये गये। बोर्ड के सचिव श्री नवरतनजी डागा ने आभार प्रकट किया। कार्यशाला के सत्रों का कुशलता पूर्वक संचालन बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन ने किया।

—नवरतन डागा, सचिव

आवेदन-पत्र आमन्त्रित

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा १ से ८ तक की आगामी परीक्षा दिनांक १६.०१.२००३, रविवार, दोपहर १२ से ३ बजे तक विभिन्न केन्द्रों पर आयोजित होंगी। ३० नवम्बर २००२ तक आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराना अनिवार्य है।

परीक्षा संबंधी पालनीय नियम-

१. आवेदन-पत्र साफ व स्पष्ट अक्षरों में भरा हुआ हो।

२. पत्राचार का पता पूर्ण हो।

३. फोन नम्बर एस.टी.डी.कोड सहित लिखे हों।

४. इस बोर्ड की जो कक्षा उत्तीर्ण करली हो, उसके आगे क्रमशः ही परीक्षा दे सकते हैं।

५. यदि कोई परीक्षार्थी आवेदन-पत्र में कोई भी गलत सूचना देकर किसी कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण कर भी लेता है तो भी बोर्ड को उसकी उत्तीर्ण परीक्षा को निरस्त करने का पूर्ण अधिकार होगा।

परीक्षा परिणाम संशोधन- जिनवाणी के अंक माह अक्टूबर २००२ में पृष्ठसंख्या ६४ पर २८ जुलाई २००२ को आयोजित परीक्षा परिणाम की अस्थायी योग्यता सूची प्रकाशित की गई थी, उसमें चतुर्थ कक्षा (जैन धर्म मध्यमा) में रोल नं. १२७८ कु.

अश्विनी/श्री अशोक कुमार जी जैन, धुलिया (महा.) ने भी द्वितीय स्थान प्राप्तं किया है, एतदर्थ बधाई एवं असुविधा के लिए क्षमा याचना

पुनर्मूल्यांकन संबंधी नियम- परीक्षा परिणाम घोषित होने के एक माह के भीतर सादे कागज पर आवेदन-पत्र के साथ २५ रुपये का शुल्क भेजना अनिवार्य है।

-धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार

विविध-समाचार

उपराष्ट्रपति ने मांस निर्यात पर पाबन्दी का समर्थन किया

जैन महासभा दिल्ली के तत्त्वावधान में फिक्की सभागार में आयोजित विश्वमैत्री एवं क्षमापना दिवस के राष्ट्रीय समारोह का उद्घाटन करते हुए महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह जी शेखावत ने कहा कि भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य और अपरिग्रह के अमर सिद्धान्त महज औपचारिकता नहीं रहने चाहिए, अपितु ये हमारे जीवन का अभिन्न अंग बनने चाहिए। उन्होंने कहा कि मेरे सार्वजनिक जीवन का व्यक्तिगत अनुभव है कि जो मैत्री से प्राप्त होता है, वह दुश्मनी से कभी प्राप्त नहीं होता। **जैन समाज द्वारा बूचड़खाने बंद करने और मांस निर्यात पर पाबंदी लगाने की मांग का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा कि हिंसा करना और हिंसा सहना एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जैन समाज को हर प्रकार की हिंसा के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन करना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता है तो इसके दायित्व से जैन आचार्य और जैन साधु भी मुक्त नहीं माने जायेंगे।** उपराष्ट्रपति ने कहा कि साधनों के उपयोग की सीमा तय होनी चाहिए और हमारा धन जनकल्याण के कार्यों पर खर्च होना चाहिए। उन्होंने कहा कि अहिंसा एक ऐसा हाइड्रोजन बम्ब है, जिसकी शक्ति के आगे कोई आण्विक अस्त्र नहीं ठहर सकता। लेकिन अहिंसा नारा नहीं, आचरण बनना चाहिए।

समारोह में मुख्य भाषण देते हुए प्रसिद्ध न्यायविद् डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी ने कहा कि आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि इन्सान इन्सानियत के धरातल से नीचे न गिरे। डॉ. सिंघवी ने कहा कि सभी को अभय मिलना चाहिए, चाहे वह मित्र हो और चाहे शत्रु। अभय से प्रीति का जन्म होता है, प्रीति से विश्वास बढ़ता है, विश्वास से अहिंसा तथा अहिंसा से मैत्री और क्षमा के गुण विकसित होते हैं। आज मनुष्य के मन-मस्तिष्क में हमें शांति और मित्रता के दुर्ग बनाने हैं। इसलिए क्षमा और मैत्री किसी एक जाति या धर्म के पर्व नहीं, अपितु पूरे राष्ट्र, विश्व और चैतन्य के पर्व हैं।

अपने अध्यक्षीय भाषण में अखिल भारतीय पशु-पक्षी आयोग के अध्यक्ष श्री गुमानमल लोढ़ा ने कहा कि क्षमा और शांति जीवन और इसके अस्तित्व की आधारशिला है। देश में बढ़ते बूचड़खानों और मांस के निर्यात का कड़ा विरोध करते हुए, इन्होंने इसे बंद करवाने के लिए देश व्यापी आंदोलन चलाने का आह्वान किया।

जैन महासभा-दिल्ली के महासचिव तथा समारोह के मुख्य संयोजक प्रो. रतन

जैन ने कहा कि अणुबम की विभीषिका से भयाक्रांत विश्व को अणुव्रत का अनुदान मिलना चाहिए। समस्याओं का समाधान बंदूक की गोली से नहीं, प्यार की बोली से होगा। इस राष्ट्रीय समारोह में अनेक प्रस्ताव पास किए गए-

१. जैन महासभा इस वर्ष पूरे देश में विशेष अहिंसा अभियान चलाएगी। अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी के माध्यम से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अहिंसा के शिक्षण और प्रशिक्षण के कैंप लगाए जायेंगे।

२. धार्मिक विवादों का समाधान आपसी बातचीत के माध्यम से किया जाए। साम्प्रदायिक तनाव एवं आतंकवाद के विभिन्न पक्षों पर सभी धर्माचार्य चिंतन कर एक सर्वधर्म नीति का निर्धारण करें तथा इसके लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सर्वपंथ सम्मेलन का आयोजन किया जाए।

३. वर्तमान शिक्षापद्धति में "नैतिक मूल्य परक शिक्षा" को शिक्षा का अनिवार्य अंग बनाया जाए। चारित्र निर्माण को शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य मानकर, युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के सार्वभौम मूल्य का शिक्षण प्रदान किया जाए।

४. मांस के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए। मानवाधिकार की तरह पशु-पक्षियों के अधिकारों की व्याख्या करने के लिए पशु-पक्षी अधिकार आयोग की स्थापना की जाए।

५. सामाजिक एवं सार्वजनिक समारोहों में सादगी को महत्त्व दिया जाए। व्यर्थ की तड़क भड़क और दिखावे तथा धन प्रदर्शन की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाए जाए।

६. सामाजिक, धार्मिक एवं सभी संगठनों में महिलाओं और युवाओं का निश्चित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जाए तथा संस्थाओं की निर्णय प्रक्रिया में उनकी प्रभावी सहभागिता और भूमिका सक्रिय और समुचित रहनी चाहिए। समारोह में जैन समाज के सभी पक्ष के शीर्ष नेता और प्रतिनिधि उपस्थित थे। *—प्रो. रतन जैन, महासचिव*

एन.सी.ई.आर.टी. के इतिहास विषयक पाठ्यक्रम में संशोधन के लिए श्री मुरली मनोहर जोशी का नागरिक अभिनन्दन

२१ सितम्बर २००२ को ऐतिहासिक परेड ग्राउण्ड में निर्मित 'कुन्दकुन्द सभामण्डप' के विशाल प्रांगण में आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के पावन सान्निध्य में हजारों धर्मानुरागी भाई-बहिनों की उपस्थिति में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जी जोशी का जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा 'नागरिक अभिनन्दन' किया गया।

एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा ग्यारह की पुस्तक प्राचीन भारत के इतिहास विषयक पाठ्यक्रम के संशोधन में उच्चतम न्यायालय का भी सकारात्मक योगदान रहा है।

अभिनन्दन समारोह में आचार्य श्री विद्यानन्द जी ने कहा- "हमारे देश के इतिहास और संस्कृति की एक समृद्ध परम्परा है तथा हमारे महापुरुषों के यशस्वी जीवन-चरित्र के कारण भारत की विश्वभर में प्रतिष्ठा है। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण प्रसंग था कि इस देश के नौनिहालों को अपने महापुरुषों के बारे में विकृत ढंग से पाठ पढ़ाये जा रहे थे,

उनकी तप साधना को 'भटकने' की संज्ञा दी जा रही थी और अधिकांश महापुरुषों को 'कल्पित' कहकर बच्चों के मन में उनके प्रति अश्रद्धा के भाव जगाये जा रहे थे। इसी कारण विवश होकर मैंने एक साल पहले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघसंचालक श्री सुदर्शन जी के समक्ष इसी परेड ग्राउण्ड में इस बात को उठाया था कि केन्द्र सरकार द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. के इन विकृत पाठों को अविलम्ब रूप से सुधरवाया जाये। यद्यपि सरकार के सुधार के बाद विघ्नसंतोषी लोगों ने उच्चतम न्यायालय में इसके विरुद्ध याचिका दायर कर इसे रोकने की भरपूर कोशिश की। किन्तु मुझे यह बहुत संतोषदायक लगा कि उच्चतम न्यायालय में भारतीय संस्कृति और इतिहास के महापुरुषों और उनके द्वारा प्रवर्तित धर्मों के बारे में आदरपूर्वक प्रामाणिक जानकारी बच्चों को देने का पक्ष लिया तथा संशोधित पाठ्यक्रम की पुष्टि की। इस काम को संकल्पपूर्वक करने वाले धर्मानुरागी श्री मुरली मनोहर जी जोशी को मैं बहुत-बहुत आशीर्वाद देता हूँ कि वे भारतीय संस्कृति की गरिमा को बनाये रखने के लिए इसी प्रकार निष्ठापूर्वक सहयोग देते रहें।

इस प्रसंग में अपने मुख्य वक्तव्य में माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि पूज्य आचार्य श्री का आदेश होते ही मैंने एन.सी.ई.आर.टी. के निदेशक को सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के समीक्षण का निर्देश दिया और जहां भी हमारे पूज्य तीर्थंकरों, भगवान राम, नारायण, श्रीकृष्ण आदि के बारे में अश्रद्धा उत्पन्न करने वाले तथा अप्रामाणिक जानकारी देने वाले पाठ हैं, उन्हें तत्काल सुधार कर गरिमापूर्ण रीति से प्रस्तुत किये जाने के लिये कहा। इसे लोगों ने 'भगवाकरण' की संज्ञा देकर लांछित करना चाहा, किन्तु माननीय न्यायाधीशों ने सत्य को पहचाना और बच्चों को तथ्यपूर्ण एवं शालीन शिक्षा देने वाले पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान कर संस्कृति की रक्षा की।

नागरिक अभिनन्दन के अनन्तर कृतज्ञता ज्ञापन साहू रमेशचन्द जी जैन ने किया। संचालन डॉ.सुदीप जैन ने किया।

सादड़ी में जैन महासम्मेलन

भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जोधपुर एवं स्थानीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक २७ अक्टूबर २००२, रविवार को सादड़ी (मारवाड़) के जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक न्याति नोहरे में आयोजित जैन महासम्मेलन के दौरान वक्ताओं ने एक स्वर में समाज को संगठित करने का आग्रह किया। सम्मेलन में राजनीति, भारतीय प्रशासनिक व पुलिस जैसी महत्त्वपूर्ण सेवाओं में समाज की नगण्य मौजूदगी एवं विघटित दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए वक्ताओं ने वणिकवीथी के अलावा प्रभावी सेवा क्षेत्रों में समाज का वर्चस्व कायम करने और सामाजिक एकता दिखाने की जरूरतों पर बल दिया। इस दौरान लोक कल्याणकारी कार्यों व प्राणि सेवा की धार्मिक-सांस्कृतिक परम्परा को आगे बढ़ाने का भी संकल्प लिया गया। मुख्य वक्ता पूर्व न्यायाधीश व राज्य उपभोक्ता मंच के अध्यक्ष माननीय श्री जसराज जी चौपड़ा ने सामाजिक प्रतिष्ठा स्थापित करने का आग्रह किया। प्रशासनिक सेवाओं में समाज का

प्रतिनिधत्व बढ़ाने का अनुरोध करते हुए उन्होंने कहा कि इसी से समाज को वजन मिलेगा। संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष व पूर्व भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रंगरूपमल जी कोठारी ने कहा कि जैन समाज को अपने धन-वैभव के प्रदर्शन पर अंकुश लगाना होगा, क्योंकि इससे गलत संदेश जाते हैं। साथ ही प्रभावशाली सेवा क्षेत्रों को अपनाने व साधु-संतों की सुरक्षा-व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना होगा। सम्मेलन में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष श्री डी.आर.मेहता साहब ने विघटित जैन समाज को संगठित किए जाने की जरूरत बताते हुए कहा कि चर्चा की बजाए ठोस कार्य करने पर ही लक्ष्य की प्राप्ति की जा सकती है।

राष्ट्रसंत आचार्य पद्मसागर सूरीश्वर जी म.सा. ने उदारता में ही समृद्धि का वास बताते हुए कहा कि संस्कारवान के पास लक्ष्मी का सदुपयोग होता है, अन्यथा धन होने का अर्थ नहीं रह जाता। स्व के साथ समाज के कल्याण की भावना पर चर्चा करते हुए आचार्य श्री ने भेदभाव भुलाकर परमात्मा को देखने, उनके बताए मार्ग पर चलने, चिंतन-मनन करने और जैनत्व की दृष्टिसे देखने, परखने व अपनाने से ही समस्याओं के अंत की जानकारी दी। ओरियंटल इंश्योरेंस के महाप्रबंधक सुपारस भंडारी ने कहा कि समाज को लोगों के दिलों में सेंध लगानी होगी।

राज्य विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता श्री गुलाबचन्द जी कटारिया ने कहा कि समाज के बच्चों को प्रशासनिक व राजनीति के क्षेत्र में आगे बढ़ाने के हरसंभव प्रयास किए जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि राजनीति में फायदे तो नहीं हैं, लेकिन शिक्षा के माध्यम से सरकारी सेवाओं का वरण किया जाना चाहिए। विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी चपलोत ने इस मौके पर मतभेद होने के बावजूद एक होने की भावना प्रबल करने का आह्वान किया। जोधपुर मुख्यालय सचिव राजकुमारसिंह जी भंडारी ने श्रीमती पुष्पावती लुम्बा ट्रस्ट नई दिल्ली की ओर से ३३ विधवाओं के बच्चों को छह-छह हजार रुपए की छात्रवृत्ति राशि दी। श्रीमती सुभद्रा जी जैन, फूलचन्द जी गांधी व माणकचन्द जी संचेती को संस्थान की ओर से अभिनन्दन पत्र भेंट किए गए।

हृदय परिवर्तन आन्दोलन

मावली—अद्यतनीय हिंसात्मक वातावरण में श्रमण संघ के महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि जी कुमुद के पावन आशीर्वाद से अहिंसा एवं मैत्रीभाव को जन-जन में पहुंचाने के लिए 'हृदय परिवर्तन आन्दोलन' प्रारम्भ किया गया है। इसमें व्यक्ति के विचारों एवं हृदय का परिवर्तन मुख्य लक्ष्य है। इस आन्दोलन के माध्यम से सामाजिक समरसता, साम्प्रदायिक सौहार्द, प्रेम, अहिंसा, शाकाहार, संस्कार, शान्तिभाव आदि मानवीय मूल्यों की भावना जागृत की जाएगी। इस मिशन की क्रियान्विति के प्रथम चरण के अन्तर्गत सैकड़ों विद्यालयीय छात्रों को अहिंसा, शाकाहार, निर्व्यसनता एवं संस्कारवान जीवन जीवन के लिए संकल्पित कराया जा चुका है। समाजसेवियों, श्रीमन्तों एवं सज्जनों से इस आन्दोलन के साथ जुड़ने का अनुरोध है। कार्यालय-'सिद्धायतन' बस स्टेण्ड, मावली, जिला- उदयपुर (राज.) ३१३२०३ फोन ०२९५५-६३०४९। —*दलीचन्द वीरवाल, संयोजक*

भगवान महावीर पुरस्कार घोषित

भगवान् महावीर फाउण्डेशन की महावीर अवार्ड चयन समिति की बैठक भूतपूर्व प्रमुख न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री वेंकटाचेलय्याजी की अध्यक्षता में बैंगलोर में वीरायतन के आचार्य श्री चन्दनाजी, श्री डी.आर.मेहता (भूतपूर्व अध्यक्ष सेबी) व डा. बी.एम. हेगड़े (उपकुलपति मनिपाल विश्वविद्यालय) की उपस्थिति में दिनांक १४.३.२००२ को हुई। फाउण्डेशन की ओर से न्यासी श्री एन.सुगालचन्द जैन, श्री जी.एन. दमाणी व श्री पी.वी. कृष्णमूर्ति व श्री बी. उत्तमचन्द जी भण्डारी उपस्थित थे। चयन समिति ने गहन विचार विमर्श के बाद निम्नांकित संस्थाओं का पुरस्कार हेतु चयन किया-

शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए

१. मरुधर महिला शिक्षण संस्थान, विद्यावाड़ी, किमेल, स्टेशन, पो. रानी, जिला- पाली (राजस्थान)

२. विवेकानन्द राक मेमोरियल एवं विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी, तमिलनाडु।

सामाजिक सेवा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए

१. डॉ. एस.वी.आदीनारायणराव, डाइरेक्टर जनरल, प्रेमा हॉस्पीटल, १४-३-१८, महाराणी पेटा विशाखापट्टनम् (आन्ध्रप्रदेश)

महावीर अवार्ड में भगवान महावीर की मूर्ति, प्रशस्ति पत्र व पाँच लाख रुपये नगद देने का प्रावधान है। अवार्ड दिसम्बर महीने तक एक समारोह में दिये जायेंगे।

—एन.सुगालचन्द जैन

अहिंसा इण्टरनेशनल द्वारा वर्ष २००१ के पुरस्कारों के लिए नाम आमंत्रित

१. अहिंसा इण्टरनेशनल डिप्टीमल आदीश्वर लाल जैन साहित्य पुरस्कार (राशि ३१०००)

जैन साहित्य के विद्वान को उनके समग्र साहित्य अथवा एक कृति की श्रेष्ठता के आधार पर लिखित पुरस्कारों की सूची तथा अपनी २ श्रेष्ठ पुस्तकें भेजें।

२. अहिंसा इन्टरनेशनल भवागनदास शोभालाल जैन शाकाहार पुरस्कार (राशि २१०००)

शाकाहार प्रसार के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर।

३. अहिंसा इन्टरनेशनल रघुबीर सिंह जैन जीव रक्षा पुरस्कार (राशि २१०००)

जीव रक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे कर्मठ कार्यकर्ता को उनके कार्य की श्रेष्ठता के आधार पर।

४. अहिंसा इन्टरनेशनल प्रेमचंद जैन पत्रकारिता पुरस्कार (राशि २१०००)

रचनात्मक जैन पत्रकारिता की श्रेष्ठता के आधार पर।

नाम का सुझाव स्वयं लेखक/कार्यकर्ता/ संस्था अथवा अन्य व्यक्ति द्वारा ३१ जनवरी २००३ तक निम्न पते पर लेखक/कार्यकर्ता/पत्रकार के पूरे नाम व पते, जीवन-परिचय संबंधित क्षेत्र में कार्य सहित व पासपोर्ट आकार के फोटो सहित आमंत्रित हैं।

पुरस्कार नई दिल्ली में भव्य समारोह में भेंट किये जायेंगे। सम्पर्क सूत्र- प्रदीप कुमार जैन, सचिव, 4687, उमराद गली,पहाड़ी धीरज, दिल्ली–110006,

वर्ष २००२ का अणुव्रत पुरस्कार

जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा प्रदत्त प्रतिष्ठित 'अणुव्रत पुरस्कार' वर्ष २००० के लिए 'राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद' राजसमन्द को प्रदान करने की घोषणा की गई है। इस पुरस्कार में प्रशस्तिपत्र के साथ एक लाख इक्कीस हजार रुपयों की राशि प्रदान की जाती है। प्रतिवर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिकता, नैतिकता, शान्ति एवं अहिंसा के क्षेत्र में मानवीय मूल्यों के लिए समर्पित होकर कार्य करने वाले को यह पुरस्कार प्रदान किया जाता है।–*चन्द्रशेखर देराश्री*

अखिल भारतीय निबन्ध स्पर्धा का आयोजन

छत्तीसगढ़ समता प्रचार संघ नगरी द्वारा दक्षिण भारत साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, चेन्नई, के सौजन्य से अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है, जिसका विषय है- **"उपासना विशुद्ध कैसे हो?"**

यह निबन्ध अधिकतम ५०० शब्दों में होना चाहिए। निबन्ध भेजने की अंतिम तिथि १५ दिसम्बर २००२ है। स्पर्धा में उम्र का बन्धन नहीं है। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को १०००/-,द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को ७०१/-, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी को ५०१/- ,प्रोत्साहन पुरस्कार १० प्रतियोगी हेतु प्रत्येक को १००/-दिया जायेगा। श्रेष्ठ निबन्धों को पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाएगा। निबन्ध भेजने का पता- महेश नाहटा, नगरी, जिला-धमतरी (छत्तीसगढ़)४६३७७८, फोन नं. ०७७००-५१२४१ -*प्रमोद चौपड़ा, संयोजक*

भोपालगढ़ विद्यालय की हीरक जयन्ती

श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय, भोपालगढ़(जोधपुर) राज. १५ जनवरी २००३ को हीरक जयन्ती मनाने जा रहा है। इस अवसर पर विद्यालय के सभी स्नातकों व आत्मीयजनों को आमंत्रित किया जाता है। कृपया आप अपने नवीनतम पते विद्यालय के नाम भेंजे ताकि विधिवत् आमंत्रण पत्र भेजे जा सकें।

आवश्यकता है

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ (जोधपुर) राज. में जुलाई २००३ से ११वीं १२वीं कक्षाओं को पढ़ाने हेतु निम्नलिखित पद हेतु स्नातकोत्तर प्रशिक्षित प्राध्यापकों की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार-

वाणिज्य वर्ग– 2 पद (लेखाशास्त्र, व्यावसायिक संगठन, बैंकिग)
विज्ञान वर्ग– 2 पद(भौतिकी, रसायन विज्ञान)

सम्पर्क करें- १. श्री सूरजराज जी ओस्तवाल, अध्यक्ष, फोन नं. ०२६१-२५४३१०२
२. श्री महावीर चन्द जी कांकरिया, मंत्री फोन नं. ०२६२०-२२२२६८,२२२३८३
३. विद्यालय- ०२६२०-२२२२८०

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई—श्रमणसंघीया दक्षिणसिंहनी साध्वीरत्ना श्री अजीतकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ में से २२ वर्षीया नवदीक्षिता साध्वी श्री चारुप्रज्ञा जी म.सा. ने २ अक्टूबर २००२ को व्याख्यान में मासखमण की तपस्या हेतु प्रत्याख्यान किए। इस अवसर पर मूर्तिपूजक एवं तेरापंथ के चेन्नई स्थित अनेक सन्त-सती उपस्थित थे। साहुकार पेट स्थित जैन भवन में तप-महोत्सव हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। तपस्या के उपलक्ष्य में शीलव्रत ग्रहण करने वालों का बहुमान किया गया।- *रीखबचन्द लोढ़ा, अध्यक्ष*

जोधपुर— श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा २२ सितम्बर २००२ को रेनबो हाउस, पावटा में साम्वत्सरिक क्षमापना संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग ५०० श्राविकाओं ने भाग लिया। संगोष्ठी को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना का सान्निध्य प्राप्त था। श्रीमती नयनतारा जी बाफना, जलगांव इस संगोष्ठी की मुख्य अतिथि थी। संगोष्ठी में श्राविकाओं को बारह व्रती बनने की प्रेरणा की गई। —*सुनिता मेहता, अध्यक्ष*

बड़ी सादड़ी— आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के द्वारा प्रतिबोधित श्रीवाल जैन भाई-बहनों ने परम्परागत आपराधिक प्रवृत्तियों का त्याग कर तप में पुरुषार्थ दिखाया है। पूर्व में ये बाबरी जाति के थे, जैन धर्म स्वीकार करने के पश्चात् कइयों ने मासखमण, अठाई, पचोला आदि की तपस्याएं की। मात्र दो वर्षों में श्रीवाल भाई-बहनों की धार्मिक जागृति एवं तपाराधन उल्लेखनीय है।—*सज्जनसिंह मेहता साथी,संयोजक, समता प्रचार संघ।*

मुम्बई— श्री चांदमल चौथमल कर्णावट सेवा ट्रस्ट, स्वधर्मी सेवा की दृष्टि से निम्नांकित प्रवृत्तियां संचालित करता है-१. शिक्षा सेवा २. चिकित्सा सेवा ३. सद्गृहस्थ सेवा ४. धार्मिक सेवा ५. अन्य सेवा। आवेदन पत्र इन पतों पर प्रेषित करें- *(1) 91 पूर्णिमा, 43 रिज रोड़ मलबार हिल,मुम्बई—400006,(2)35,अहिंसापुरी,फतेहपुरा,उदयपुर (राज.)*

—चांदमल कर्णावट

बधाई

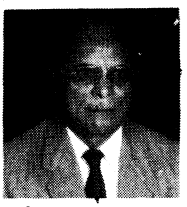

औरंगाबाद— श्री वर्द्ध. श्वे. स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, औरंगाबाद के पूर्व अध्यक्ष श्री चंदनमल जी पगारिया को १७ सितम्बर २००२ को स्वामी रामानन्द तीर्थ 'मराठवाड़ा रत्न महाराष्ट्र भूषण' पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री संघ द्वारा आपको 'समाजभूषण' उपाधि से पहले ही सम्मानित किया जा चुका है। आप श्री संघ की निरन्तर ५० वर्षों से सेवा कर रहे हैं।— *डॉ. प्रकाश झांबड़, महामंत्री*

जोधपुर— स्वाध्यायशील विद्वान एवं लेखक सुश्रावक श्री आसूलाल जी संचेती की पौत्री सुश्री सुरुचि संचेती सुपुत्री श्री चन्द्रप्रकाश जी संचेती सी.ए. ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय की एम.ए. मनोविज्ञान की परीक्षा २००१ में सर्वोच्च अंक प्राप्त किए हैं।

विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में उन्हें २५ सितम्बर २००२ को राजस्थान के राज्यपाल अंशुमानसिंह जी ने स्वर्णपदक से सम्मानित किया है।

जोधपुर– सुश्री हेमलता जैन सुपुत्री श्री सायरचन्दजी एवं विमला जी कोटड़िया को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय की बी.ए. ऑनर्स (संस्कृत) परीक्षा २००१ में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर दीक्षान्त समारोह में राजस्थान के राज्यपाल श्री अंशुमानसिंह जी ने २६ सितम्बर २००२ को स्वर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया।

दिल्ली– 'प्राकृत विद्या' के यशस्वी सम्पादक एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली के प्राकृतभाषा विभाग में उपाचार्य डॉ. सुदीप जैन को वर्ष २००२ का प्राकृत भाषा विषयक राष्ट्रपति-सम्मान (युवा) प्रदान किए जाने की घोषणा स्वतन्त्रता दिवस पर की गई है। इस पुरस्कार में एक लाख रूपयों की सम्मान राशि समारोहपूर्वक अर्पित की जाती है। डॉ. जैन की प्राकृत भाषा एवं साहित्य क्षेत्र में की गई सेवाओं के लिए उन्हें केन्द्र सरकार द्वारा चुना गया है।

जैन महासभा दिल्ली के चुनाव

दिल्ली–जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा, दिल्ली के चुनावों में आगामी दो वर्षों

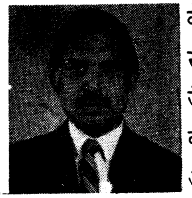

के लिए लब्ध प्रतिष्ठित नेता लाला सलेकचन्द जी जैन 'कागजी' को सर्वसम्मति से अध्यक्ष तथा जैन समाज के प्रखर वक्ता प्रो. रतन जैन एक बार पुनः सर्वसम्मति से महासचिव चुने गये हैं। जैन समाज के सभी वर्गों की यह संस्था २५ वर्षों से सक्रिय है तथा प्रो. रतन जैन आठवीं बार इसके महासचिव चुने गए हैं। वे जैन महासभा के पर्याय हैं। कर्मठता, समर्पण, चिन्तन, वक्तृत्व एवं स्पष्ट अभिव्यक्ति के साथ आप जैन समाज को योगदान कर रहे हैं।

श्रद्धांजलि

कानपुर–सुश्राविका श्री लाडकंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी श्री प्रेमचन्द जी लोढ़ा एवं पुत्रवधू

श्री भंवरलाल जी लोढ़ा का ४२ वर्ष की युवावय में ३ अक्टूबर २००२ को अहमदाबाद में आकस्मिक निधन हो गया। आप रत्नवंश की समर्पित, कर्त्तव्यनिष्ठ, धर्मपरायण एवं तपस्विनी श्राविका थी। कानपुर जैन समाज के श्राविका वर्ग में आपने ४२ दिवसीय तप का गौरवमय कीर्तिमान स्थापित किया था तथा प्रतिवर्ष पर्युषण पर अठाई तप करती थी। आपने ११, १५ अनेक तप किए थे। कानपुर में लोढ़ा परिवार संघ समर्पित धार्मिक सुसंस्कारी परिवार है। –*सूरजराज नाहटा*

अलवर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नानकचन्द जी पालावत का २३ मई २००२ को ६० वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। उनके प्रयत्नों से श्री ओसवाल जैन बालिका माध्यमिक विद्यालय की स्थापना हुई। जैन औषधालय के भी वे संस्थापक सदस्य थे। सभी के छोटे-मोट काम करना उन्हें प्रसन्नता देता था। उनका सेवा-क्षेत्र जैन समाज तक ही नहीं,

उससे भी विस्तृत था। आप सेवाभावी, मृदुभाषी, अल्पभाषी, विनम्र, सहनशील, क्षमाशील एवं गुप्तदानी थे। साधु-संतों की सेवा में भी तत्पर रहते थे। आप नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय करते थे। अपने निवास में ही आपने 'कुन्दन पुस्तकालय' बना रखा था, जिसका नियमित उपयोग करते थे। आप अनेक थोकड़ों के ज्ञाता थे, वीतराग वाणी पर आस्थालु थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

अकोला— श्रीमती तानाबाई जी श्री भेरूलाल जी खटोड़ का ८६ वर्ष की आयु में १५ सितम्बर २००२ को संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। वे नित्य सामायिक एवं प्रतिक्रमण करती थी तथा रात्रि-चौविहार के त्याग थे। अठाई एवं वर्षीतप का भी उन्होंने आराधन किया तथा सन्त-सतियों के दर्शन एवं सेवा में सदैव तत्पर रहती थी। — *चम्पालाल खटोड़*

जोधपुर— सुश्रावक श्री पारसराज जी मेहता (बागरेचा) का ६८ वर्ष की उम्र में दिनांक

८ सितम्बर २००२ को असामयिक निधन हो गया। स्वर्गीय मेहता साहब नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती शांति देवी मेहता तीनों पुत्र (सर्व श्री अरूण, सुनील एवं संजय) पुत्री श्रीमती इन्दू मोहनोत सहित पूरा परिवार धर्मनिष्ठ है तथा सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में हमेशा अग्रणी रहता है। समस्त परिवार परम श्रद्धेय १००८ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के प्रति श्रद्धालु होने के साथ रत्नवंश के प्रति संघ सेवा में समर्पित है। मेहता साहब उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सांसारिक भुआ के पुत्र थे।

बैंगलोर- सुश्राविका श्रीमती कनकीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री चंदनमल जी श्रीश्रीमाल

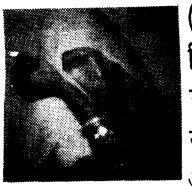

(ब्यावर निवासी) का २० अगस्त २००२ को ६५ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप पिछले ५० वर्षों से रात्रि में चौविहार का त्याग रखती थी तथा रोजाना ४ से ५ सामायिक करती थी। आप मृदुभाषी, सरल स्वभावी एवं सेवानिष्ठ श्राविका श्री, ६५ वर्ष की आयु में भी अपना दैनिक कार्य स्वयं करती थी। आपके पुत्र श्री मोहनलाल जी श्रीश्रीमाल, बैंगलोर के ७वाँ वर्षीतप लगातार चल रहा है साथ ही पुत्रवधू श्रीमती सज्जनबाई ने भी ३ वर्षीतप किये हैं। सारा परिवार धर्मनिष्ठ एवं रोजाना परिवार के सभी सदस्य सामायिक एवं रात्रि को सामूहिक प्रार्थना करते हैं, अष्टमी एवं चतुर्दशी को आयंबिल एवं उपवास तप की आराधना भी करते हैं। —*धर्मीचन्द कोठारी, अजमेर*

पल्लीपेट— धर्मनिष्ठ सुश्राविका, श्रीमती उमरावकुंवर जी खाबिया धर्मपत्नी स्व. श्री सोहनराज जी खाबिया (छोटी पादु निवासी) का ८४ वर्ष की आयु में पूर्ण जागरूकता एवं सजगता के साथ संलेखना संथारा सहित धर्मश्रवण करते हुए दिनांक २२ सितम्बर २००२ रविवार को प्रातः ६ बजे समाधिमरण हो गया। आप नित्य नवकारसी, सामायिक, माला

फेरना और रात्रि भोजन-त्याग का पालन करती थी। साधु-संतों के प्रति आपकी अगाध आस्था थी। आप अपने पीछे तीनों पुत्रों, सर्व श्री मंगलचन्द जी, महावीरचन्द जी, अशोककुमार जी खाबिया सहित ६ पुत्रियों और पौत्र-पौत्री, प्रपौत्र-प्रपौत्री, दौहित्र आदि से भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। आपके दुःखद आकस्मिक निधन पर श्रीसंघ सहित विभिन्न संस्थाओं ने हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है। —*विमल मूथा, पल्लीपेट*

चेन्नई- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ, मैलापुर (मद्रास) के अध्यक्ष और श्री

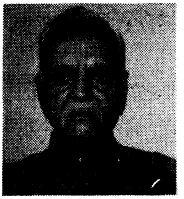

आदिनाथ भवन, मैलापुर के ट्रस्टी श्री मदनलाल जी बैद का गत ३१ अगस्त २००२, शनिवार को ११.३० बजे ६८ वर्ष की अवस्था में हृदयगति के रुक जाने के कारण स्वर्गवास हो गया। वे अत्यंत सरल, विनम्र, सेवाभावी, उत्तम धर्मवत्सल श्रावक थे। अपने पिता सेठ श्री सिंभूमल सा के पदचिह्नों पर चलते हुए उन्होंने जिनभक्ति, साधु-सेवा, स्वाध्याय, तप-त्याग और दान का अनुकरणीय आदर्श अपने जीवन में उपस्थित किया। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। २ सितम्बर २००२ को दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए आयोजित प्रार्थना सभा में नगर के गणमान्य महानुभावों ने अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये।

बालोतरा— सुश्रावक श्री छगनलाल जी बाघमार का ७ अक्टूबर २००२ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप रत्नवंशके सुज्ञ श्रावक रत्न थे। संघ-सेवा, सन्त-सेवा और स्वधर्मि-वात्सल्य-सेवा में उनकी सदैव उत्कृष्ट भावना रही। सरलता, मृदुता, उदारता जैसे विशिष्ट सद्गुणों के साथ उनमें गहरी सूझबूझ थी। बालोतरा श्रीसंघ में उनका अच्छा प्रभाव था। सामायिक, स्वाध्याय और व्रत-नियमों के प्रति उनकी तत्परता प्रेरणादायी थी। आचार्य भगवंत श्री हस्तीमल जी म.सा. के संवत् २०४६ के बालोतरा चातुर्मास में गुरुभक्त श्री बाघमार सा. का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। आपकी धर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यनिष्ठा एवं संघ-निष्ठा सदैव स्मरणीय रहेगी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

क्या आप जानते हैं?

भारत सरकार ने फूड एण्ड अडल्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत सभी पेक बंद खाद्य पदार्थों पर यह अंकित करना अनिवार्य कर दिया है कि वे शाकाहारी हैं अथवा मांसाहारी हैं अथवा मांसाहारी खाद्य पदार्थों के मिश्रण से बने हुए हैं।

सिर्फ शाकाहारी खाद्यपदार्थों के मिश्रण से बने हुए खाद्य पदार्थों पर ⊡ हरे रंग में चिह्न अंकित करना अनिवार्य कर दिया है।

सिर्फ मांसाहारी पदार्थ से बने हुए पेकेट पर ⊡ भूरे रंग में चिह्न इंगित करना अनिवार्य कर दिया है।

मांसाहारी व शाकाहारी दोनों खाद्य पदार्थों के मिश्रण से बनी खाद्य वस्तुओं के पेकेट पर लाल रंग में चिह्न इंगित करना अनिवार्य कर दिया है।

इस नियम का उल्लंघन करने वालों पर उचित कार्यवाही कानून के अन्तर्गत की जा सकती है। आप पेकबंद खाद्यपदार्थ जैसे बिस्कुट, चाकलेट आदि की खरीदी करते समय उपर्युक्त चिह्नों को देखकर खरीदें। यदि चिह्न अंकित न हो तो खरीदी हुई दुकान का बिल व खरीदी गई वस्तु का रेपर अथवा खरीद की गई दुकान का पता व तारीख हमें उपर्युक्त पते पर भेजें। हम आगे की कार्यवाही करेंगे। पता- *जयमल जैन जीवरक्षा पर्यावरण सुरक्षा फाउण्डेशन, नं. 11, पोन्नप्प लेन, ट्रिप्लीकेन, चेन्नई–600005(तमि.)*

कार्यालय, प्रवर अधीक्षक, डाकघर, जयपुर नगर मंडल, जयपुर–302006

प्रेस विज्ञप्ति, दिनांक ३.१०.२००२

भारत सरकार ने समाचार-पत्र/पत्रिकाओं के डाक पंजीयन के संबंध में राजपत्र, असाधारण, सं.४२१ भाग-११, खण्ड-३ उपखण्ड (१) प्रभावी दिनांक ११.०९.२००२ के द्वारा भारतीय डाक घर नियमावली, १९३३ में आगे और संशोधन करते हुए निम्न प्रावधान नियत किये हैं-

१. जिस वर्ष में प्रथम पंजीकरण किया गया था, उसके तीसरे कैलेण्डर वर्ष के ३१ दिसम्बर तक यह लागू रहेगा। पंजीकरण का प्रत्येक उत्तरवर्ती नवीकरण तीन कैलेण्डर वर्षों के लिए लागू रहेगा।

२. पंजीकरण के नवीकरण के लिए आवेदन इस प्रकार किया जाए कि यह पिछले पंजीकरण की समाप्ति की तारीख से कम से कम तीन महीने पहले संबंधित अधिकारी को मिल जाए और इसके साथ समाचार-पत्र के प्रकाशन के नवीनतम अंक की दो प्रतियां संलग्न होनी चाहिए।

३. पिछले पंजीकरण की अवधि के अंतिम महीने के पूर्ववर्ती तीसरे कैलेण्डर माह के अंतिम कार्य दिवस के बाद प्राप्त नवीकरण के प्रत्येक आवेदन के लिए पचास रूपये एवं जिनमें नवीकरण हेतु आवेदन पिछले पंजीकरण की समाप्ति की तारीख के बाद प्राप्त होता है तो एक सौ रुपये का विलम्ब शुल्क प्रभारित किया जायेगा।

४. नवीकरण तभी प्रदान किया जाएगा जब प्रिन्सिपल चीफ पोस्टमास्टर जनरल या अन्य सक्षम अधिकारी इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि अधिनियम की धारा ९ की उपधारा-२ के उपबंधों की पूर्ति होती है और जहां पंजीकरण नवीकृत करने से पहले पिछला पंजीकरण समाप्त हो जाता है वहां नवीकरण जारी करने तक प्रकाशन के लिए बुक पैकेट दरों पर भुगतान पेशगी में अदा करना होगा।

५. अतः सभी समाचार-पत्र/पत्रिकाओं के प्रकाशक/सम्पादकों को सूचित किया जाता है कि अपने प्रकाशन के डाक पंजीयन/नवीनीकरण हेतु इस बार दिनांक २१ अक्टूबर, २००२ तक निर्धारित प्रारूप में आवेदन-पत्र इस कार्यालय को प्रस्तुत करें ताकि प्रकरण अनुमोदनार्थ परिमंडल कार्यालय को भेजे जा सकें।

अम्बेश उपमन्यु, आई.पी.एस.

प्रवर अधीक्षक डाक घर, जयपुर नगर मंडल, जयपुर–302006

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8922 श्री जितेश कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
8923 श्री ऐवन्त कुमार जी जैन, हरसौर, जिला-नागौर (राज.)
8924 श्री भागचन्द जी झामड़, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर (राज.)
8925 Shri Jayesh Ji Naveen Ji Bothra, Delhi
8926 श्री धनराजजी बागमार, नारणपुरा, अहमदाबाद (गुज.)
8927 Dr. (Mrs.) Nirmala Ji Pipara, Kolkata (W.B.)
8928 श्री अनिल कुमार जी बालचन्द जी छाजेड़, मुकटी, धुलिया(महा.)
8929 Shri Basaniraj Ji Sethiya, Perambur, Chennai (T.N.)
8930 श्री महावीरचन्द जी ज्ञानचन्द जी मुथा, ठाणा (पश्चिम) (महा.)
8931 श्री सुभाषचन्द जी गोकुलचन्द जी कटारिया, कुरवाई, विदिशा (म.प्र.)
8932 श्री राजकुमार जी कटारिया, कोलाबा, मुम्बई (महा.)
8933 श्री विनोद जी गोकुलचन्द जी कटारिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8934 Shri Yogesh Ji Premchand Ji Bhansali, Bhatarawati(Karnataka)
8935 श्री भूषण कुमार जी नेमचन्द जी राखेचा, सहदा, नन्दूरबार (महा.)
8936 श्री रमेशचन्द जी हजारीलाल जी जैन (मीणा), जैनपुरी(अलीनगर), टोंक (राज.)
8937 Shri Narendra Singh Ji Lodha, Jaipur (Raj.)
8938 Shri Nandkishore Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
8939 Shri R. Vijayraj Ji Jain, Kolar (Karnataka)
8940 Smt. Sharmila bai Ji Dhoka, Mysore (Karnataka)
8941 Shri S. Dharamchand Ji Jain, KGF (Karnataka)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

5100/- कमला फाउण्डेशन्स; मुम्बई, द्वारा श्री सरदारसिंह जी कर्णावट, अपनी पौत्रवधू श्रीमती शिल्पा जी धर्मपत्नी श्री राहुल जी कर्णावट (पुत्रवधू श्रीमान राजेन्द्र जी श्रीमती पुष्पा जी कर्णावट) की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

2501/- श्री विजय जी नाहर, भोपाल, श्रीमती सरला जी नाहर (धर्मपत्नी स्व. श्री मानिकलाल जी नाहर, बरेली वाले) का संथारा पूर्वक 18.9.2002 को देहावसान होने पर उनकी पुण्यस्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1100/- श्री भंवरलाल जी , धनराज जी, अजीत जी, हनुमान जी लुणावत (बिरचोल वाले), जोधपुर, अपने पिता स्वर्गीय श्री बंशीलाल जी लुणावत की पावन स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

505/- श्री मोहनलाल जी राजकुमार जी श्रीश्रीमाल (अजमेर वाले) बैंगलोर, माताश्री श्रीमती कणकबाई जी श्रीश्रीमाल का दिनांक 20.8.2002 को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

501/- श्री लाभचन्द जी प्रकाशचन्द जी वैद, वर्धा, अपने पूज्य पिताश्री मूलचन्द जी वैद की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

500/- श्री पुखराज जी नवरतनमल जी बाफना, चेन्नई, साध्वीप्रमुखा महासती श्री लाडकंवरजी म.सा.,सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका

महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर में दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री मांगीलाल जी कोठारी, चेन्नई, जोधपुर में साध्वीप्रमुखा महासती श्री लाडकंवरजी म.सा.,सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के जोधपुर में दर्शन करने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री जैन स्थानकवासी महिला मण्डल, जयपुर की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्रीमती रतनकंवर जी सिंघी, जोधपुर, अपने सुपुत्र की प्रथम पुण्यस्मृति पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्रीमान मदनलाल जी जैन वैद (मैलापुर वाले), चेन्नई की पुण्यस्मृति में उनके परिवार जनों की ओर से जिनवाणी को भेंट।

251/– श्री सुरेशचन्द जी बम्ब (जयपुर वाले), मुम्बई, श्रीमती रेखा जी बम्ब की 15 उपवास की तपस्या की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/– श्री गणेशमल जी विनायकिया, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती गुमानकंवर जी मेहता की तृतीय पुण्यतिथि कार्तिक की आठम को होने पर जिनवाणी को भेंट।

201/– श्रीमती कृष्णा जी श्री जेड.एस. भण्डारी, जोधपुर, अपने सुपौत्र श्री शरद जी भण्डारी (सुपुत्र श्रीमती कल्पना जी डॉ. एस.एस. भण्डारी जी), एम.आर.ई.सी. जयपुर से गोल्ड मेडल प्राप्त कर विप्रो टेक्नोलोजी में सिस्टम इंजीनियर के पद पर नियुक्ति प्राप्त करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

201/– श्री प्रतापचन्द जी, जयकुमार जी, विजयकुमार जी, महेन्द्रकुमार जी, अलवर, अपने पूज्य पिताजी श्रीमान् नानकचन्द जी पालावत का स्वर्गवास दिनांक 22 मई 2002 को होने पर उनकी पुण्यस्मृति में जिनवाणी को भेंट।

201/– श्री दानमल जी जैन, जयपुर, धर्मपत्नी श्रीमती इन्दिरा जी जैन की अठाई की तपस्या तथा सुपुत्र डॉ. दीपक जी जैन द्वारा प्री.पी.जी. मेडिकल परीक्षा उत्तीर्ण कर एम.डी. मेडिसिन हेतु उदयपुर में प्रवेश लेने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

200/– श्री अशोक कुमार जी जैन, दिल्ली की ओर से जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री स्वरूपचन्द जी जैन, डहरा (हिण्डौनसिटी), अपने सुपुत्र श्री जिनेश कुमार जी जैन(जयपुर) की 11 दिवसीय तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा, जयपुर, अपने प्रपौत्र एवं श्री लालचन्दजी के पौत्र तथा श्री विनय जी लोढ़ा के पुत्र जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल, जलगांव, चि.नितीन कुमार के द्वारा जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग–2 की परीक्षा 2002 में युवावर्ग ग्रुप में 94 अंक प्राप्त कर तृतीय स्थान प्राप्त करने एवं अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा 10 की परीक्षा में 82.5 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल, जलगांव, धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला जी हुण्डीवाल एवं सुपुत्र श्री ललित जी हुण्डीवाल के अठाई तप तथा सुपुत्र श्री नरेश जी हुण्डीवाल के पांच की तपस्या उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में सुख–साता पूर्वक सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल, जलगांव, सुपुत्री सीमा जी हुण्डीवाल के कलादीपेठ चेन्नई तथा सुपुत्र श्री नितीन जी हुण्डीवाल के फतेहपुर (महाराष्ट्र) में पर्युषण सेवा पर जाने के उपलक्ष्य में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, जोधपुर, बहन श्रीमती विमलादेवी जी भण्डारी की 12वीं पुण्यस्मृति पर सप्रेम भेंट।।

101/– श्री एम. के. जैन, जयपुर, अपने स्वर्गीय पिताश्री टी.एन.जैन के 79 वें जन्मदिवस पर जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– गुप्तदान, जयपुर से जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री सुन्दरलाल जी जैन जरखोदा, संथारे से देह त्याग पर उनके परिवार द्वारा जिनवाणी को भेंट।

101/– श्री जरखोदा श्रीसंघ की ओर से महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के प्रथम और महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. के द्वितीय बार जरखोदा में पधारने की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्रीमती कान्ता जी मेहता, जोधपुर, अपने पति श्री प्रकाशचन्द जी मेहता की 16वीं पुण्यतिथि दिनांक 24 अक्टूबर 2002 को होने की स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

101/– श्रीमान शंभुसिंह जी कांठेड़, नीमच, जरखोदा में महासती श्री निःशल्यावती जी म.सा., महासती श्रुतिप्रभा जी म.सा., महासती मतिप्रभा जी म.सा. के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

51/– श्री बृजमोहनलाल जी, सतीशचन्द जी जैन, हिण्डौनसिटी, साधु-सन्तों के दर्शनों की खुशी में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

जीवदया हेतु साभार-प्राप्त

251/– श्री प्रकाशचन्द जी रंगलाल जी झाबड़, जाम्बाद जिला बुलडाणा, सौ. मधुबाला प्रकाशचन्द जी झाबड़ के मासखमण (31 उपवास) का पारणा 7 सितम्बर 2002 को सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

81000/–श्री जी. गणपतराज जी बाघमार (कोसाणा वाले), चेन्नई, "हीरा प्रवचन– पीयूष भाग–2" मण्डल द्वारा प्रकाशित कराये जाने हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

2000/– श्रीमान मोहनलाल जी पारसमल जी बोहरा, तिरूवन्नामलै।

1101/– श्रीमान सम्पतराज जी रिखबचन्द जी मेहता, बैंगलोर।

1000/– श्रीमती कमलाबाई अजीतराज जी सिंघवी, पनरूटी।

1000/– श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर, पर्युषण पर्वाराधना हेतु विजयवाड़ा सेवा देने की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/– श्रीमान हंसराज जी जैन, जोधपुर

50/– श्रीमान हुक्मीचन्द जी कुम्भट, खादगांव।

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD
RAVINDRA KAVAD
NAVARATHAN KAVAD
ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.
Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

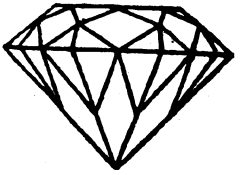

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

☆ Bangalore ☆ Coimbatore ☆ Ernakulam ☆
☆ Kollidam ☆ New Delhi ☆

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

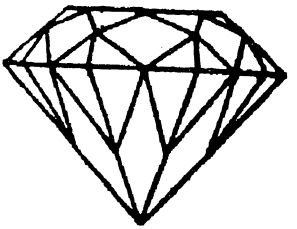

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

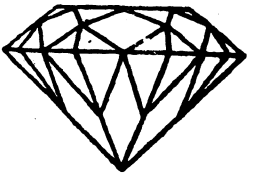

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

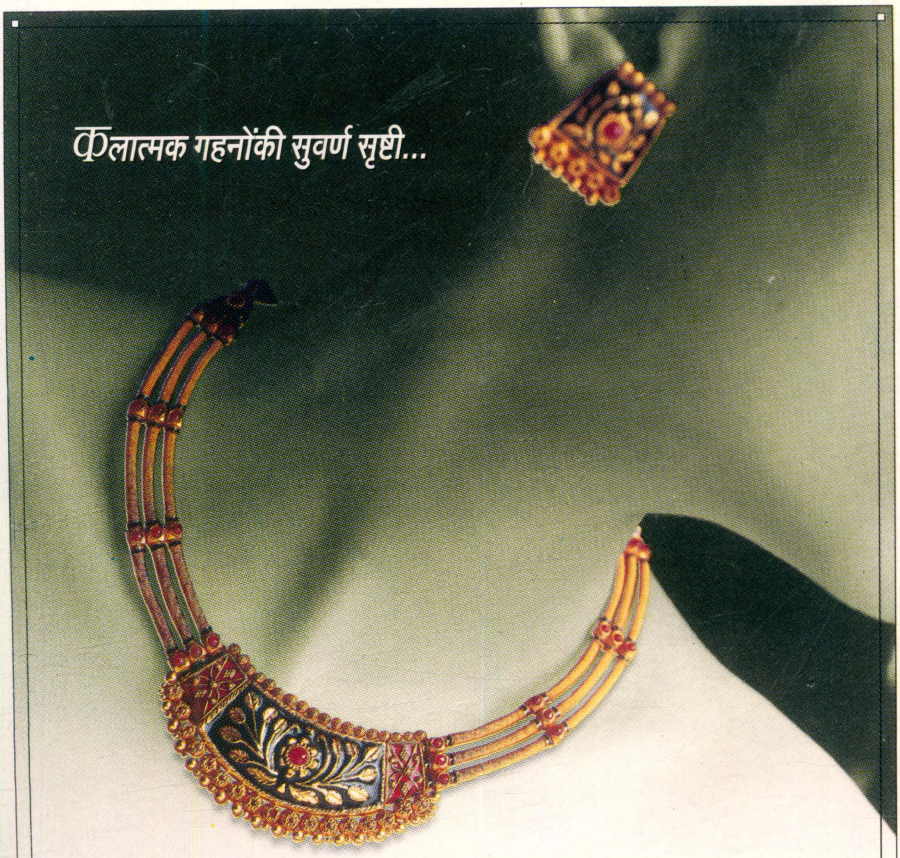

आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !

सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स

१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३

All major credit cards accepted...

GRACE

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

Home next to everything you need. And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or
visit us at www.kalpataru.com

TRITON/2002/KCL/085

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डां. धर्मचन्द जैन।